India

Model: KundliDetailed,Yoga,PredictionPack20Year

SrNo: 110-124-101-1177 / 31 Date: 25/01/2025

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**14-15/08/1947**
दिन	गुरु–शुक्रवार
जन्म समय	**00:00:00 घंटे**
इष्ट	45:27:00 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	23:38:52 घंटे
वेलान्तर	-00:04:45 घंटे
साम्पातिक काल	21:08:13 घंटे
सूर्योदय	05:49:12 घंटे
सूर्यास्त	19:02:13 घंटे
दिनमान	13:13:01 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	27:59:21 कर्क
लग्न के अंश	07:45:37 वृष

चैत्रादि संवत / शक	2004 / 1869
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	13
तिथि समाप्ति काल	24:00:34
जन्म तिथि	13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल	22:57:55 घंटे
जन्म नक्षत्र	पुष्य
सूर्योदय कालीन योग	वज्र
योग समाप्ति काल	06:01:30 घंटे
जन्म योग	सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण	गर
करण समाप्ति काल	13:47:32 घंटे
जन्म करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृष – शुक्र
राशि–स्वामी	**कर्क – चन्द्र**
नक्षत्र–चरण	**पुष्य – 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	सिद्धि
करण	वणिज
गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हू–हुकमसिंह
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

घात चक्र

मास	पौष
तिथि	2-7-12
दिन	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	1
वर्ग	श्वान
लग्न	तुला
सूर्य	सिंह
चन्द्र	सिंह
मंगल	कन्या
बुध	मिथुन
गुरु	तुला
शुक्र	वृश्चिक
शनि	कर्क
राहु	धनु

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	07:45:37	395:04:16	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	———
सूर्य			कर्क	27:59:21	00:57:39	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	03:59:01	15:05:12	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	स्वराशि
मंगल			मिथु	07:27:23	00:39:28	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	शत्रु राशि
बुध			कर्क	13:40:28	01:48:17	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
गुरु			तुला	25:52:40	00:05:07	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	शत्रु राशि
शुक्र		अ	कर्क	22:33:40	01:14:06	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	शत्रु राशि
शनि		अ	कर्क	20:28:23	00:07:40	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		वृष	05:44:33	00:08:46	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	05:44:33	00:08:46	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
हर्ष			मिथु	02:03:12	00:02:20	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	केतु	———
नेप			कन्या	15:42:26	00:01:38	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	———
प्लूटो			कर्क	20:06:29	00:01:47	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	———
दशम भाव			मक	21:27:35	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:07:18

लग्न–चलित

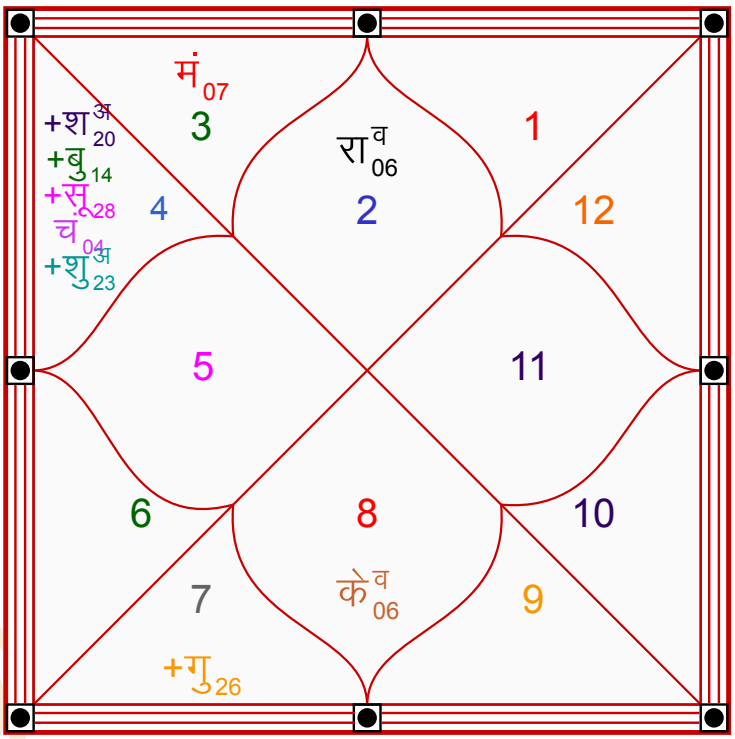

चन्द्र कुंडली

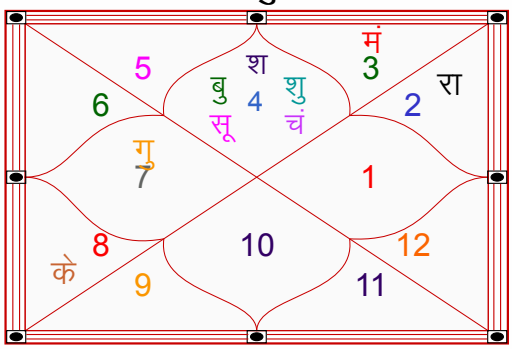

नवमांश कुंडली

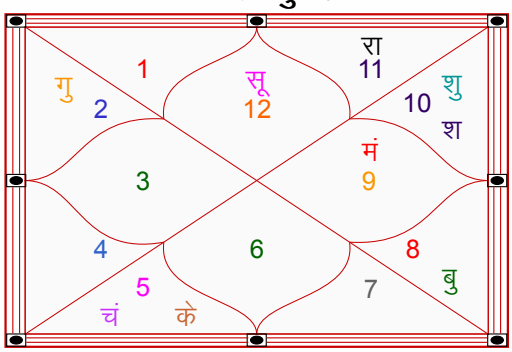

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	20:02:36	वृष	07:45:37
2	वृष	20:02:36	मिथुन	02:19:36
3	मिथुन	14:36:36	मिथुन	26:53:36
4	कर्क	09:10:36	कर्क	21:27:35
5	सिंह	09:10:36	सिंह	26:53:36
6	कन्या	14:36:36	तुला	02:19:36
7	तुला	20:02:36	वृश्चिक	07:45:37
8	वृश्चिक	20:02:36	धनु	02:19:36
9	धनु	14:36:36	धनु	26:53:36
10	मकर	09:10:36	मकर	21:27:35
11	कुम्भ	09:10:36	कुम्भ	26:53:36
12	मीन	14:36:36	मेष	02:19:36

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	07:45:37
2	मिथुन	03:21:41
3	मिथुन	26:33:37
4	कर्क	21:27:35
5	सिंह	21:37:11
6	कन्या	28:42:15
7	वृश्चिक	07:45:37
8	धनु	03:21:41
9	धनु	26:33:37
10	मकर	21:27:35
11	कुम्भ	21:37:11
12	मीन	28:42:15

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

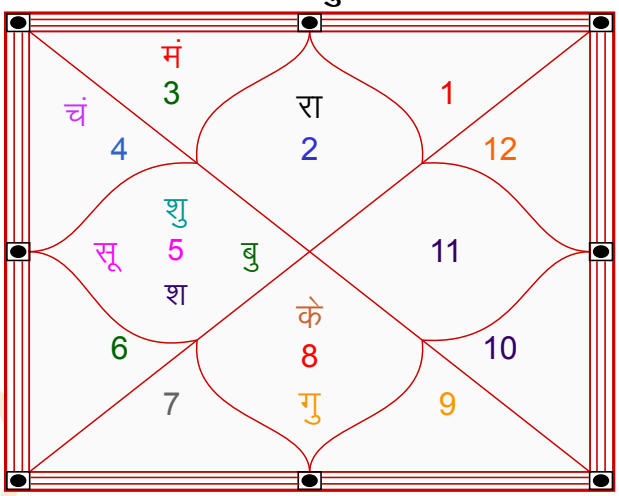

भाव कुंडली

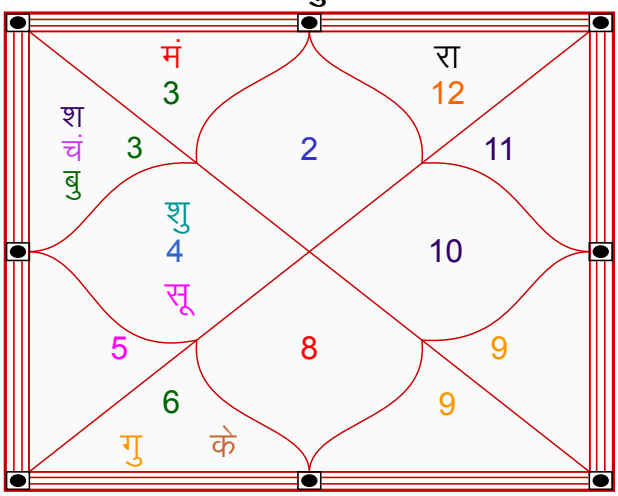

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल	मुदित	प्रकाश	4.00	49 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	स्वस्थ	नेत्रपाणि	8.93	52 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	कुमार	खल	शयन	1.40	55 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	खल	कौतुक	1.32	62 %
गुरु	अमात्य	धन	मृत	खल	कौतुक	2.69	41 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	कुमार	विकल	शयन	1.15	71 %
शनि	मातृ	आयु	कुमार	विकल	प्रकाश	1.01	13 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	मुदित	सभा	0.00	11 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	मुदित	शयन	0.00	11 %
कुल						**20.49**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

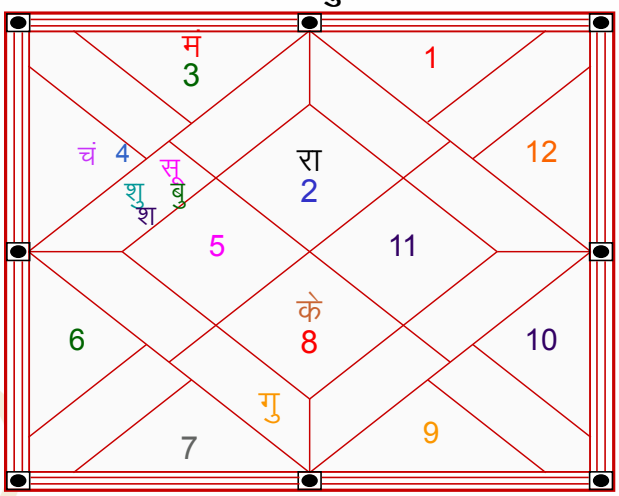

लग्न–चलित

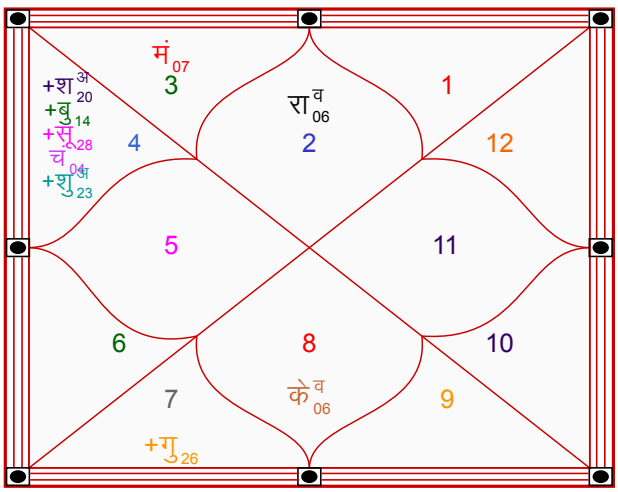

सुदर्शन चक्र

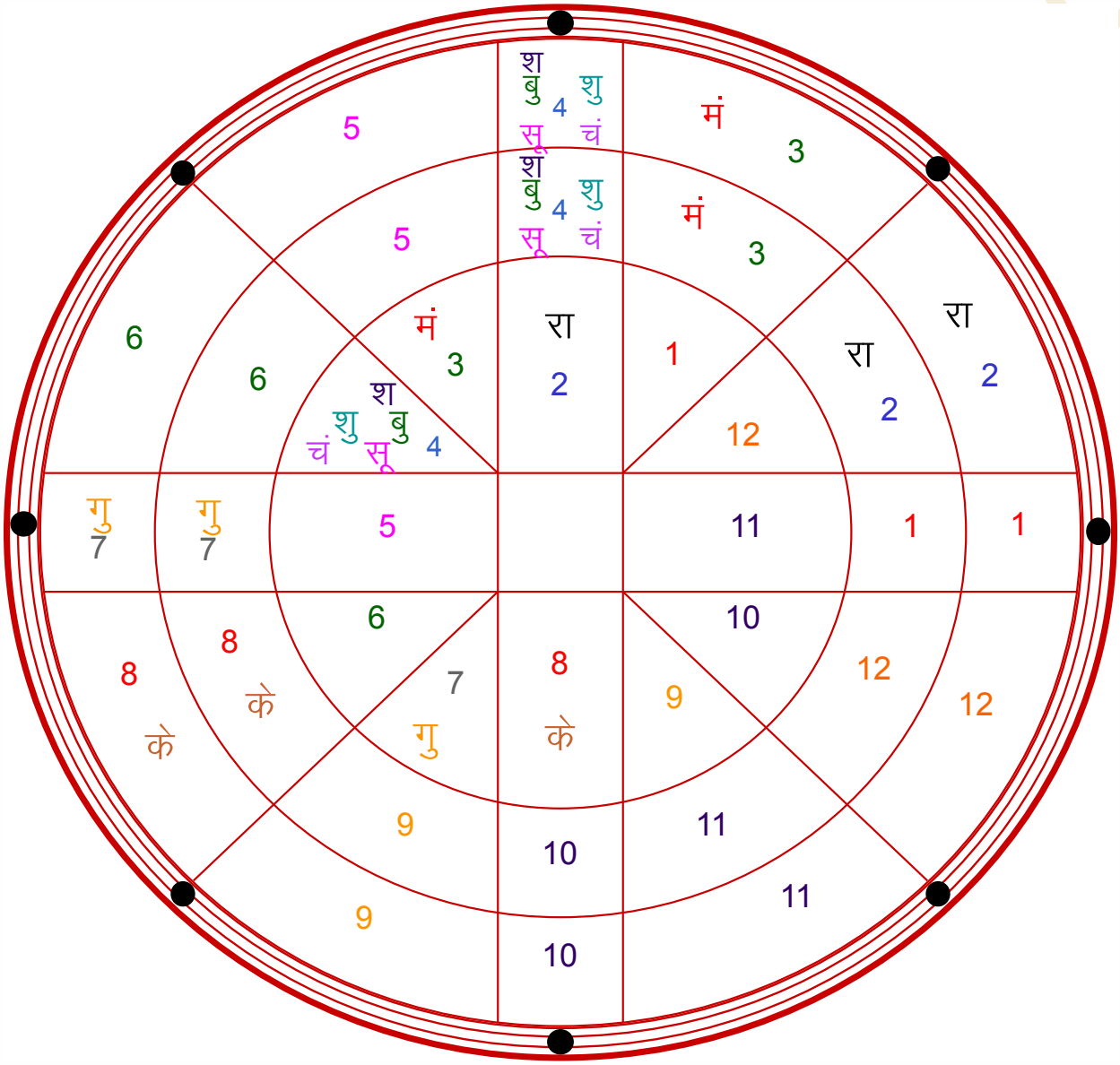

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 17 वर्ष 11 मास 7 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	28:05:08	चंद्र	बुध	शनि	शनि
चंद्र		कर्क	04:04:48	चंद्र	शनि	शनि	केतु
मंगल		मिथु	07:33:10	बुध	राहु	राहु	बुध
बुध		कर्क	13:46:15	चंद्र	शनि	राहु	शनि
गुरु		तुला	25:58:27	शुक्र	गुरु	केतु	सूर्य
शुक्र		कर्क	22:39:28	चंद्र	बुध	चंद्र	गुरु
शनि		कर्क	20:34:10	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
राहु	व	वृष	05:50:21	शुक्र	सूर्य	बुध	सूर्य
केतु	व	वृश्चि	05:50:21	मंगल	शनि	बुध	शुक्र
हर्ष		मिथु	02:09:00	बुध	मंगल	केतु	चंद्र
नेप		कन्या	15:48:14	बुध	चंद्र	शनि	शनि
प्लूटो		कर्क	20:12:17	चंद्र	बुध	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	07:51:24	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शुक्र
2	मिथु	03:27:28	बुध	मंगल	शुक्र	मंगल
3	मिथु	26:39:24	बुध	गुरु	शुक्र	शुक्र
4	कर्क	21:33:23	चंद्र	बुध	सूर्य	सूर्य
5	सिंह	21:42:59	सूर्य	शुक्र	गुरु	राहु
6	कन्या	28:48:02	बुध	मंगल	शनि	शुक्र
7	वृश्चि	07:51:24	मंगल	शनि	केतु	गुरु
8	धनु	03:27:28	गुरु	केतु	सूर्य	बुध
9	धनु	26:39:24	गुरु	शुक्र	केतु	बुध
10	मक	21:33:23	शनि	चंद्र	शुक्र	राहु
11	कुंभ	21:42:59	शनि	गुरु	गुरु	राहु
12	मीन	28:48:02	गुरु	बुध	शनि	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:01:31

फॉरच्युना : मेष 13:51:04

लग्न कुंडली

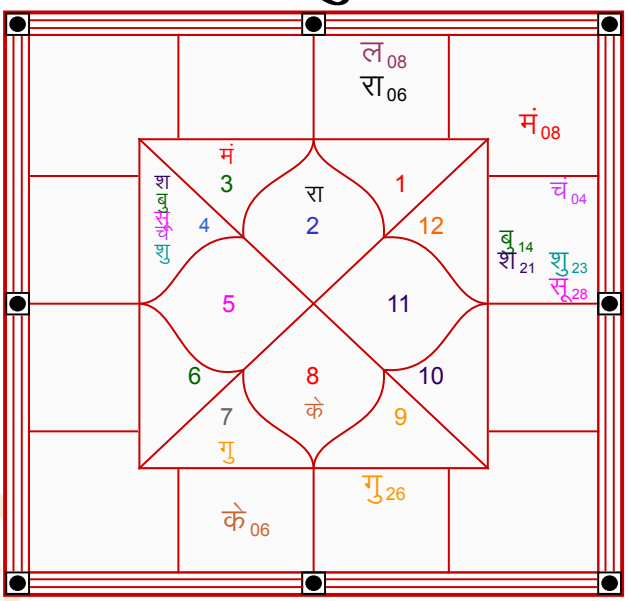

भाव कुंडली

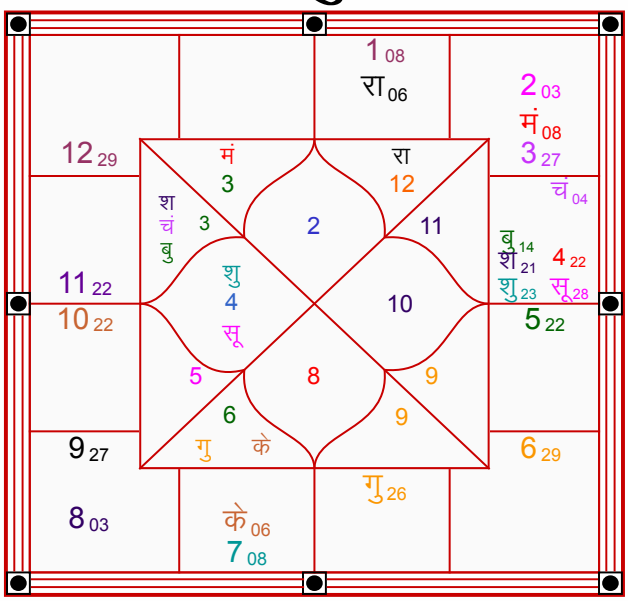

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र–
2	सूर्य– मंगल, बुध– शुक्र– शनि–
3	सूर्य+ चंद्र+ बुध+ शुक्र+ शनि+ केतु,
4	सूर्य, चंद्र– शुक्र, राहु,
5	सूर्य– राहु–
6	सूर्य– बुध– गुरु+ शुक्र– शनि– केतु,
7	मंगल–
8	गुरु,
9	गुरु,
10	चंद्र– बुध– शनि– केतु–
11	चंद्र– बुध– शनि– केतु–
12	मंगल, गुरु, राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 3+ 4, 5- 6-
चंद्र	3+ 4- 10- 11-
मंगल	2, 7- 12,
बुध	2- 3+ 6- 10- 11-
गुरु	6+ 8, 9, 12,
शुक्र	1- 2- 3+ 4, 6-
शनि	2- 3+ 6- 10- 11-
राहु	4, 5- 12,
केतु	3, 6, 10- 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	शु
2	--	मं	सू शु श	बु
3	सू चं बु शु श के	चं बु श	सू शु श	बु
4	रा	सू शु	--	चं
5	--	--	रा	सू
6	गु	गु के	सू शु श	बु
7	--	--	--	मं
8	--	--	गु	गु
9	--	--	गु	गु
10	--	--	चं बु के	श
11	--	--	चं बु के	श
12	मं	रा	गु	गु

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1	कर्क	4
चंद्र	4	10	कर्क	3
मंगल	7	2,6	मिथुन	2
बुध	2,3,6	4,12	कर्क	3
गुरु	8,9,12	3,11	तुला	6
शुक्र	1	5,9	कर्क	4
शनि	10,11	7	कर्क	3
राहु	---	---	वृष	12
केतु	---	8	वृश्चिक	6

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,3,6	4,12	3	10,11	7	3
चंद्र	10,11	7	3	10,11	7	3
मंगल	---	---	12	---	---	12
बुध	10,11	7	3	---	---	12
गुरु	8,9,12	3,11	6	---	8	6
शुक्र	2,3,6	4,12	3	4	10	3
शनि	2,3,6	4,12	3	1	5,9	4
राहु	5	1	4	2,3,6	4,12	3
केतु	10,11	7	3	2,3,6	4,12	3

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	117.99	**93.98**	**67.46**	**103.67**	**205.88**	**112.56**	**110.47**	**35.74**	**215.74**	**62.05**	**165.71**	**110.11**
सूर्य	––	––	––	युति	चतु	युति	युति	––	––	––	––	युति
117.99	0.00	0.00	0.00	0.72	2.55	8.43	7.06	0.00	0.00	0.00	0.00	6.78
चंद्र	––	––	––	युति	––	––	––	––	पंच	––	पंचा	––
93.98	0.00	0.00	0.00	5.28	0.00	0.00	0.00	0.00	2.69	0.00	0.91	0.00
मंगल	––	––	––	––	––	अष्ट	––	––	––	युति	4था	––
67.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.99	0.00	0.00	0.00	8.44	6.49	0.00
बुध	युति	युति	––	––	––	युति	युति	––	––	––	तृती	युति
103.67	0.72	5.28	0.00	0.00	0.00	5.97	7.57	0.00	0.00	0.00	2.59	7.81
गुरु	––	9वां	––	––	––	––	––	सप्त	युति	––	––	––
205.88	0.00	6.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.12	5.12	0.00	0.00	0.00
शुक्र	युति	––	––	युति	चतु	––	युति	––	––	––	––	युति
112.56	8.43	0.00	0.00	5.97	1.94	0.00	9.76	0.00	0.00	0.00	0.00	9.67
शनि	युति	––	––	युति	चतु	युति	––	––	––	––	3रा	युति
110.47	7.06	0.00	0.00	7.57	0.47	9.76	0.00	0.00	0.00	0.00	8.78	9.99
राहु	––	तृती	––	––	सप्त	––	––	––	सप्त	––	––	––
35.74	0.00	2.69	0.00	0.00	5.12	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	––	––	––	––	युति	––	––	सप्त	––	––	––	––
215.74	0.00	0.00	0.00	0.00	5.12	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	तृती	––	युति	––	––	––	––	––	––	––	––	––
62.05	1.46	0.00	8.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	––	––	––	––	नवां	––	––	––	––	––	––	––
165.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	––	––	युति	चतु	युति	युति	––	––	––	तृती	––
110.11	6.78	0.00	0.00	7.81	0.18	9.67	9.99	0.00	0.00	0.00	1.22	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	37.76	62.33	86.89	111.46	146.89	182.33	217.76	242.33	266.89	291.46	326.89	2.33
सूर्य	––	––	––	युति	––	तृती	––	पंच	––	सप्त	––	––
117.99	0.00	0.00	0.00	7.75	0.00	1.26	0.00	1.26	0.00	7.75	0.00	0.00
चंद्र	––	––	युति	––	––	चतु	पंच	––	सप्त	––	––	––
93.98	0.00	0.00	7.37	0.00	0.00	2.72	1.65	0.00	7.37	0.00	0.00	0.00
मंगल	––	युति	––	अष्ट	4था	पंच	षष्ठ	सप्त	8वां	8वां	––	––
67.46	0.00	8.59	0.00	0.01	4.48	0.68	0.89	8.59	4.48	1.04	0.00	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	पंच	––	––	सप्त	––	––
103.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.07	0.00	0.00	6.86	0.00	0.00
गुरु	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति	––	तृती	चतु	5वां	––
205.88	3.21	0.00	9.94	0.00	0.00	0.00	3.21	0.00	2.89	1.21	9.94	0.00
शुक्र	––	––	––	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––
112.56	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00
शनि	––	––	––	युति	––	3रा	––	––	––	सप्त	––	––
110.47	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	3.24	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
राहु	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––
35.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––	––
215.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	––	युति	––	––	चतु	पंच	––	सप्त	––	––	––	––
62.05	0.00	10.00	0.00	0.00	0.65	2.99	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	––	––	––	––	––	––	––	––	––	पंच	––	––
165.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.19	0.00	0.00
प्लूटो	––	––	––	युति	––	पंचा	––	––	––	सप्त	––	––
110.11	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.94	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	37.76	63.36	86.56	111.46	141.62	178.70	217.76	243.36	266.56	291.46	321.62	358.70
सूर्य	––	––	––	युति	––	तृती	––	पंच	––	सप्त	––	––
117.99	0.00	0.00	0.00	7.75	0.00	2.95	0.00	0.49	0.00	7.75	0.00	0.00
चंद्र	––	––	युति	––	––	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	––	––	––
93.98	0.00	0.00	7.13	0.00	0.00	0.56	1.65	0.56	7.13	0.00	0.00	0.00
मंगल	––	युति	––	अष्ट	––	––	षष्ठ	सप्त	8वां	8वां	––	––
67.46	0.00	9.09	0.00	0.01	0.00	0.00	0.89	9.09	4.17	1.04	0.00	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	पंच	––	––	सप्त	––	––
103.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.07	0.00	0.00	6.86	0.00	0.00
गुरु	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति	––	तृती	चतु	5वां	––
205.88	3.21	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	3.21	0.00	2.95	1.21	9.02	0.00
शुक्र	––	––	––	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––
112.56	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00
शनि	––	––	––	युति	––	3रा	––	––	––	सप्त	––	––
110.47	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	6.51	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
राहु	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––
35.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––	––
215.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	––	युति	––	––	––	पंच	––	सप्त	––	––	––	––
62.05	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	1.92	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	पंच	––	सप्त
165.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.08	0.00	0.00	0.00	0.19	0.00	2.08
प्लूटो	––	––	––	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––
110.11	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

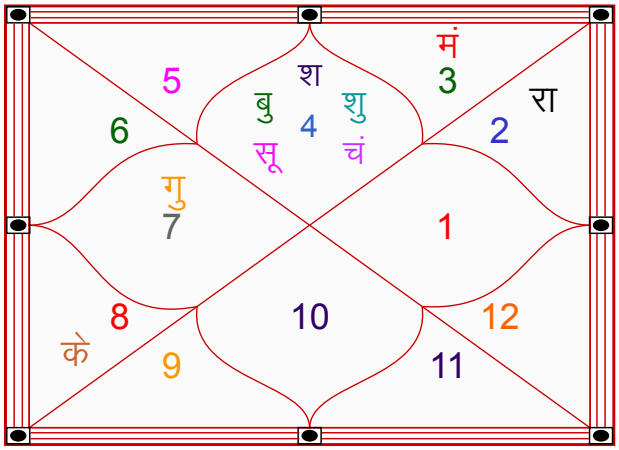

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

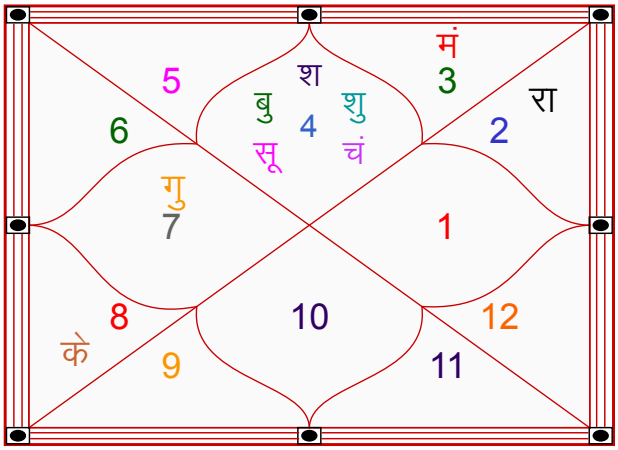

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

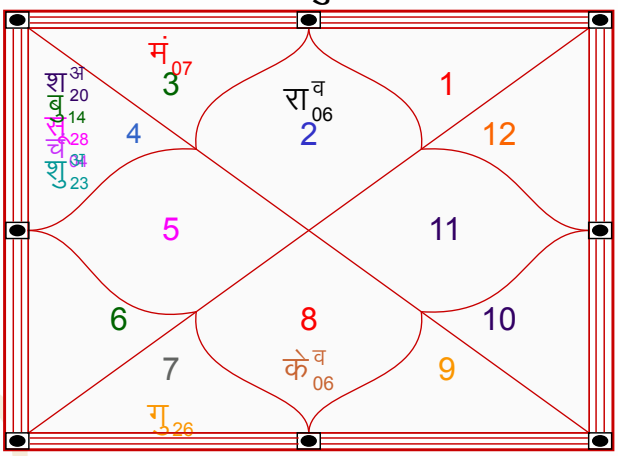

देह विचारः

होरा कुंडली

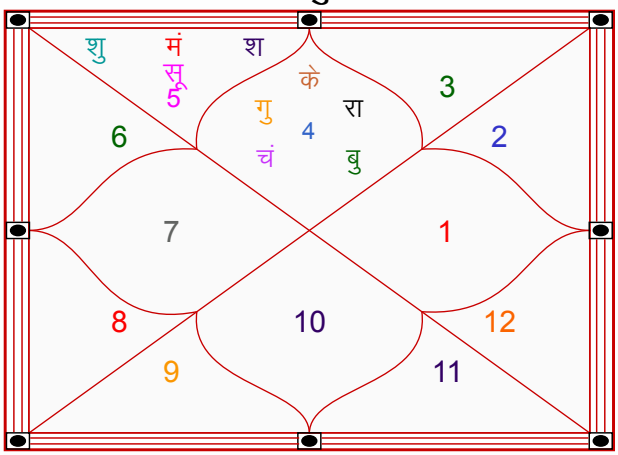

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

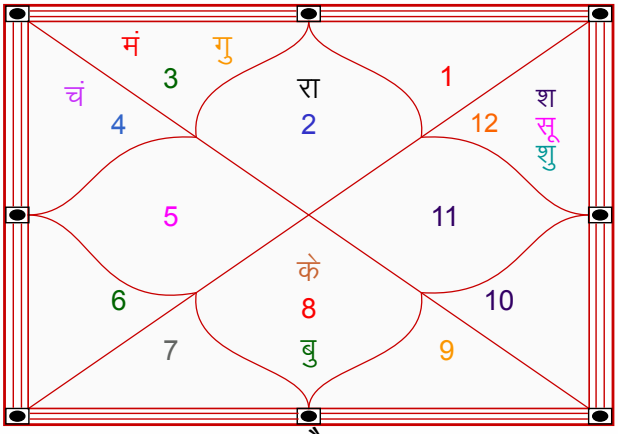

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

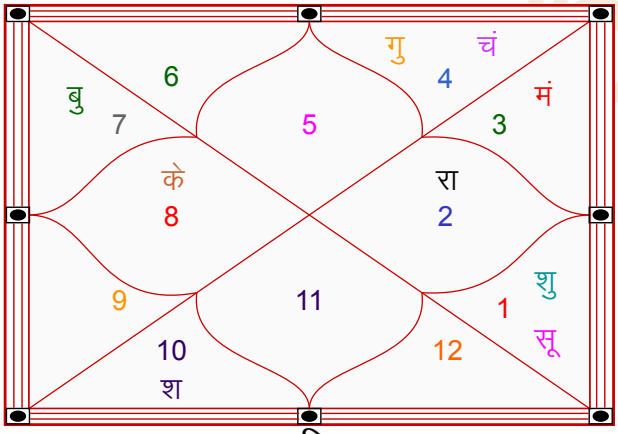

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

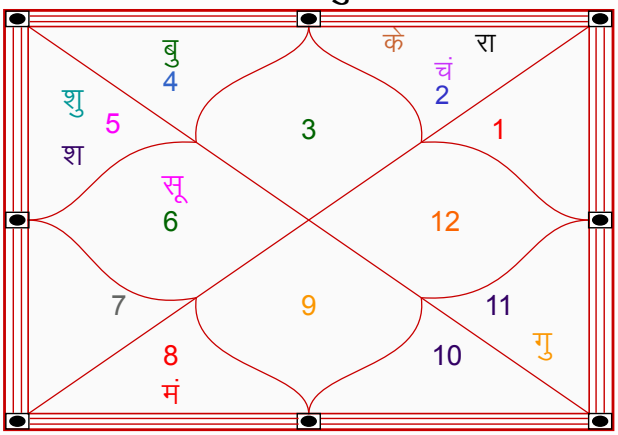

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

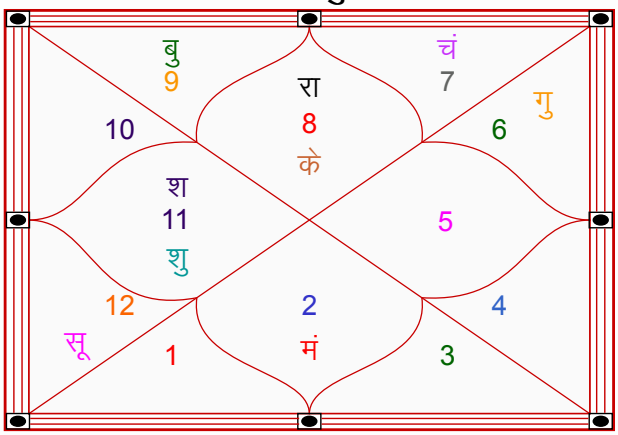

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

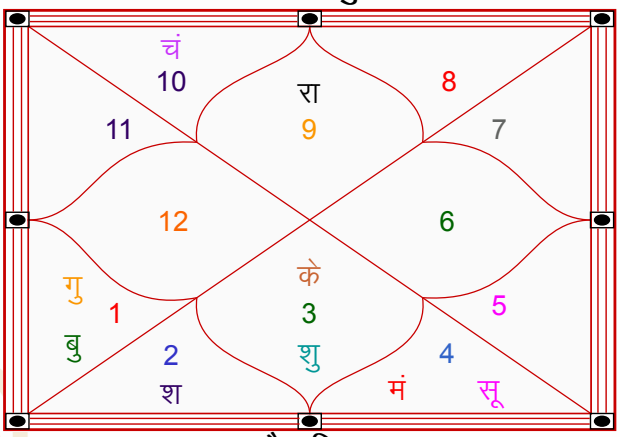

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

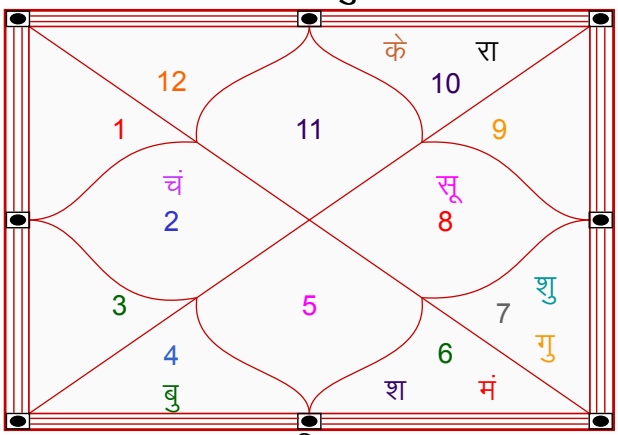

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

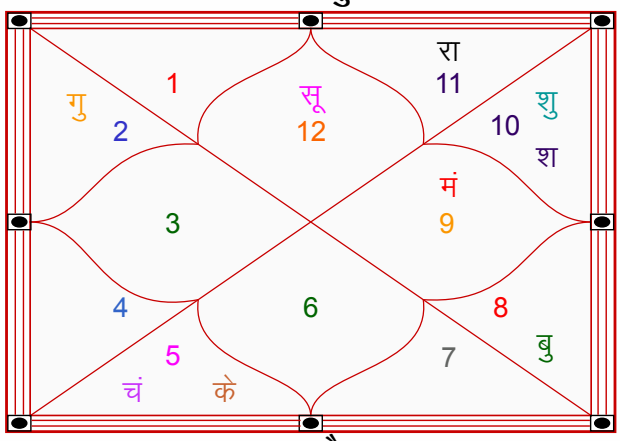

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

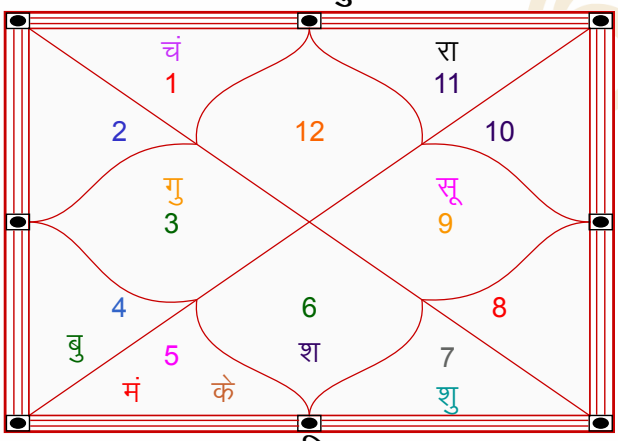

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

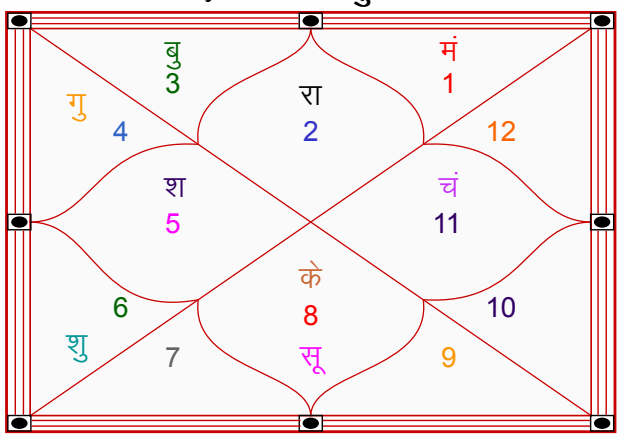

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

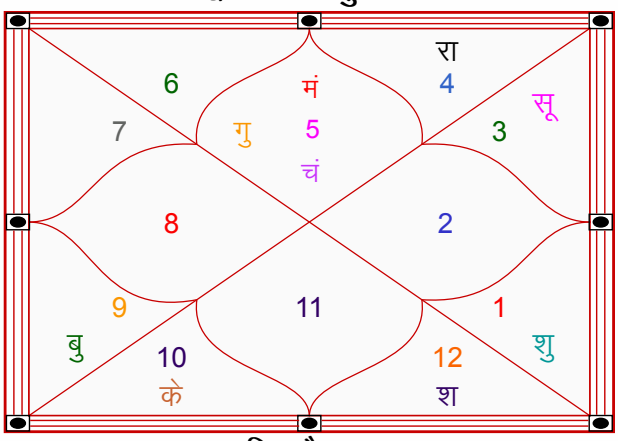

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

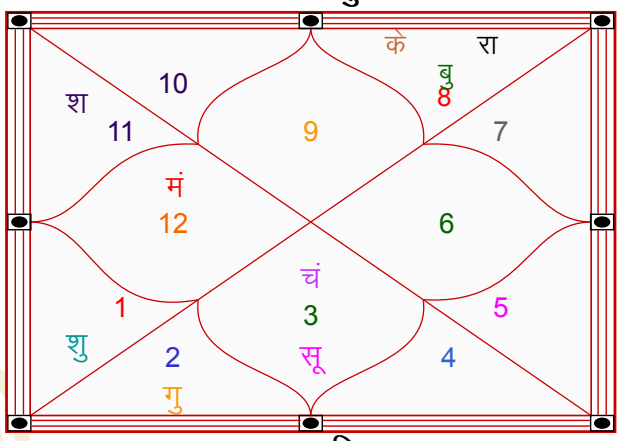

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

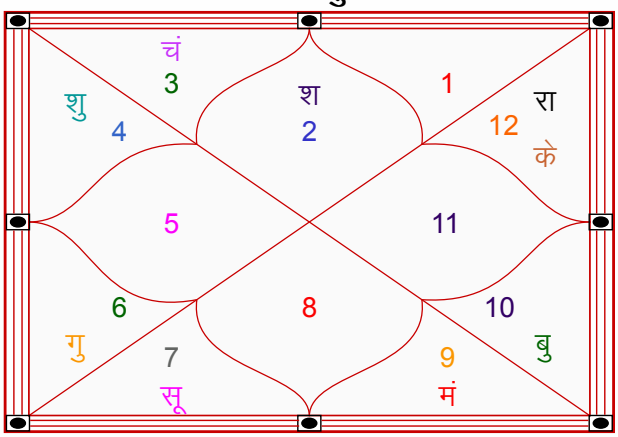

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

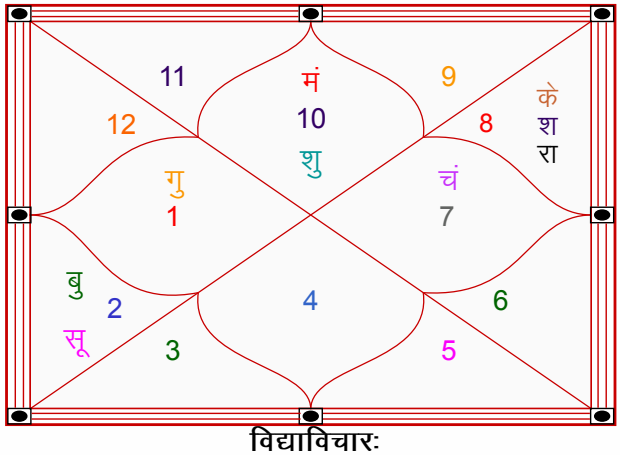

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

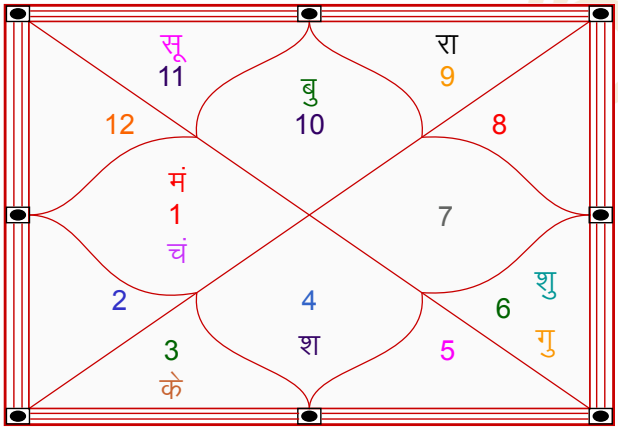

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

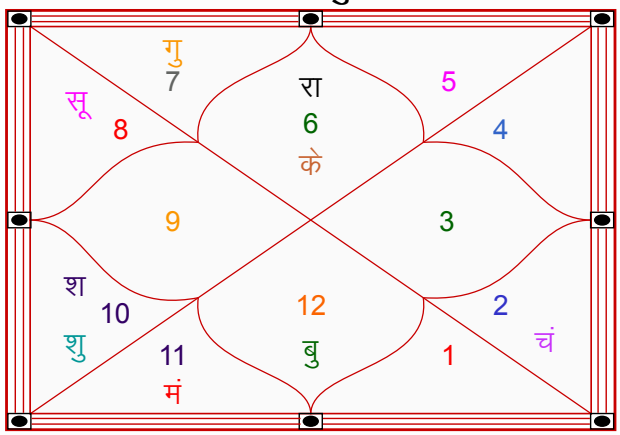

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

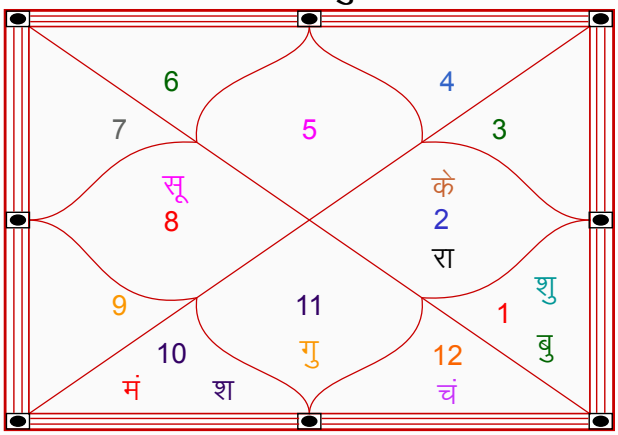

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

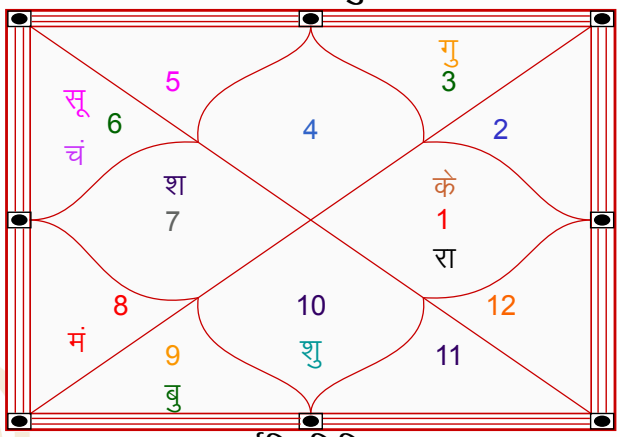

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

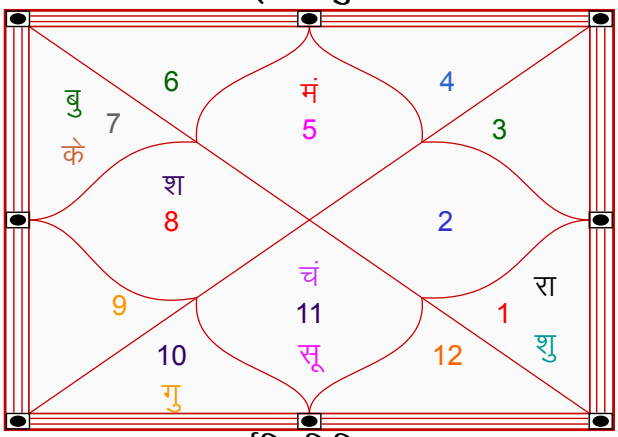

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	कर्क	कर्क	मिथु	कर्क	तुला	कर्क	कर्क	वृष	वृश्चि
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	मीन	कर्क	मिथु	वृश्चि	मिथु	मीन	मीन	वृष	वृश्चि
चतुर्थांश	सिंह	मेष	कर्क	मिथु	तुला	कर्क	मेष	मक	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	धनु	कर्क	मक	कर्क	मेष	मेष	मिथु	वृष	धनु	मिथु
नवमांश	मीन	मीन	सिंह	धनु	वृश्चि	वृष	मक	मक	कुंभ	सिंह
दशमांश	मीन	धनु	मेष	सिंह	कर्क	मिथु	तुला	कन्या	कुंभ	सिंह
द्वादशांश	सिंह	मिथु	सिंह	सिंह	धनु	सिंह	मेष	मीन	कर्क	मक
षोडशांश	धनु	मिथु	मिथु	मीन	वृश्चि	वृष	मेष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	वृष	तुला	मिथु	धनु	मक	कन्या	कर्क	वृष	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	मक	वृष	तुला	मक	वृष	मेष	मक	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	मक	कुंभ	मेष	मेष	मक	कन्या	कन्या	कर्क	धनु	मिथु
त्रिंशांश	कन्या	वृश्चि	वृष	कुंभ	मीन	तुला	मक	मक	कन्या	कन्या
खवेदांश	सिंह	वृश्चि	मीन	मक	मेष	कुंभ	मेष	मक	वृष	वृष
अक्षवेदांश	कर्क	कन्या	कन्या	वृश्चि	धनु	मिथु	मक	तुला	मेष	मेष
षष्ट्यंश	सिंह	कुंभ	कुंभ	सिंह	तुला	मक	मेष	वृश्चि	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ———	1 ———	1 ———	2 भेदक
चन्द्र	4 चामर	4 चामर	4 गोपुर	5 कन्दुक
मंगल	0 ———	0 ———	0 ———	4 नागपुष्प
बुध	0 ———	0 ———	0 ———	0 ———
गुरु	1 ———	1 ———	1 ———	2 भेदक
शुक्र	1 ———	1 ———	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
राहु	1 ———	1 ———	1 ———	1 ———
केतु	0 ———	0 ———	0 ———	1 ———

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.70	15.85	11.85	11.00	11.60	9.50	12.50	16.25	7.60
सप्तवर्ग	14.10	14.48	12.85	11.50	11.60	9.50	12.25	14.88	7.35
दशवर्ग	11.45	12.18	14.78	10.75	12.45	12.00	11.88	13.15	8.05
षोडशवर्ग	11.28	12.48	13.60	10.85	11.93	11.13	12.63	13.63	8.58

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	———	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	———	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	———	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	———	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	———	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	———	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	———	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	———	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	———	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	सम	———	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	———

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	24.0	39.7	16.8	39.6	23.0	21.5	30.2
सप्तवर्गज बल	116.3	112.5	105.0	78.8	82.5	56.3	101.3
ओजयुग्मक बल	0.0	15.0	30.0	0.0	15.0	30.0	0.0
केन्द्र बल	15.0	15.0	30.0	15.0	15.0	15.0	15.0
द्रेष्काण बल	0.0	0.0	15.0	15.0	0.0	15.0	0.0
कुल स्थान बल	155.3	182.2	196.8	148.3	135.5	137.7	146.4
कुल दिग्बल	2.2	54.2	14.7	38.0	4.0	59.6	24.2
नतोन्नत बल	2.2	57.8	57.8	60.0	2.2	2.2	57.8
पक्ष बल	52.0	104.0	52.0	52.0	8.0	8.0	52.0
त्रिभाग बल	0.0	0.0	0.0	0.0	60.0	60.0	0.0
अब्द बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	15.0	0.0
मास बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	30.0	0.0
वार बल	0.0	0.0	0.0	0.0	45.0	0.0	0.0
होरा बल	0.0	0.0	0.0	60.0	0.0	0.0	0.0
अयन बल	97.7	3.3	60.0	54.0	7.4	51.0	8.3
युद्ध बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
कुल कालबल	151.8	165.1	169.8	226.0	122.5	166.1	118.1
कुल चेष्टाबल	0.0	0.0	24.6	15.3	31.4	2.7	4.2
कुल नैसर्गिक बल	60.0	51.4	17.1	25.7	34.3	42.9	8.6
कुल दृग्बल	0.9	14.0	9.8	12.0	-31.6	9.8	10.3
कुल षट्बल	370.2	466.9	432.9	465.4	296.2	418.8	311.8
रूप षट्बल	6.2	7.8	7.2	7.8	4.9	7.0	5.2
न्यूनतम आवश्यकता	5.0	6.0	5.0	7.0	6.5	5.5	5.0
अनुपात	1.2	1.3	1.4	1.1	0.8	1.3	1.0
संबंधित पद	4	2	1	5	7	3	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	32.11	17.82	20.36	24.61	26.92	7.65	11.22
कष्ट फल	24.76	32.51	39.08	30.22	32.49	46.97	40.82

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	418.8	465.4	465.4	466.9	370.2	418.8	432.9	296.2	296.2	311.8	311.8	432.9
भावदिग्बल	30.0	50.0	40.0	60.0	10.0	10.0	60.0	10.0	50.0	0.0	40.0	40.0
भावदृष्टि बल	43.5	41.8	59.5	45.5	-5.1	-5.7	16.5	-4.2	17.1	58.5	72.8	22.3
कुल भाव बल	492.3	557.1	564.9	572.4	375.0	423.1	509.4	302.0	363.3	370.3	424.6	495.2
रूप भाव बल	8.2	9.3	9.4	9.5	6.3	7.1	8.5	5.0	6.1	6.2	7.1	8.3
संबंधित पद	6.0	3.0	2.0	1.0	9.0	8.0	4.0	12.0	11.0	10.0	7.0	5.0

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

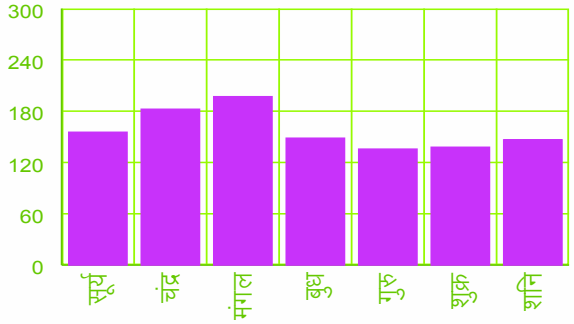

दिग्बल

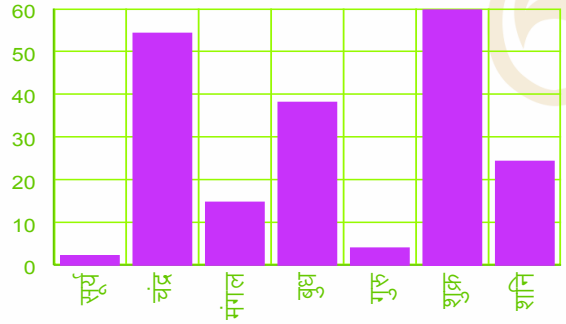

कालबल

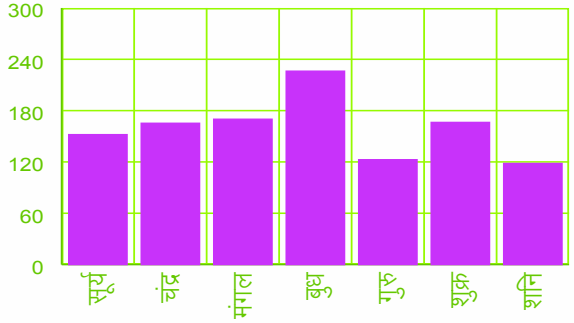

चेष्टाबल

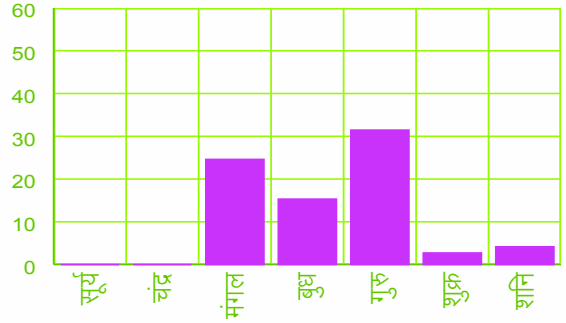

नैसर्गिक बल

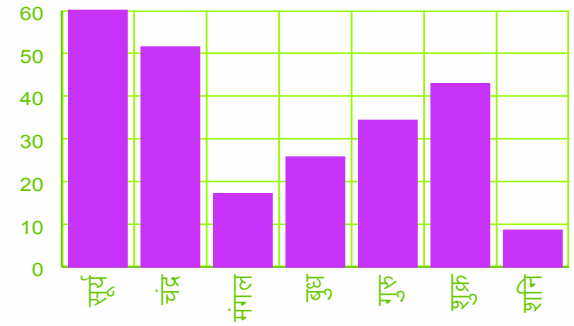

दृग्बल

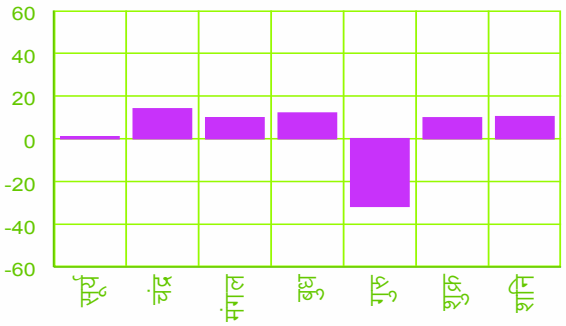

रूप षट्बल

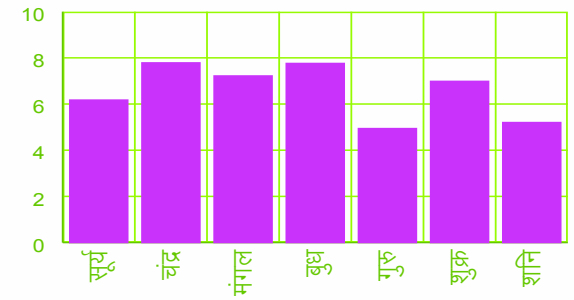

न्यूनतम षट्बल

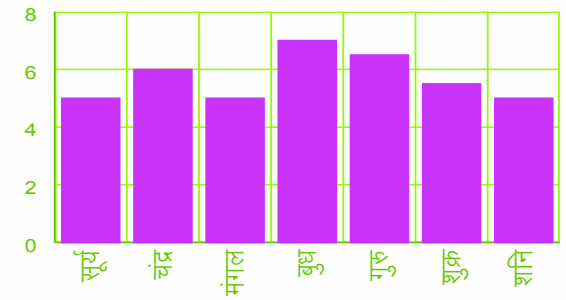

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

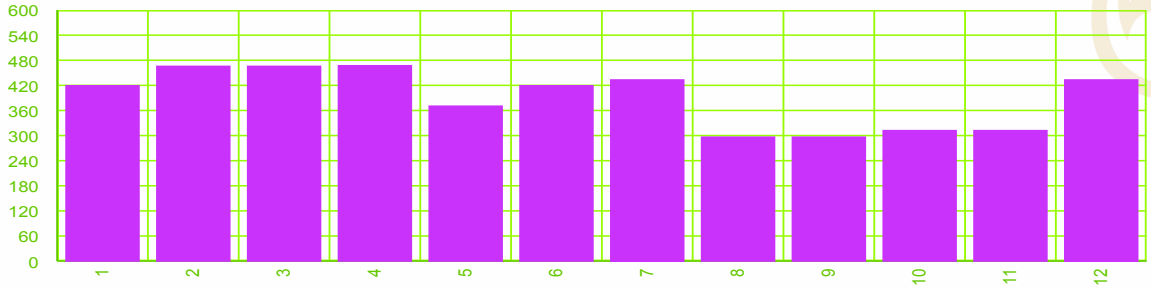

भावदिग्बल

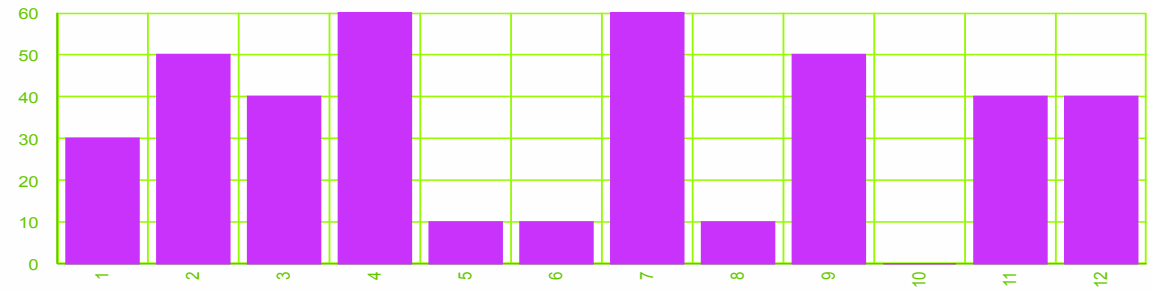

भावदृष्टि बल

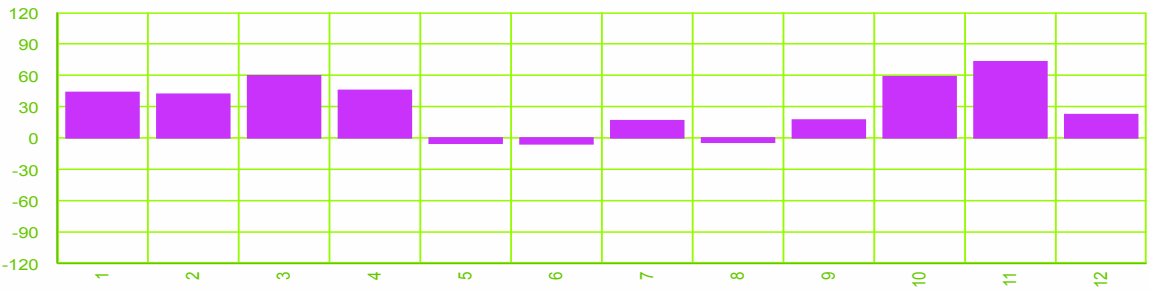

भाव बल

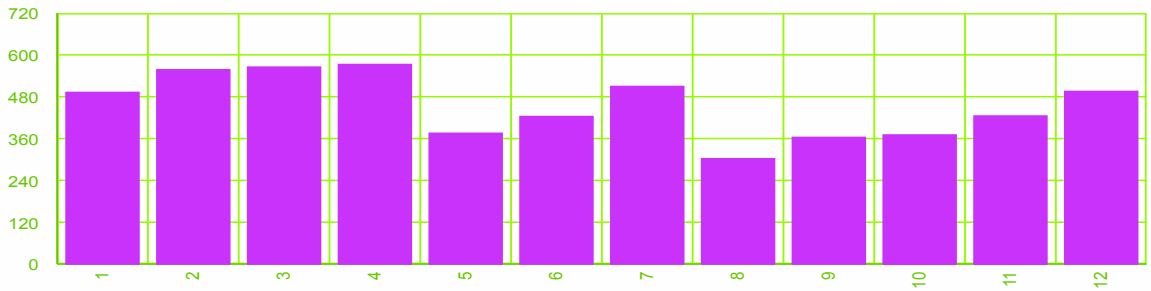

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

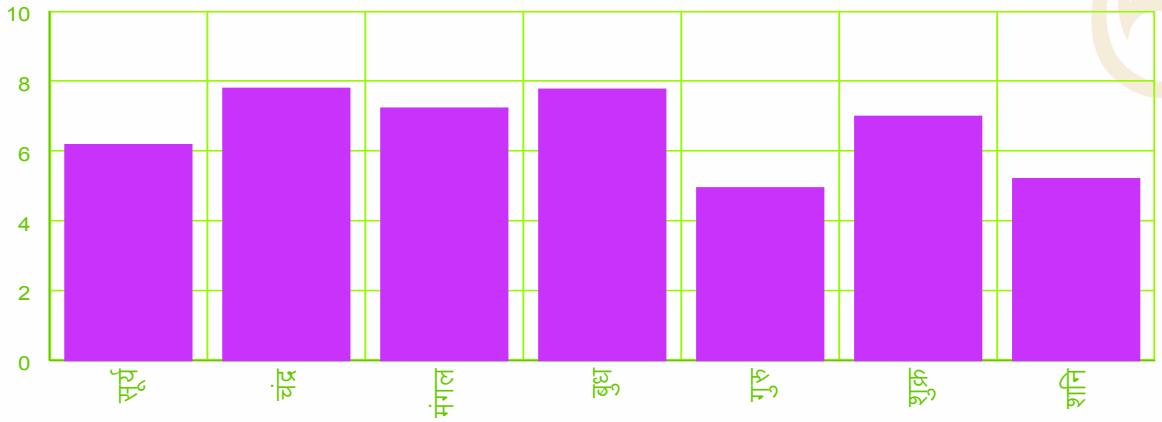

इष्ट – कष्ट फल

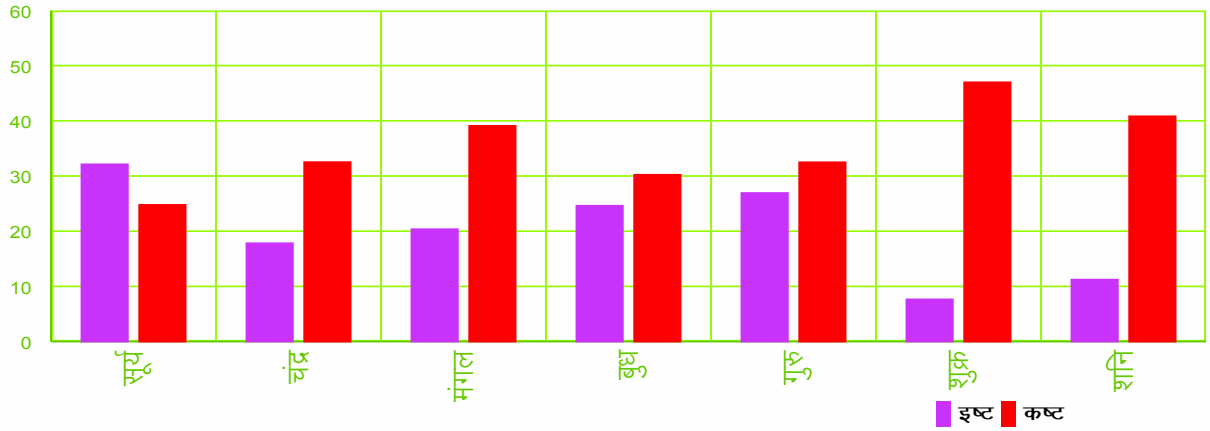

रूप भाव बल

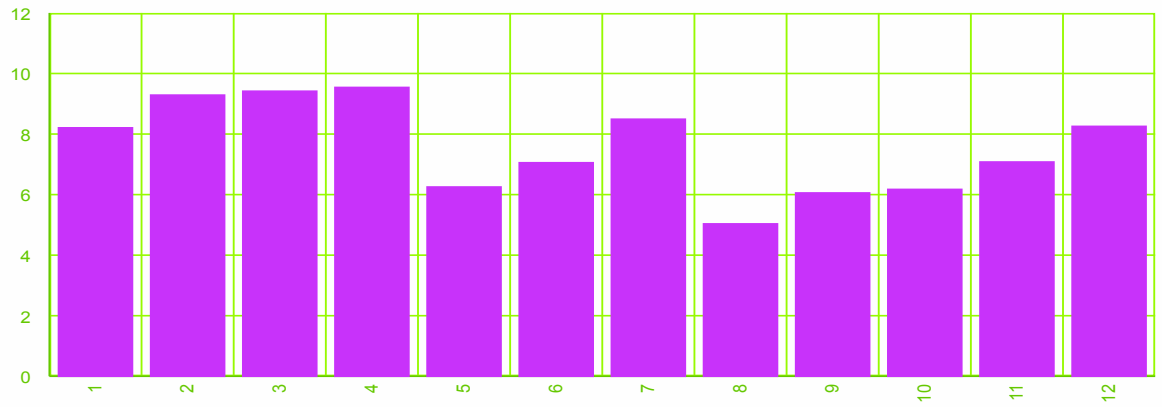

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	07:45:37	––	––	कृतिका	4	3
गुलिक	गु	मिथु	05:41:38	––	––	मृगशिरा	4	5
काल	का	मिथु	23:31:16	––	––	पुनर्वसु	2	7
मृत्यु	मृ	कुंभ	27:50:23	––	––	पू०भाद्रपद	3	25
यमघंटक	यम	मेष	23:15:49	––	––	भरणी	3	2
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मीन	26:54:42	––	––	रेवती	4	27
धूम	धू	धनु	11:19:21	––	––	मूल	4	19
व्यतिपात	व्य	कर्क	18:40:39	––	––	आश्लेषा	1	9
परिवेश	परि	मक	18:40:39	––	––	श्रवण	3	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	11:19:21	नीच	––	आर्द्रा	2	6
उपकेतु	उप	मिथु	27:59:21	––	––	पुनर्वसु	3	7
मांदी	मांदी	मिथु	21:23:28	––	––	पुनर्वसु	1	7

प्राणपद	:	कन्या	21:58:57	कारकाँश लग्न	:	मीन	11:54:06
भाव लग्न	:	कुंभ	10:27:35	होरा लग्न	:	वृश्चि	13:09:34
घटी लग्न	:	वृष	11:29:15	वर्णद लग्न	:	धनु	20:55:11

उपग्रह कुंडली

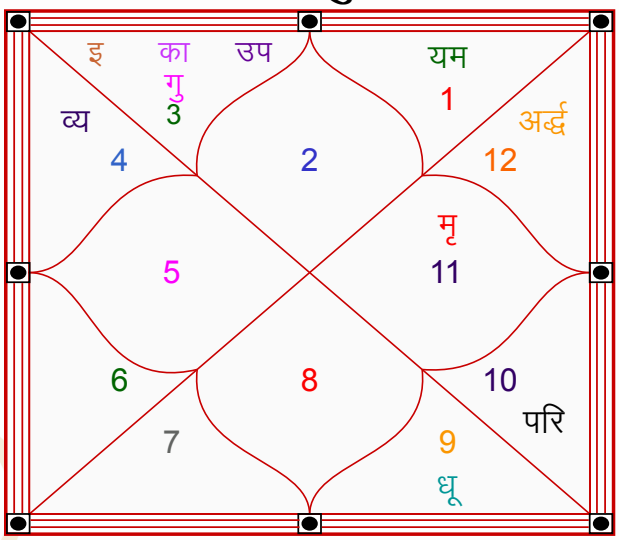

आरूढ़ कुंडली

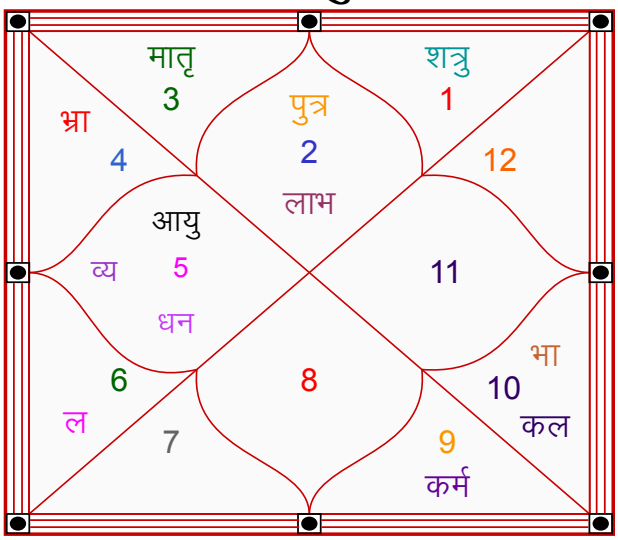

षन्नाडी चक्र

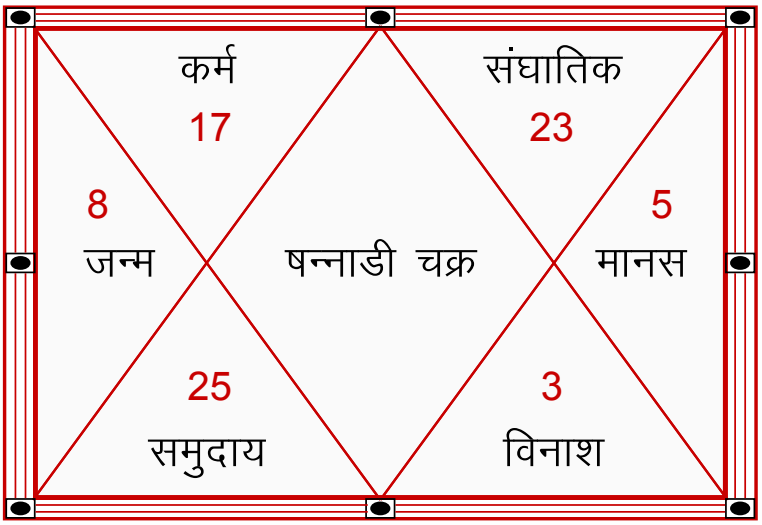

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
कुल	**4**	**4**	**3**	**3**	**1**	**4**	**4**	**5**	**6**	**6**	**4**	**4**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	**5**	**2**	**5**	**5**	**5**	**3**	**5**	**3**	**4**	**6**	**6**	**0**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	**2**	**4**	**1**	**5**	**2**	**2**	**5**	**2**	**3**	**4**	**3**	**6**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
कुल	**4**	**5**	**4**	**4**	**3**	**5**	**2**	**5**	**7**	**4**	**7**	**4**	**54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	**4**	**6**	**5**	**5**	**2**	**6**	**5**	**6**	**3**	**4**	**6**	**4**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
कुल	**4**	**5**	**6**	**3**	**5**	**2**	**1**	**6**	**5**	**3**	**8**	**4**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	**2**	**4**	**3**	**3**	**2**	**4**	**1**	**4**	**4**	**3**	**7**	**2**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**4**	**5**	**4**	**4**	**6**	**3**	**4**	**1**	**4**	**4**	**6**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	7	2	2	4	3	3	2	4	1	4	4	39
गुरु	5	6	3	4	6	4	4	6	5	5	2	6	56
मंगल	3	6	2	4	1	5	2	2	5	2	3	4	39
सूर्य	6	4	4	4	4	3	3	1	4	4	5	6	48
शुक्र	3	8	4	4	5	6	3	5	2	1	6	5	52
बुध	4	7	4	4	5	4	4	3	5	2	5	7	54
चंद्र	6	6	0	5	2	5	5	5	3	5	3	4	49
बिन्दु	30	44	19	27	27	30	24	24	28	20	28	36	337
रेखा	26	12	37	29	29	26	32	32	28	36	28	20	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	6	0	0	1	2	1	0	1	0	2	2	15
गुरु	0	2	1	0	1	0	2	2	0	1	0	2	11
मंगल	2	4	0	2	0	3	0	0	4	0	1	2	18
सूर्य	2	1	1	3	0	0	0	0	0	1	2	5	15
शुक्र	1	7	1	0	3	5	0	1	0	0	3	1	22
बुध	0	5	0	1	1	2	0	0	1	0	1	4	15
चंद्र	4	1	0	1	0	0	5	1	1	0	3	0	16
रेखा	9	26	3	7	6	12	8	4	7	2	12	16	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	5	0	0	1	2	1	0	1	0	2	1	13
गुरु	0	0	1	0	1	0	2	2	0	1	0	2	9
मंगल	2	4	0	2	0	3	0	0	2	0	1	2	16
सूर्य	2	1	1	3	0	0	0	0	0	1	1	5	14
शुक्र	0	7	1	0	3	4	0	0	0	0	3	1	19
बुध	0	5	0	1	1	2	0	0	1	0	1	3	14
चंद्र	3	0	0	1	0	0	5	1	1	0	3	0	14
रेखा	7	22	3	7	6	11	8	3	5	2	11	14	99

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	120	110	130	130	77	173	120
ग्रह पिंड	89	77	54	27	28	8	10
शोध्य पिंड	209	187	184	157	105	181	130

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

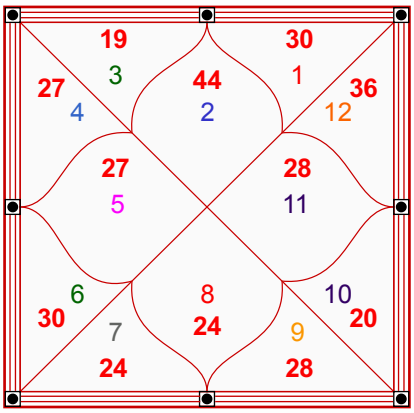

सूर्य का अष्टकवर्ग

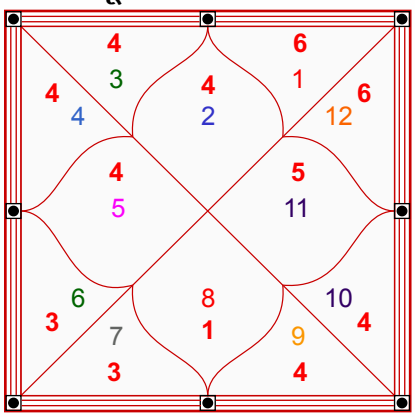

चंद्र का अष्टकवर्ग

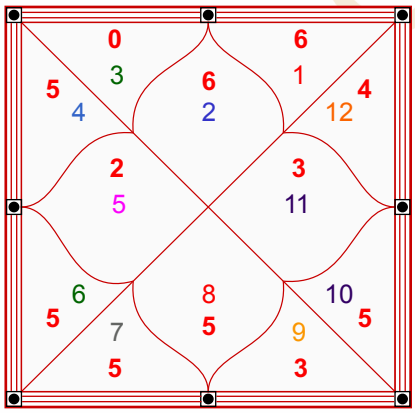

मंगल का अष्टकवर्ग

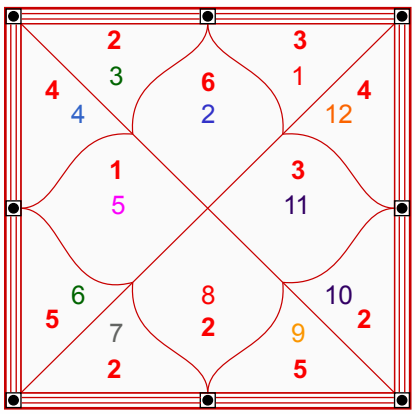

बुध का अष्टकवर्ग

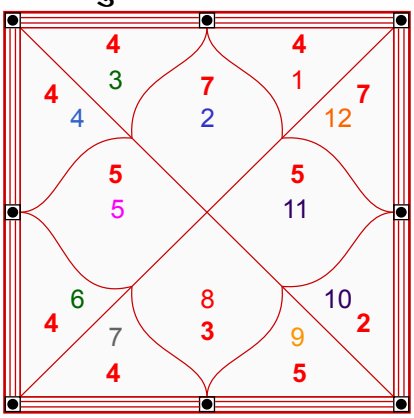

गुरू का अष्टकवर्ग

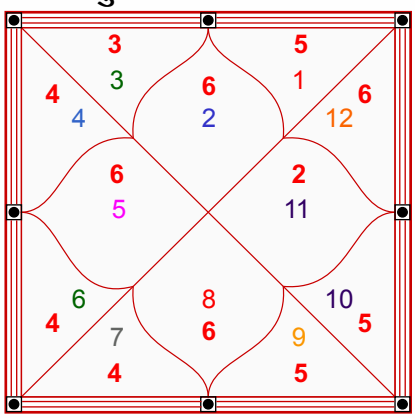

शुक्र का अष्टकवर्ग

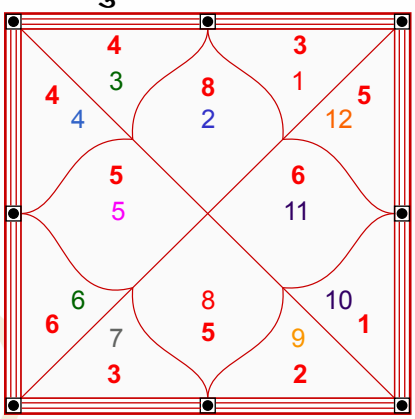

शनि का अष्टकवर्ग

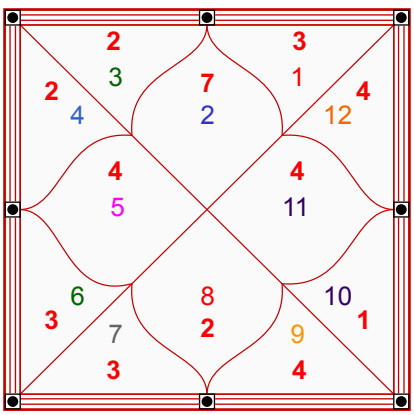

लग्न का अष्टकवर्ग

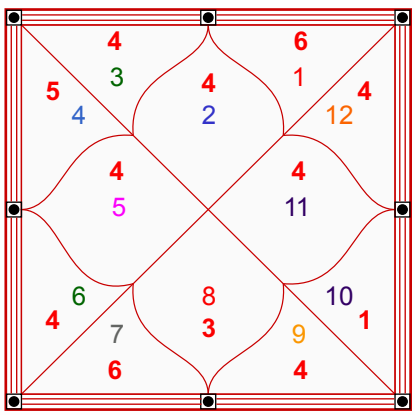

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

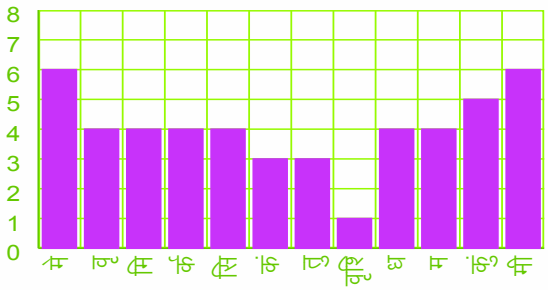

चन्द्र

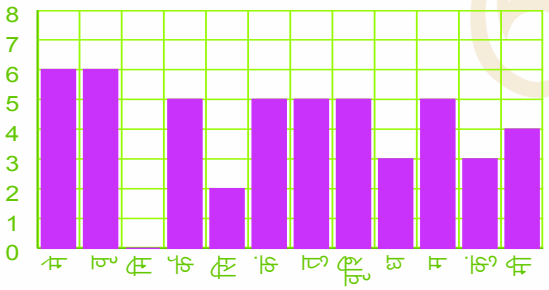

मंगल

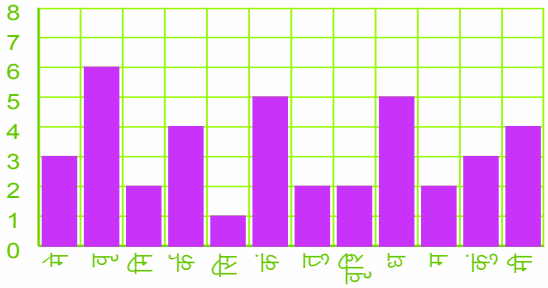

बुध

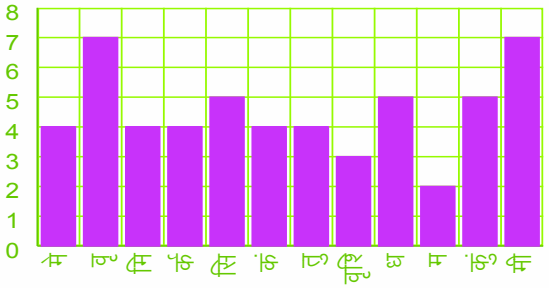

गुरु

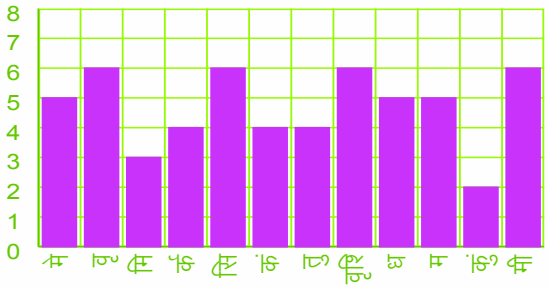

शुक्र

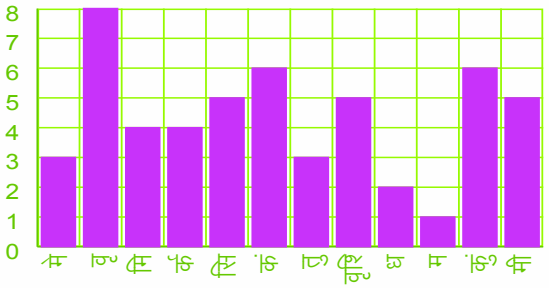

शनि

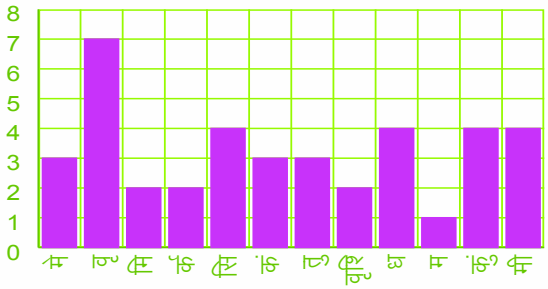

लग्न

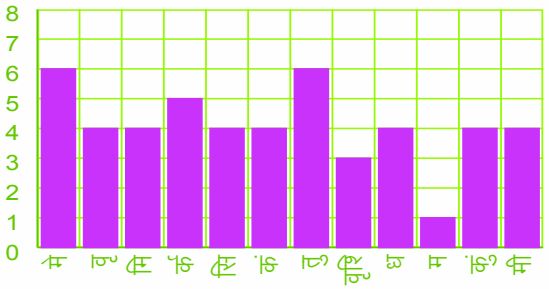

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

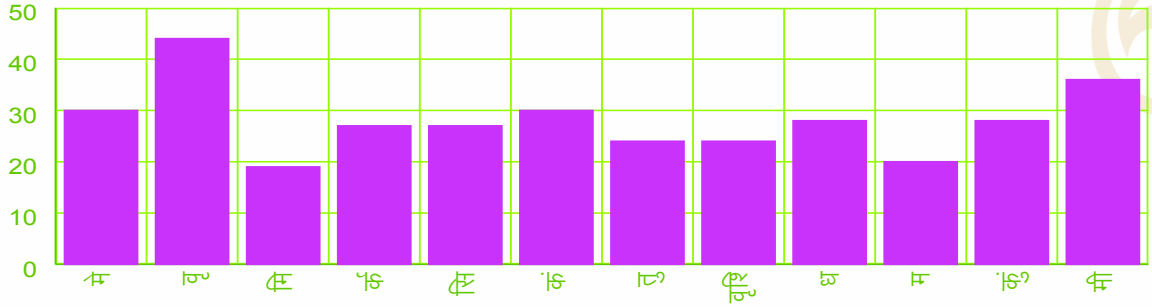

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

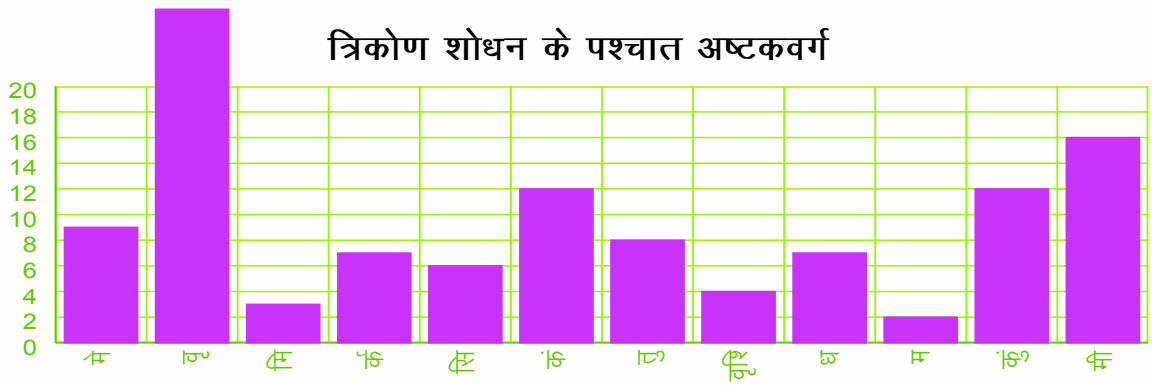

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

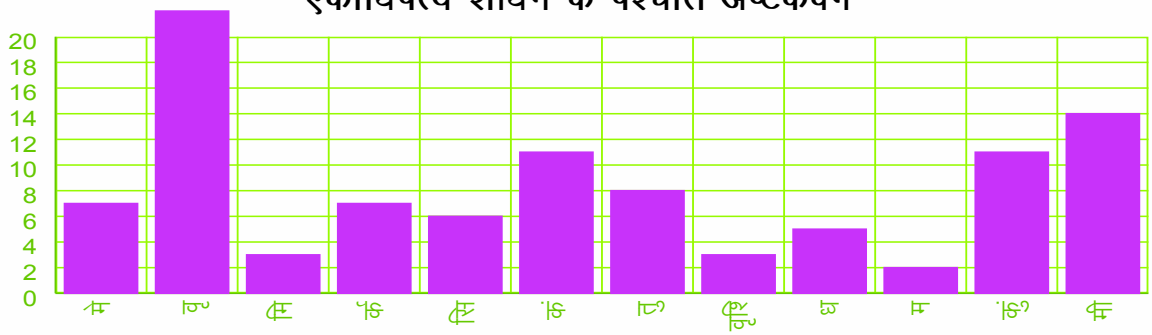

शोध्य पिंड

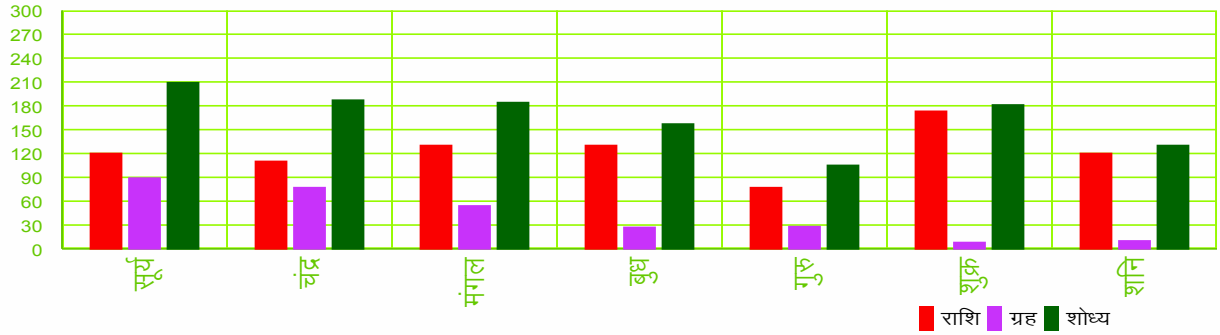

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 18 वर्ष 0 मास 26 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
15/08/1947		10/09/1965		10/09/1982		10/09/1989		10/09/2009	
10/09/1965		10/09/1982		10/09/1989		10/09/2009		10/09/2015	
शनि	13/09/1949	बुध	06/02/1968	केतु	06/02/1983	शुक्र	09/01/1993	सूर्य	28/12/2009
बुध	23/05/1952	केतु	03/02/1969	शुक्र	07/04/1984	सूर्य	10/01/1994	चंद्र	29/06/2010
केतु	02/07/1953	शुक्र	05/12/1971	सूर्य	13/08/1984	चंद्र	10/09/1995	मंगल	04/11/2010
शुक्र	31/08/1956	सूर्य	10/10/1972	चंद्र	14/03/1985	मंगल	09/11/1996	राहु	29/09/2011
सूर्य	13/08/1957	चंद्र	11/03/1974	मंगल	10/08/1985	राहु	10/11/1999	गुरु	17/07/2012
चंद्र	15/03/1959	मंगल	09/03/1975	राहु	29/08/1986	गुरु	11/07/2002	शनि	29/06/2013
मंगल	23/04/1960	राहु	25/09/1977	गुरु	05/08/1987	शनि	10/09/2005	बुध	05/05/2014
राहु	28/02/1963	गुरु	01/01/1980	शनि	13/09/1988	बुध	11/07/2008	केतु	10/09/2014
गुरु	10/09/1965	शनि	10/09/1982	बुध	10/09/1989	केतु	10/09/2009	शुक्र	10/09/2015

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
10/09/2015		10/09/2025		10/09/2032		10/09/2050		10/09/2066	
10/09/2025		10/09/2032		10/09/2050		10/09/2066		00/00/0000	
चंद्र	11/07/2016	मंगल	06/02/2026	राहु	24/05/2035	गुरु	28/10/2052	शनि	15/08/2067
मंगल	09/02/2017	राहु	24/02/2027	गुरु	16/10/2037	शनि	12/05/2055		00/00/0000
राहु	11/08/2018	गुरु	31/01/2028	शनि	22/08/2040	बुध	16/08/2057		00/00/0000
गुरु	11/12/2019	शनि	11/03/2029	बुध	12/03/2043	केतु	23/07/2058		00/00/0000
शनि	11/07/2021	बुध	08/03/2030	केतु	29/03/2044	शुक्र	23/03/2061		00/00/0000
बुध	10/12/2022	केतु	05/08/2030	शुक्र	30/03/2047	सूर्य	10/01/2062		00/00/0000
केतु	11/07/2023	शुक्र	05/10/2031	सूर्य	22/02/2048	चंद्र	12/05/2063		00/00/0000
शुक्र	11/03/2025	सूर्य	09/02/2032	चंद्र	23/08/2049	मंगल	16/04/2064		00/00/0000
सूर्य	10/09/2025	चंद्र	10/09/2032	मंगल	10/09/2050	राहु	10/09/2066		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 18 वर्ष 0 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि	
15/08/1947	
13/09/1949	
	00/00/0000
	15/08/1947
केतु	09/10/1947
शुक्र	09/04/1948
सूर्य	03/06/1948
चंद्र	02/09/1948
मंगल	06/11/1948
राहु	19/04/1949
गुरु	13/09/1949

शनि - बुध	
13/09/1949	
23/05/1952	
बुध	30/01/1950
केतु	28/03/1950
शुक्र	08/09/1950
सूर्य	27/10/1950
चंद्र	17/01/1951
मंगल	16/03/1951
राहु	10/08/1951
गुरु	19/12/1951
शनि	23/05/1952

शनि - केतु	
23/05/1952	
02/07/1953	
केतु	16/06/1952
शुक्र	22/08/1952
सूर्य	11/09/1952
चंद्र	15/10/1952
मंगल	08/11/1952
राहु	07/01/1953
गुरु	02/03/1953
शनि	05/05/1953
बुध	02/07/1953

शनि - शुक्र	
02/07/1953	
31/08/1956	
शुक्र	11/01/1954
सूर्य	09/03/1954
चंद्र	14/06/1954
मंगल	20/08/1954
राहु	10/02/1955
गुरु	14/07/1955
शनि	13/01/1956
बुध	25/06/1956
केतु	31/08/1956

शनि - सूर्य	
31/08/1956	
13/08/1957	
सूर्य	18/09/1956
चंद्र	17/10/1956
मंगल	06/11/1956
राहु	28/12/1956
गुरु	12/02/1957
शनि	08/04/1957
बुध	27/05/1957
केतु	17/06/1957
शुक्र	13/08/1957

शनि - चंद्र	
13/08/1957	
15/03/1959	
चंद्र	01/10/1957
मंगल	03/11/1957
राहु	29/01/1958
गुरु	16/04/1958
शनि	17/07/1958
बुध	07/10/1958
केतु	09/11/1958
शुक्र	14/02/1959
सूर्य	15/03/1959

शनि - मंगल	
15/03/1959	
23/04/1960	
मंगल	07/04/1959
राहु	07/06/1959
गुरु	31/07/1959
शनि	03/10/1959
बुध	29/11/1959
केतु	23/12/1959
शुक्र	29/02/1960
सूर्य	20/03/1960
चंद्र	23/04/1960

शनि - राहु	
23/04/1960	
28/02/1963	
राहु	26/09/1960
गुरु	11/02/1961
शनि	26/07/1961
बुध	21/12/1961
केतु	19/02/1962
शुक्र	12/08/1962
सूर्य	03/10/1962
चंद्र	29/12/1962
मंगल	28/02/1963

शनि - गुरु	
28/02/1963	
10/09/1965	
गुरु	01/07/1963
शनि	24/11/1963
बुध	03/04/1964
केतु	27/05/1964
शुक्र	29/10/1964
सूर्य	14/12/1964
चंद्र	01/03/1965
मंगल	24/04/1965
राहु	10/09/1965

बुध - बुध	
10/09/1965	
06/02/1968	
बुध	12/01/1966
केतु	05/03/1966
शुक्र	29/07/1966
सूर्य	11/09/1966
चंद्र	24/11/1966
मंगल	14/01/1967
राहु	26/05/1967
गुरु	20/09/1967
शनि	06/02/1968

बुध - केतु	
06/02/1968	
03/02/1969	
केतु	28/02/1968
शुक्र	28/04/1968
सूर्य	16/05/1968
चंद्र	15/06/1968
मंगल	06/07/1968
राहु	30/08/1968
गुरु	17/10/1968
शनि	13/12/1968
बुध	03/02/1969

बुध - शुक्र	
03/02/1969	
05/12/1971	
शुक्र	25/07/1969
सूर्य	15/09/1969
चंद्र	10/12/1969
मंगल	08/02/1970
राहु	14/07/1970
गुरु	29/11/1970
शनि	12/05/1971
बुध	05/10/1971
केतु	05/12/1971

बुध - सूर्य	
05/12/1971	
10/10/1972	
सूर्य	20/12/1971
चंद्र	15/01/1972
मंगल	02/02/1972
राहु	20/03/1972
गुरु	30/04/1972
शनि	18/06/1972
बुध	01/08/1972
केतु	19/08/1972
शुक्र	10/10/1972

बुध - चंद्र	
10/10/1972	
11/03/1974	
चंद्र	22/11/1972
मंगल	22/12/1972
राहु	10/03/1973
गुरु	18/05/1973
शनि	08/08/1973
बुध	20/10/1973
केतु	19/11/1973
शुक्र	14/02/1974
सूर्य	11/03/1974

बुध - मंगल	
11/03/1974	
09/03/1975	
मंगल	02/04/1974
राहु	26/05/1974
गुरु	13/07/1974
शनि	09/09/1974
बुध	30/10/1974
केतु	20/11/1974
शुक्र	19/01/1975
सूर्य	06/02/1975
चंद्र	09/03/1975

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु	
09/03/1975	
25/09/1977	
राहु	26/07/1975
गुरु	28/11/1975
शनि	23/04/1976
बुध	02/09/1976
केतु	26/10/1976
शुक्र	31/03/1977
सूर्य	16/05/1977
चंद्र	02/08/1977
मंगल	25/09/1977

बुध - गुरु	
25/09/1977	
01/01/1980	
गुरु	13/01/1978
शनि	25/05/1978
बुध	19/09/1978
केतु	06/11/1978
शुक्र	24/03/1979
सूर्य	04/05/1979
चंद्र	12/07/1979
मंगल	30/08/1979
राहु	01/01/1980

बुध - शनि	
01/01/1980	
10/09/1982	
शनि	05/06/1980
बुध	22/10/1980
केतु	18/12/1980
शुक्र	31/05/1981
सूर्य	19/07/1981
चंद्र	09/10/1981
मंगल	06/12/1981
राहु	02/05/1982
गुरु	10/09/1982

केतु - केतु	
10/09/1982	
06/02/1983	
केतु	19/09/1982
शुक्र	14/10/1982
सूर्य	21/10/1982
चंद्र	03/11/1982
मंगल	11/11/1982
राहु	04/12/1982
गुरु	23/12/1982
शनि	16/01/1983
बुध	06/02/1983

केतु - शुक्र	
06/02/1983	
07/04/1984	
शुक्र	18/04/1983
सूर्य	10/05/1983
चंद्र	14/06/1983
मंगल	09/07/1983
राहु	11/09/1983
गुरु	07/11/1983
शनि	13/01/1984
बुध	13/03/1984
केतु	07/04/1984

केतु - सूर्य	
07/04/1984	
13/08/1984	
सूर्य	14/04/1984
चंद्र	24/04/1984
मंगल	02/05/1984
राहु	21/05/1984
गुरु	07/06/1984
शनि	27/06/1984
बुध	15/07/1984
केतु	23/07/1984
शुक्र	13/08/1984

केतु - चंद्र	
13/08/1984	
14/03/1985	
चंद्र	31/08/1984
मंगल	12/09/1984
राहु	14/10/1984
गुरु	12/11/1984
शनि	15/12/1984
बुध	15/01/1985
केतु	27/01/1985
शुक्र	04/03/1985
सूर्य	14/03/1985

केतु - मंगल	
14/03/1985	
10/08/1985	
मंगल	23/03/1985
राहु	14/04/1985
गुरु	04/05/1985
शनि	28/05/1985
बुध	18/06/1985
केतु	27/06/1985
शुक्र	21/07/1985
सूर्य	29/07/1985
चंद्र	10/08/1985

केतु - राहु	
10/08/1985	
29/08/1986	
राहु	07/10/1985
गुरु	27/11/1985
शनि	27/01/1986
बुध	22/03/1986
केतु	13/04/1986
शुक्र	16/06/1986
सूर्य	06/07/1986
चंद्र	07/08/1986
मंगल	29/08/1986

केतु - गुरु	
29/08/1986	
05/08/1987	
गुरु	13/10/1986
शनि	06/12/1986
बुध	24/01/1987
केतु	12/02/1987
शुक्र	10/04/1987
सूर्य	27/04/1987
चंद्र	26/05/1987
मंगल	15/06/1987
राहु	05/08/1987

केतु - शनि	
05/08/1987	
13/09/1988	
शनि	08/10/1987
बुध	04/12/1987
केतु	28/12/1987
शुक्र	04/03/1988
सूर्य	25/03/1988
चंद्र	27/04/1988
मंगल	21/05/1988
राहु	21/07/1988
गुरु	13/09/1988

केतु - बुध	
13/09/1988	
10/09/1989	
बुध	03/11/1988
केतु	24/11/1988
शुक्र	23/01/1989
सूर्य	11/02/1989
चंद्र	13/03/1989
मंगल	03/04/1989
राहु	27/05/1989
गुरु	14/07/1989
शनि	10/09/1989

शुक्र - शुक्र	
10/09/1989	
09/01/1993	
शुक्र	01/04/1990
सूर्य	01/06/1990
चंद्र	10/09/1990
मंगल	20/11/1990
राहु	22/05/1991
गुरु	31/10/1991
शनि	11/05/1992
बुध	30/10/1992
केतु	09/01/1993

शुक्र - सूर्य	
09/01/1993	
10/01/1994	
सूर्य	28/01/1993
चंद्र	27/02/1993
मंगल	20/03/1993
राहु	14/05/1993
गुरु	02/07/1993
शनि	29/08/1993
बुध	19/10/1993
केतु	10/11/1993
शुक्र	10/01/1994

शुक्र - चंद्र	
10/01/1994	
10/09/1995	
चंद्र	01/03/1994
मंगल	06/04/1994
राहु	06/07/1994
गुरु	25/09/1994
शनि	31/12/1994
बुध	27/03/1995
केतु	01/05/1995
शुक्र	11/08/1995
सूर्य	10/09/1995

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल	
10/09/1995	
09/11/1996	
मंगल	05/10/1995
राहु	08/12/1995
गुरु	03/02/1996
शनि	10/04/1996
बुध	10/06/1996
केतु	05/07/1996
शुक्र	14/09/1996
सूर्य	05/10/1996
चंद्र	09/11/1996

शुक्र - राहु	
09/11/1996	
10/11/1999	
राहु	23/04/1997
गुरु	16/09/1997
शनि	08/03/1998
बुध	11/08/1998
केतु	14/10/1998
शुक्र	14/04/1999
सूर्य	08/06/1999
चंद्र	07/09/1999
मंगल	10/11/1999

शुक्र - गुरु	
10/11/1999	
11/07/2002	
गुरु	19/03/2000
शनि	20/08/2000
बुध	05/01/2001
केतु	03/03/2001
शुक्र	12/08/2001
सूर्य	30/09/2001
चंद्र	20/12/2001
मंगल	15/02/2002
राहु	11/07/2002

शुक्र - शनि	
11/07/2002	
10/09/2005	
शनि	10/01/2003
बुध	23/06/2003
केतु	30/08/2003
शुक्र	09/03/2004
सूर्य	06/05/2004
चंद्र	11/08/2004
मंगल	17/10/2004
राहु	09/04/2005
गुरु	10/09/2005

शुक्र - बुध	
10/09/2005	
11/07/2008	
बुध	03/02/2006
केतु	05/04/2006
शुक्र	24/09/2006
सूर्य	15/11/2006
चंद्र	09/02/2007
मंगल	11/04/2007
राहु	13/09/2007
गुरु	29/01/2008
शनि	11/07/2008

शुक्र - केतु	
11/07/2008	
10/09/2009	
केतु	05/08/2008
शुक्र	15/10/2008
सूर्य	05/11/2008
चंद्र	10/12/2008
मंगल	04/01/2009
राहु	09/03/2009
गुरु	05/05/2009
शनि	11/07/2009
बुध	10/09/2009

सूर्य - सूर्य	
10/09/2009	
28/12/2009	
सूर्य	15/09/2009
चंद्र	24/09/2009
मंगल	01/10/2009
राहु	17/10/2009
गुरु	01/11/2009
शनि	18/11/2009
बुध	04/12/2009
केतु	10/12/2009
शुक्र	28/12/2009

सूर्य - चंद्र	
28/12/2009	
29/06/2010	
चंद्र	13/01/2010
मंगल	23/01/2010
राहु	20/02/2010
गुरु	16/03/2010
शनि	14/04/2010
बुध	10/05/2010
केतु	20/05/2010
शुक्र	20/06/2010
सूर्य	29/06/2010

सूर्य - मंगल	
29/06/2010	
04/11/2010	
मंगल	06/07/2010
राहु	26/07/2010
गुरु	12/08/2010
शनि	01/09/2010
बुध	19/09/2010
केतु	26/09/2010
शुक्र	18/10/2010
सूर्य	24/10/2010
चंद्र	04/11/2010

सूर्य - राहु	
04/11/2010	
29/09/2011	
राहु	23/12/2010
गुरु	05/02/2011
शनि	29/03/2011
बुध	15/05/2011
केतु	03/06/2011
शुक्र	28/07/2011
सूर्य	13/08/2011
चंद्र	09/09/2011
मंगल	29/09/2011

सूर्य - गुरु	
29/09/2011	
17/07/2012	
गुरु	07/11/2011
शनि	23/12/2011
बुध	02/02/2012
केतु	19/02/2012
शुक्र	08/04/2012
सूर्य	23/04/2012
चंद्र	17/05/2012
मंगल	03/06/2012
राहु	17/07/2012

सूर्य - शनि	
17/07/2012	
29/06/2013	
शनि	10/09/2012
बुध	29/10/2012
केतु	18/11/2012
शुक्र	15/01/2013
सूर्य	01/02/2013
चंद्र	02/03/2013
मंगल	22/03/2013
राहु	13/05/2013
गुरु	29/06/2013

सूर्य - बुध	
29/06/2013	
05/05/2014	
बुध	12/08/2013
केतु	30/08/2013
शुक्र	21/10/2013
सूर्य	05/11/2013
चंद्र	01/12/2013
मंगल	19/12/2013
राहु	04/02/2014
गुरु	17/03/2014
शनि	05/05/2014

सूर्य - केतु	
05/05/2014	
10/09/2014	
केतु	13/05/2014
शुक्र	03/06/2014
सूर्य	09/06/2014
चंद्र	20/06/2014
मंगल	27/06/2014
राहु	17/07/2014
गुरु	03/08/2014
शनि	23/08/2014
बुध	10/09/2014

सूर्य - शुक्र	
10/09/2014	
10/09/2015	
शुक्र	10/11/2014
सूर्य	28/11/2014
चंद्र	29/12/2014
मंगल	19/01/2015
राहु	15/03/2015
गुरु	02/05/2015
शनि	29/06/2015
बुध	20/08/2015
केतु	10/09/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
10/09/2015	
11/07/2016	
चंद्र	06/10/2015
मंगल	23/10/2015
राहु	08/12/2015
गुरु	18/01/2016
शनि	06/03/2016
बुध	18/04/2016
केतु	06/05/2016
शुक्र	25/06/2016
सूर्य	11/07/2016

चंद्र - मंगल	
11/07/2016	
09/02/2017	
मंगल	23/07/2016
राहु	24/08/2016
गुरु	21/09/2016
शनि	25/10/2016
बुध	24/11/2016
केतु	07/12/2016
शुक्र	11/01/2017
सूर्य	22/01/2017
चंद्र	09/02/2017

चंद्र - राहु	
09/02/2017	
11/08/2018	
राहु	02/05/2017
गुरु	14/07/2017
शनि	09/10/2017
बुध	25/12/2017
केतु	26/01/2018
शुक्र	28/04/2018
सूर्य	25/05/2018
चंद्र	10/07/2018
मंगल	11/08/2018

चंद्र - गुरु	
11/08/2018	
11/12/2019	
गुरु	15/10/2018
शनि	31/12/2018
बुध	10/03/2019
केतु	07/04/2019
शुक्र	27/06/2019
सूर्य	22/07/2019
चंद्र	31/08/2019
मंगल	29/09/2019
राहु	11/12/2019

चंद्र - शनि	
11/12/2019	
11/07/2021	
शनि	11/03/2020
बुध	01/06/2020
केतु	05/07/2020
शुक्र	09/10/2020
सूर्य	07/11/2020
चंद्र	25/12/2020
मंगल	28/01/2021
राहु	25/04/2021
गुरु	11/07/2021

चंद्र - बुध	
11/07/2021	
10/12/2022	
बुध	22/09/2021
केतु	22/10/2021
शुक्र	17/01/2022
सूर्य	12/02/2022
चंद्र	27/03/2022
मंगल	26/04/2022
राहु	12/07/2022
गुरु	19/09/2022
शनि	10/12/2022

चंद्र - केतु	
10/12/2022	
11/07/2023	
केतु	23/12/2022
शुक्र	27/01/2023
सूर्य	07/02/2023
चंद्र	25/02/2023
मंगल	09/03/2023
राहु	10/04/2023
गुरु	09/05/2023
शनि	11/06/2023
बुध	11/07/2023

चंद्र - शुक्र	
11/07/2023	
11/03/2025	
शुक्र	21/10/2023
सूर्य	20/11/2023
चंद्र	10/01/2024
मंगल	15/02/2024
राहु	16/05/2024
गुरु	05/08/2024
शनि	09/11/2024
बुध	04/02/2025
केतु	11/03/2025

चंद्र - सूर्य	
11/03/2025	
10/09/2025	
सूर्य	20/03/2025
चंद्र	05/04/2025
मंगल	15/04/2025
राहु	13/05/2025
गुरु	06/06/2025
शनि	05/07/2025
बुध	31/07/2025
केतु	10/08/2025
शुक्र	10/09/2025

मंगल - मंगल	
10/09/2025	
06/02/2026	
मंगल	19/09/2025
राहु	11/10/2025
गुरु	31/10/2025
शनि	23/11/2025
बुध	15/12/2025
केतु	23/12/2025
शुक्र	17/01/2026
सूर्य	25/01/2026
चंद्र	06/02/2026

मंगल - राहु	
06/02/2026	
24/02/2027	
राहु	04/04/2026
गुरु	26/05/2026
शनि	25/07/2026
बुध	18/09/2026
केतु	10/10/2026
शुक्र	13/12/2026
सूर्य	01/01/2027
चंद्र	02/02/2027
मंगल	24/02/2027

मंगल - गुरु	
24/02/2027	
31/01/2028	
गुरु	11/04/2027
शनि	04/06/2027
बुध	22/07/2027
केतु	11/08/2027
शुक्र	07/10/2027
सूर्य	24/10/2027
चंद्र	21/11/2027
मंगल	11/12/2027
राहु	31/01/2028

मंगल - शनि	
31/01/2028	
11/03/2029	
शनि	04/04/2028
बुध	01/06/2028
केतु	24/06/2028
शुक्र	31/08/2028
सूर्य	20/09/2028
चंद्र	24/10/2028
मंगल	16/11/2028
राहु	16/01/2029
गुरु	11/03/2029

मंगल - बुध	
11/03/2029	
08/03/2030	
बुध	01/05/2029
केतु	23/05/2029
शुक्र	22/07/2029
सूर्य	09/08/2029
चंद्र	08/09/2029
मंगल	29/09/2029
राहु	23/11/2029
गुरु	10/01/2030
शनि	08/03/2030

मंगल - केतु	
08/03/2030	
05/08/2030	
केतु	17/03/2030
शुक्र	11/04/2030
सूर्य	18/04/2030
चंद्र	01/05/2030
मंगल	10/05/2030
राहु	01/06/2030
गुरु	21/06/2030
शनि	14/07/2030
बुध	05/08/2030

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र	
05/08/2030	
05/10/2031	
शुक्र	15/10/2030
सूर्य	05/11/2030
चंद्र	10/12/2030
मंगल	04/01/2031
राहु	09/03/2031
गुरु	05/05/2031
शनि	11/07/2031
बुध	10/09/2031
केतु	05/10/2031

मंगल - सूर्य	
05/10/2031	
09/02/2032	
सूर्य	11/10/2031
चंद्र	22/10/2031
मंगल	29/10/2031
राहु	17/11/2031
गुरु	04/12/2031
शनि	25/12/2031
बुध	12/01/2032
केतु	19/01/2032
शुक्र	09/02/2032

मंगल - चंद्र	
09/02/2032	
10/09/2032	
चंद्र	27/02/2032
मंगल	11/03/2032
राहु	12/04/2032
गुरु	10/05/2032
शनि	13/06/2032
बुध	13/07/2032
केतु	25/07/2032
शुक्र	30/08/2032
सूर्य	10/09/2032

राहु - राहु	
10/09/2032	
24/05/2035	
राहु	04/02/2033
गुरु	16/06/2033
शनि	19/11/2033
बुध	08/04/2034
केतु	04/06/2034
शुक्र	16/11/2034
सूर्य	04/01/2035
चंद्र	27/03/2035
मंगल	24/05/2035

राहु - गुरु	
24/05/2035	
16/10/2037	
गुरु	18/09/2035
शनि	03/02/2036
बुध	07/06/2036
केतु	28/07/2036
शुक्र	21/12/2036
सूर्य	03/02/2037
चंद्र	17/04/2037
मंगल	07/06/2037
राहु	16/10/2037

राहु - शनि	
16/10/2037	
22/08/2040	
शनि	30/03/2038
बुध	25/08/2038
केतु	24/10/2038
शुक्र	16/04/2039
सूर्य	07/06/2039
चंद्र	02/09/2039
मंगल	01/11/2039
राहु	06/04/2040
गुरु	22/08/2040

राहु - बुध	
22/08/2040	
12/03/2043	
बुध	01/01/2041
केतु	25/02/2041
शुक्र	30/07/2041
सूर्य	14/09/2041
चंद्र	01/12/2041
मंगल	24/01/2042
राहु	13/06/2042
गुरु	15/10/2042
शनि	12/03/2043

राहु - केतु	
12/03/2043	
29/03/2044	
केतु	03/04/2043
शुक्र	06/06/2043
सूर्य	25/06/2043
चंद्र	27/07/2043
मंगल	18/08/2043
राहु	15/10/2043
गुरु	05/12/2043
शनि	04/02/2044
बुध	29/03/2044

राहु - शुक्र	
29/03/2044	
30/03/2047	
शुक्र	28/09/2044
सूर्य	22/11/2044
चंद्र	21/02/2045
मंगल	26/04/2045
राहु	07/10/2045
गुरु	02/03/2046
शनि	23/08/2046
बुध	25/01/2047
केतु	30/03/2047

राहु - सूर्य	
30/03/2047	
22/02/2048	
सूर्य	15/04/2047
चंद्र	13/05/2047
मंगल	01/06/2047
राहु	20/07/2047
गुरु	02/09/2047
शनि	24/10/2047
बुध	10/12/2047
केतु	29/12/2047
शुक्र	22/02/2048

राहु - चंद्र	
22/02/2048	
23/08/2049	
चंद्र	07/04/2048
मंगल	09/05/2048
राहु	30/07/2048
गुरु	12/10/2048
शनि	06/01/2049
बुध	25/03/2049
केतु	26/04/2049
शुक्र	26/07/2049
सूर्य	23/08/2049

राहु - मंगल	
23/08/2049	
10/09/2050	
मंगल	14/09/2049
राहु	10/11/2049
गुरु	01/01/2050
शनि	02/03/2050
बुध	26/04/2050
केतु	18/05/2050
शुक्र	21/07/2050
सूर्य	09/08/2050
चंद्र	10/09/2050

गुरु - गुरु	
10/09/2050	
28/10/2052	
गुरु	23/12/2050
शनि	25/04/2051
बुध	14/08/2051
केतु	28/09/2051
शुक्र	05/02/2052
सूर्य	15/03/2052
चंद्र	19/05/2052
मंगल	03/07/2052
राहु	28/10/2052

गुरु - शनि	
28/10/2052	
12/05/2055	
शनि	24/03/2053
बुध	02/08/2053
केतु	25/09/2053
शुक्र	26/02/2054
सूर्य	13/04/2054
चंद्र	29/06/2054
मंगल	22/08/2054
राहु	08/01/2055
गुरु	12/05/2055

गुरु - बुध	
12/05/2055	
16/08/2057	
बुध	06/09/2055
केतु	24/10/2055
शुक्र	10/03/2056
सूर्य	21/04/2056
चंद्र	29/06/2056
मंगल	16/08/2056
राहु	18/12/2056
गुरु	07/04/2057
शनि	16/08/2057

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शुक्र - बुध	
09/11/2024 22:29	
04/02/2025 04:14	
बुध	22/11/2024 03:41
केतु	27/11/2024 04:26
शुक्र	11/12/2024 13:23
सूर्य	15/12/2024 20:52
चंद्र	23/12/2024 01:21
मंगल	28/12/2024 02:05
राहु	10/01/2025 00:33
गुरु	21/01/2025 12:31
शनि	04/02/2025 04:14

चंद्र - शुक्र - केतु	
04/02/2025 04:14	
11/03/2025 16:29	
केतु	06/02/2025 05:56
शुक्र	12/02/2025 03:59
सूर्य	13/02/2025 22:36
चंद्र	16/02/2025 21:37
मंगल	18/02/2025 23:20
राहु	24/02/2025 07:10
गुरु	01/03/2025 00:48
शनि	06/03/2025 15:44
बुध	11/03/2025 16:29

चंद्र - सूर्य - सूर्य	
11/03/2025 16:29	
20/03/2025 19:38	
सूर्य	12/03/2025 03:26
चंद्र	12/03/2025 21:42
मंगल	13/03/2025 10:29
राहु	14/03/2025 19:21
गुरु	16/03/2025 00:34
शनि	17/03/2025 11:16
बुध	18/03/2025 18:19
केतु	19/03/2025 07:06
शुक्र	20/03/2025 19:38

चंद्र - सूर्य - चंद्र	
20/03/2025 19:38	
05/04/2025 00:53	
चंद्र	22/03/2025 02:04
मंगल	22/03/2025 23:22
राहु	25/03/2025 06:09
गुरु	27/03/2025 06:51
शनि	29/03/2025 16:41
बुध	31/03/2025 20:26
केतु	01/04/2025 17:44
शुक्र	04/04/2025 06:37
सूर्य	05/04/2025 00:53

चंद्र - सूर्य - मंगल	
05/04/2025 00:53	
15/04/2025 16:33	
मंगल	05/04/2025 15:47
राहु	07/04/2025 06:08
गुरु	08/04/2025 16:14
शनि	10/04/2025 08:43
बुध	11/04/2025 20:56
केतु	12/04/2025 11:51
शुक्र	14/04/2025 06:28
सूर्य	14/04/2025 19:15
चंद्र	15/04/2025 16:33

चंद्र - सूर्य - राहु	
15/04/2025 16:33	
13/05/2025 02:00	
राहु	19/04/2025 19:10
गुरु	23/04/2025 10:50
शनि	27/04/2025 18:55
बुध	01/05/2025 16:04
केतु	03/05/2025 06:25
शुक्र	07/05/2025 19:59
सूर्य	09/05/2025 04:52
चंद्र	11/05/2025 11:39
मंगल	13/05/2025 02:00

चंद्र - सूर्य - गुरु	
13/05/2025 02:00	
06/06/2025 10:24	
गुरु	16/05/2025 07:55
शनि	20/05/2025 04:27
बुध	23/05/2025 15:14
केतु	25/05/2025 01:20
शुक्र	29/05/2025 02:44
सूर्य	30/05/2025 07:57
चंद्र	01/06/2025 08:39
मंगल	02/06/2025 18:44
राहु	06/06/2025 10:24

चंद्र - सूर्य - शनि	
06/06/2025 10:24	
05/07/2025 08:23	
शनि	11/06/2025 00:17
बुध	15/06/2025 02:36
केतु	16/06/2025 19:05
शुक्र	21/06/2025 14:44
सूर्य	23/06/2025 01:26
चंद्र	25/06/2025 11:16
मंगल	27/06/2025 03:45
राहु	01/07/2025 11:51
गुरु	05/07/2025 08:23

चंद्र - सूर्य - बुध	
05/07/2025 08:23	
31/07/2025 05:18	
बुध	09/07/2025 00:20
केतु	10/07/2025 12:34
शुक्र	14/07/2025 20:03
सूर्य	16/07/2025 03:06
चंद्र	18/07/2025 06:50
मंगल	19/07/2025 19:04
राहु	23/07/2025 16:12
गुरु	27/07/2025 02:59
शनि	31/07/2025 05:18

चंद्र - सूर्य - केतु	
31/07/2025 05:18	
10/08/2025 20:59	
केतु	31/07/2025 20:13
शुक्र	02/08/2025 14:50
सूर्य	03/08/2025 03:37
चंद्र	04/08/2025 00:55
मंगल	04/08/2025 15:50
राहु	06/08/2025 06:11
गुरु	07/08/2025 16:16
शनि	09/08/2025 08:45
बुध	10/08/2025 20:59

चंद्र - सूर्य - शुक्र	
10/08/2025 20:59	
10/09/2025 07:29	
शुक्र	15/08/2025 22:44
सूर्य	17/08/2025 11:15
चंद्र	20/08/2025 00:08
मंगल	21/08/2025 18:44
राहु	26/08/2025 08:19
गुरु	30/08/2025 09:43
शनि	04/09/2025 05:23
बुध	08/09/2025 12:52
केतु	10/09/2025 07:29

मंगल - मंगल - मंगल	
10/09/2025 07:29	
19/09/2025 00:17	
मंगल	10/09/2025 19:39
राहु	12/09/2025 02:59
गुरु	13/09/2025 06:49
शनि	14/09/2025 15:53
बुध	15/09/2025 21:27
केतु	16/09/2025 09:38
शुक्र	17/09/2025 20:26
सूर्य	18/09/2025 06:53
चंद्र	19/09/2025 00:17

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - मंगल - राहु	
19/09/2025 00:17	
11/10/2025 09:12	
राहु	22/09/2025 08:49
गुरु	25/09/2025 08:24
शनि	28/09/2025 21:25
बुध	02/10/2025 01:29
केतु	03/10/2025 08:48
शुक्र	07/10/2025 02:17
सूर्य	08/10/2025 05:08
चंद्र	10/10/2025 01:52
मंगल	11/10/2025 09:12

मंगल - मंगल - गुरु	
11/10/2025 09:12	
31/10/2025 06:27	
गुरु	14/10/2025 00:50
शनि	17/10/2025 04:24
बुध	20/10/2025 00:00
केतु	21/10/2025 03:51
शुक्र	24/10/2025 11:23
सूर्य	25/10/2025 11:15
चंद्र	27/10/2025 03:02
मंगल	28/10/2025 06:52
राहु	31/10/2025 06:27

मंगल - मंगल - शनि	
31/10/2025 06:27	
23/11/2025 21:12	
शनि	04/11/2025 00:11
बुध	07/11/2025 08:29
केतु	08/11/2025 17:32
शुक्र	12/11/2025 16:00
सूर्य	13/11/2025 20:20
चंद्र	15/11/2025 19:34
मंगल	17/11/2025 04:37
राहु	20/11/2025 17:38
गुरु	23/11/2025 21:12

मंगल - मंगल - बुध	
23/11/2025 21:12	
15/12/2025 00:17	
बुध	26/11/2025 21:02
केतु	28/11/2025 02:37
शुक्र	01/12/2025 15:08
सूर्य	02/12/2025 16:29
चंद्र	04/12/2025 10:45
मंगल	05/12/2025 16:20
राहु	08/12/2025 20:23
गुरु	11/12/2025 16:00
शनि	15/12/2025 00:17

मंगल - मंगल - केतु	
15/12/2025 00:17	
23/12/2025 17:05	
केतु	15/12/2025 12:28
शुक्र	16/12/2025 23:16
सूर्य	17/12/2025 09:43
चंद्र	18/12/2025 03:07
मंगल	18/12/2025 15:17
राहु	19/12/2025 22:37
गुरु	21/12/2025 02:27
शनि	22/12/2025 11:31
बुध	23/12/2025 17:05

मंगल - मंगल - शुक्र	
23/12/2025 17:05	
17/01/2026 13:40	
शुक्र	27/12/2025 20:31
सूर्य	29/12/2025 02:21
चंद्र	31/12/2025 04:04
मंगल	01/01/2026 14:52
राहु	05/01/2026 08:21
गुरु	08/01/2026 15:54
शनि	12/01/2026 14:21
बुध	16/01/2026 02:52
केतु	17/01/2026 13:40

मंगल - मंगल - सूर्य	
17/01/2026 13:40	
25/01/2026 00:38	
सूर्य	17/01/2026 22:37
चंद्र	18/01/2026 13:32
मंगल	18/01/2026 23:58
राहु	20/01/2026 02:49
गुरु	21/01/2026 02:41
शनि	22/01/2026 07:01
बुध	23/01/2026 08:22
केतु	23/01/2026 18:49
शुक्र	25/01/2026 00:38

मंगल - मंगल - चंद्र	
25/01/2026 00:38	
06/02/2026 10:56	
चंद्र	26/01/2026 01:30
मंगल	26/01/2026 18:54
राहु	28/01/2026 15:38
गुरु	30/01/2026 07:25
शनि	01/02/2026 06:38
बुध	03/02/2026 00:54
केतु	03/02/2026 18:18
शुक्र	05/02/2026 20:01
सूर्य	06/02/2026 10:56

मंगल - राहु - राहु	
06/02/2026 10:56	
04/04/2026 23:34	
राहु	15/02/2026 02:01
गुरु	22/02/2026 18:07
शनि	03/03/2026 20:43
बुध	12/03/2026 00:18
केतु	15/03/2026 08:50
शुक्र	24/03/2026 22:57
सूर्य	27/03/2026 19:59
चंद्र	01/04/2026 15:02
मंगल	04/04/2026 23:34

मंगल - राहु - गुरु	
04/04/2026 23:34	
26/05/2026 02:49	
गुरु	11/04/2026 19:12
शनि	19/04/2026 21:31
बुध	27/04/2026 03:22
केतु	30/04/2026 02:58
शुक्र	08/05/2026 15:30
सूर्य	11/05/2026 04:52
चंद्र	15/05/2026 11:08
मंगल	18/05/2026 10:43
राहु	26/05/2026 02:49

मंगल - राहु - शनि	
26/05/2026 02:49	
25/07/2026 20:10	
शनि	04/06/2026 17:33
बुध	13/06/2026 08:01
केतु	16/06/2026 21:02
शुक्र	26/06/2026 23:55
सूर्य	30/06/2026 00:47
चंद्र	05/07/2026 02:14
मंगल	08/07/2026 15:15
राहु	17/07/2026 17:51
गुरु	25/07/2026 20:10

मंगल - राहु - बुध	
25/07/2026 20:10	
18/09/2026 04:06	
बुध	02/08/2026 12:53
केतु	05/08/2026 16:57
शुक्र	14/08/2026 18:16
सूर्य	17/08/2026 11:28
चंद्र	22/08/2026 00:08
मंगल	25/08/2026 04:12
राहु	02/09/2026 07:47
गुरु	09/09/2026 13:39
शनि	18/09/2026 04:06

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - केतु	
18/09/2026 04:06	
10/10/2026 13:01	
केतु	19/09/2026 11:25
शुक्र	23/09/2026 04:54
सूर्य	24/09/2026 07:45
चंद्र	26/09/2026 04:30
मंगल	27/09/2026 11:49
राहु	30/09/2026 20:21
गुरु	03/10/2026 19:57
शनि	07/10/2026 08:57
बुध	10/10/2026 13:01

मंगल - राहु - शुक्र	
10/10/2026 13:01	
13/12/2026 11:04	
शुक्र	21/10/2026 04:42
सूर्य	24/10/2026 09:24
चंद्र	29/10/2026 17:14
मंगल	02/11/2026 10:43
राहु	12/11/2026 00:50
गुरु	20/11/2026 13:22
शनि	30/11/2026 16:16
बुध	09/12/2026 17:35
केतु	13/12/2026 11:04

मंगल - राहु - सूर्य	
13/12/2026 11:04	
01/01/2027 15:17	
सूर्य	14/12/2026 10:05
चंद्र	16/12/2026 00:26
मंगल	17/12/2026 03:17
राहु	20/12/2026 00:19
गुरु	22/12/2026 13:40
शनि	25/12/2026 14:32
बुध	28/12/2026 07:44
केतु	29/12/2026 10:35
शुक्र	01/01/2027 15:17

मंगल - राहु - चंद्र	
01/01/2027 15:17	
02/02/2027 14:19	
चंद्र	04/01/2027 07:12
मंगल	06/01/2027 03:57
राहु	10/01/2027 23:00
गुरु	15/01/2027 05:16
शनि	20/01/2027 06:43
बुध	24/01/2027 19:23
केतु	26/01/2027 16:07
शुक्र	31/01/2027 23:57
सूर्य	02/02/2027 14:19

मंगल - राहु - मंगल	
02/02/2027 14:19	
24/02/2027 23:14	
मंगल	03/02/2027 21:38
राहु	07/02/2027 06:10
गुरु	10/02/2027 05:45
शनि	13/02/2027 18:46
बुध	16/02/2027 22:50
केतु	18/02/2027 06:09
शुक्र	21/02/2027 23:38
सूर्य	23/02/2027 02:29
चंद्र	24/02/2027 23:14

मंगल - गुरु - गुरु	
24/02/2027 23:14	
11/04/2027 10:06	
गुरु	03/03/2027 00:41
शनि	10/03/2027 05:24
बुध	16/03/2027 15:56
केतु	19/03/2027 07:35
शुक्र	26/03/2027 21:23
सूर्य	29/03/2027 03:56
चंद्र	01/04/2027 22:50
मंगल	04/04/2027 14:28
राहु	11/04/2027 10:06

मंगल - गुरु - शनि	
11/04/2027 10:06	
04/06/2027 09:32	
शनि	19/04/2027 23:13
बुध	27/04/2027 14:44
केतु	30/04/2027 18:18
शुक्र	09/05/2027 18:12
सूर्य	12/05/2027 10:58
चंद्र	16/05/2027 22:55
मंगल	20/05/2027 02:29
राहु	28/05/2027 04:48
गुरु	04/06/2027 09:32

मंगल - गुरु - बुध	
04/06/2027 09:32	
22/07/2027 16:35	
बुध	11/06/2027 05:44
केतु	14/06/2027 01:20
शुक्र	22/06/2027 02:31
सूर्य	24/06/2027 12:28
चंद्र	28/06/2027 13:03
मंगल	01/07/2027 08:40
राहु	08/07/2027 14:32
गुरु	15/07/2027 01:04
शनि	22/07/2027 16:35

मंगल - गुरु - केतु	
22/07/2027 16:35	
11/08/2027 13:51	
केतु	23/07/2027 20:26
शुक्र	27/07/2027 03:58
सूर्य	28/07/2027 03:50
चंद्र	29/07/2027 19:36
मंगल	30/07/2027 23:27
राहु	02/08/2027 23:02
गुरु	05/08/2027 14:40
शनि	08/08/2027 18:14
बुध	11/08/2027 13:51

मंगल - गुरु - शुक्र	
11/08/2027 13:51	
07/10/2027 09:27	
शुक्र	21/08/2027 01:07
सूर्य	23/08/2027 21:18
चंद्र	28/08/2027 14:56
मंगल	31/08/2027 22:28
राहु	09/09/2027 11:01
गुरु	17/09/2027 00:49
शनि	26/09/2027 00:44
बुध	04/10/2027 01:54
केतु	07/10/2027 09:27

मंगल - गुरु - सूर्य	
07/10/2027 09:27	
24/10/2027 10:32	
सूर्य	08/10/2027 05:54
चंद्र	09/10/2027 15:59
मंगल	10/10/2027 15:51
राहु	13/10/2027 05:13
गुरु	15/10/2027 11:46
शनि	18/10/2027 04:32
बुध	20/10/2027 14:29
केतु	21/10/2027 14:21
शुक्र	24/10/2027 10:32

मंगल - गुरु - चंद्र	
24/10/2027 10:32	
21/11/2027 20:20	
चंद्र	26/10/2027 19:21
मंगल	28/10/2027 11:07
राहु	01/11/2027 17:23
गुरु	05/11/2027 12:17
शनि	10/11/2027 00:15
बुध	14/11/2027 00:50
केतु	15/11/2027 16:36
शुक्र	20/11/2027 10:14
सूर्य	21/11/2027 20:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - गुरु - मंगल	
21/11/2027 20:20	
11/12/2027 17:35	
मंगल	23/11/2027 00:10
राहु	25/11/2027 23:45
गुरु	28/11/2027 15:23
शनि	01/12/2027 18:57
बुध	04/12/2027 14:34
केतु	05/12/2027 18:24
शुक्र	09/12/2027 01:57
सूर्य	10/12/2027 01:49
चंद्र	11/12/2027 17:35

मंगल - गुरु - राहु	
11/12/2027 17:35	
31/01/2028 20:50	
राहु	19/12/2027 09:40
गुरु	26/12/2027 05:18
शनि	03/01/2028 07:37
बुध	10/01/2028 13:29
केतु	13/01/2028 13:04
शुक्र	22/01/2028 01:36
सूर्य	24/01/2028 14:58
चंद्र	28/01/2028 21:14
मंगल	31/01/2028 20:50

मंगल - शनि - शनि	
31/01/2028 20:50	
04/04/2028 23:08	
शनि	11/02/2028 00:24
बुध	20/02/2028 02:19
केतु	23/02/2028 20:03
शुक्र	05/03/2028 12:26
सूर्य	08/03/2028 17:21
चंद्र	14/03/2028 01:33
मंगल	17/03/2028 19:17
राहु	27/03/2028 10:02
गुरु	04/04/2028 23:08

मंगल - शनि - बुध	
04/04/2028 23:08	
01/06/2028 07:31	
बुध	13/04/2028 02:07
केतु	16/04/2028 10:25
शुक्र	25/04/2028 23:49
सूर्य	28/04/2028 20:38
चंद्र	03/05/2028 15:20
मंगल	06/05/2028 23:37
राहु	15/05/2028 14:05
गुरु	23/05/2028 05:36
शनि	01/06/2028 07:31

मंगल - शनि - केतु	
01/06/2028 07:31	
24/06/2028 22:16	
केतु	02/06/2028 16:35
शुक्र	06/06/2028 15:02
सूर्य	07/06/2028 19:23
चंद्र	09/06/2028 18:36
मंगल	11/06/2028 03:40
राहु	14/06/2028 16:41
गुरु	17/06/2028 20:15
शनि	21/06/2028 13:59
बुध	24/06/2028 22:16

मंगल - शनि - शुक्र	
24/06/2028 22:16	
31/08/2028 09:33	
शुक्र	06/07/2028 04:09
सूर्य	09/07/2028 13:07
चंद्र	15/07/2028 04:03
मंगल	19/07/2028 02:30
राहु	29/07/2028 05:24
गुरु	07/08/2028 05:18
शनि	17/08/2028 21:41
बुध	27/08/2028 11:05
केतु	31/08/2028 09:33

मंगल - शनि - सूर्य	
31/08/2028 09:33	
20/09/2028 15:19	
सूर्य	01/09/2028 09:50
चंद्र	03/09/2028 02:19
मंगल	04/09/2028 06:39
राहु	07/09/2028 07:31
गुरु	10/09/2028 00:17
शनि	13/09/2028 05:12
बुध	16/09/2028 02:01
केतु	17/09/2028 06:22
शुक्र	20/09/2028 15:19

मंगल - शनि - चंद्र	
20/09/2028 15:19	
24/10/2028 08:58	
चंद्र	23/09/2028 10:48
मंगल	25/09/2028 10:01
राहु	30/09/2028 11:28
गुरु	04/10/2028 23:25
शनि	10/10/2028 07:37
बुध	15/10/2028 02:19
केतु	17/10/2028 01:32
शुक्र	22/10/2028 16:29
सूर्य	24/10/2028 08:58

मंगल - शनि - मंगल	
24/10/2028 08:58	
16/11/2028 23:43	
मंगल	25/10/2028 18:01
राहु	29/10/2028 07:02
गुरु	01/11/2028 10:36
शनि	05/11/2028 04:20
बुध	08/11/2028 12:37
केतु	09/11/2028 21:41
शुक्र	13/11/2028 20:09
सूर्य	15/11/2028 00:29
चंद्र	16/11/2028 23:43

मंगल - शनि - राहु	
16/11/2028 23:43	
16/01/2029 17:03	
राहु	26/11/2028 02:19
गुरु	04/12/2028 04:37
शनि	13/12/2028 19:22
बुध	22/12/2028 09:50
केतु	25/12/2028 22:50
शुक्र	05/01/2029 01:44
सूर्य	08/01/2029 02:36
चंद्र	13/01/2029 04:03
मंगल	16/01/2029 17:03

मंगल - शनि - गुरु	
16/01/2029 17:03	
11/03/2029 16:29	
गुरु	23/01/2029 21:47
शनि	01/02/2029 10:53
बुध	09/02/2029 02:24
केतु	12/02/2029 05:58
शुक्र	21/02/2029 05:52
सूर्य	23/02/2029 22:39
चंद्र	28/02/2029 10:36
मंगल	03/03/2029 14:10
राहु	11/03/2029 16:29

मंगल - बुध - बुध	
11/03/2029 16:29	
01/05/2029 23:59	
बुध	18/03/2029 22:56
केतु	21/03/2029 22:47
शुक्र	30/03/2029 12:02
सूर्य	02/04/2029 01:36
चंद्र	06/04/2029 08:14
मंगल	09/04/2029 08:04
राहु	17/04/2029 00:47
गुरु	23/04/2029 20:59
शनि	01/05/2029 23:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - शुक्र - बुध - शनि		चंद्र - शुक्र - केतु - केतु		चंद्र - शुक्र - केतु - शुक्र		चंद्र - शुक्र - केतु - सूर्य	
21/01/2025 12:31		**04/02/2025 04:14**		**06/02/2025 05:56**		**12/02/2025 03:59**	
04/02/2025 04:14		**06/02/2025 05:56**		**12/02/2025 03:59**		**13/02/2025 22:36**	
शनि	23/01/2025 16:24	केतु	04/02/2025 07:08	शुक्र	07/02/2025 05:37	सूर्य	12/02/2025 06:07
बुध	25/01/2025 14:50	शुक्र	04/02/2025 15:25	सूर्य	07/02/2025 12:43	चंद्र	12/02/2025 09:40
केतु	26/01/2025 09:57	सूर्य	04/02/2025 17:54	चंद्र	08/02/2025 00:33	मंगल	12/02/2025 12:09
शुक्र	28/01/2025 16:34	चंद्र	04/02/2025 22:02	मंगल	08/02/2025 08:50	राहु	12/02/2025 18:32
सूर्य	29/01/2025 08:57	मंगल	05/02/2025 00:56	राहु	09/02/2025 06:09	गुरु	13/02/2025 00:13
चंद्र	30/01/2025 12:15	राहु	05/02/2025 08:24	गुरु	10/02/2025 01:05	शनि	13/02/2025 06:58
मंगल	31/01/2025 07:22	गुरु	05/02/2025 15:02	शनि	10/02/2025 23:34	बुध	13/02/2025 13:00
राहु	02/02/2025 08:32	शनि	05/02/2025 22:54	बुध	11/02/2025 19:42	केतु	13/02/2025 15:30
गुरु	04/02/2025 04:14	बुध	06/02/2025 05:56	केतु	12/02/2025 03:59	शुक्र	13/02/2025 22:36

चंद्र - शुक्र - केतु - चंद्र		चंद्र - शुक्र - केतु - मंगल		चंद्र - शुक्र - केतु - राहु		चंद्र - शुक्र - केतु - गुरु	
13/02/2025 22:36		**16/02/2025 21:37**		**18/02/2025 23:20**		**24/02/2025 07:10**	
16/02/2025 21:37		**18/02/2025 23:20**		**24/02/2025 07:10**		**01/03/2025 00:48**	
चंद्र	14/02/2025 04:31	मंगल	17/02/2025 00:31	राहु	19/02/2025 18:30	गुरु	24/02/2025 22:19
मंगल	14/02/2025 08:39	राहु	17/02/2025 07:58	गुरु	20/02/2025 11:33	शनि	25/02/2025 16:19
राहु	14/02/2025 19:19	गुरु	17/02/2025 14:36	शनि	21/02/2025 07:47	बुध	26/02/2025 08:25
गुरु	15/02/2025 04:47	शनि	17/02/2025 22:28	बुध	22/02/2025 01:54	केतु	26/02/2025 15:02
शनि	15/02/2025 16:01	बुध	18/02/2025 05:31	केतु	22/02/2025 09:22	शुक्र	27/02/2025 09:59
बुध	16/02/2025 02:05	केतु	18/02/2025 08:25	शुक्र	23/02/2025 06:40	सूर्य	27/02/2025 15:39
केतु	16/02/2025 06:14	शुक्र	18/02/2025 16:42	सूर्य	23/02/2025 13:03	चंद्र	28/02/2025 01:08
शुक्र	16/02/2025 18:04	सूर्य	18/02/2025 19:11	चंद्र	23/02/2025 23:43	मंगल	28/02/2025 07:45
सूर्य	16/02/2025 21:37	चंद्र	18/02/2025 23:20	मंगल	24/02/2025 07:10	राहु	01/03/2025 00:48

चंद्र - शुक्र - केतु - शनि		चंद्र - शुक्र - केतु - बुध		चंद्र - सूर्य - सूर्य - सूर्य		चंद्र - सूर्य - सूर्य - चंद्र	
01/03/2025 00:48		**06/03/2025 15:44**		**11/03/2025 16:29**		**12/03/2025 03:26**	
06/03/2025 15:44		**11/03/2025 16:29**		**12/03/2025 03:26**		**12/03/2025 21:42**	
शनि	01/03/2025 22:10	बुध	07/03/2025 08:51	सूर्य	11/03/2025 17:01	चंद्र	12/03/2025 04:57
बुध	02/03/2025 17:17	केतु	07/03/2025 15:53	चंद्र	11/03/2025 17:56	मंगल	12/03/2025 06:01
केतु	03/03/2025 01:09	शुक्र	08/03/2025 12:01	मंगल	11/03/2025 18:35	राहु	12/03/2025 08:46
शुक्र	03/03/2025 23:39	सूर्य	08/03/2025 18:03	राहु	11/03/2025 20:13	गुरु	12/03/2025 11:12
सूर्य	04/03/2025 06:23	चंद्र	09/03/2025 04:06	गुरु	11/03/2025 21:41	शनि	12/03/2025 14:05
चंद्र	04/03/2025 17:38	मंगल	09/03/2025 11:09	शनि	11/03/2025 23:25	बुध	12/03/2025 16:40
मंगल	05/03/2025 01:30	राहु	10/03/2025 05:16	बुध	12/03/2025 00:58	केतु	12/03/2025 17:44
राहु	05/03/2025 21:45	गुरु	10/03/2025 21:22	केतु	12/03/2025 01:36	शुक्र	12/03/2025 20:47
गुरु	06/03/2025 15:44	शनि	11/03/2025 16:29	शुक्र	12/03/2025 03:26	सूर्य	12/03/2025 21:42

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - सूर्य - सूर्य - मंगल	
12/03/2025 21:42	
13/03/2025 10:29	
मंगल	12/03/2025 22:26
राहु	13/03/2025 00:22
गुरु	13/03/2025 02:04
शनि	13/03/2025 04:05
बुध	13/03/2025 05:54
केतु	13/03/2025 06:39
शुक्र	13/03/2025 08:47
सूर्य	13/03/2025 09:25
चंद्र	13/03/2025 10:29

चंद्र - सूर्य - सूर्य - राहु	
13/03/2025 10:29	
14/03/2025 19:21	
राहु	13/03/2025 15:25
गुरु	13/03/2025 19:48
शनि	14/03/2025 01:00
बुध	14/03/2025 05:39
केतु	14/03/2025 07:34
शुक्र	14/03/2025 13:03
सूर्य	14/03/2025 14:42
चंद्र	14/03/2025 17:26
मंगल	14/03/2025 19:21

चंद्र - सूर्य - सूर्य - गुरु	
14/03/2025 19:21	
16/03/2025 00:34	
गुरु	14/03/2025 23:15
शनि	15/03/2025 03:52
बुध	15/03/2025 08:01
केतु	15/03/2025 09:43
शुक्र	15/03/2025 14:35
सूर्य	15/03/2025 16:03
चंद्र	15/03/2025 18:29
मंगल	15/03/2025 20:11
राहु	16/03/2025 00:34

चंद्र - सूर्य - सूर्य - शनि	
16/03/2025 00:34	
17/03/2025 11:16	
शनि	16/03/2025 06:04
बुध	16/03/2025 10:59
केतु	16/03/2025 13:00
शुक्र	16/03/2025 18:47
सूर्य	16/03/2025 20:31
चंद्र	16/03/2025 23:25
मंगल	17/03/2025 01:26
राहु	17/03/2025 06:39
गुरु	17/03/2025 11:16

चंद्र - सूर्य - सूर्य - बुध	
17/03/2025 11:16	
18/03/2025 18:19	
बुध	17/03/2025 15:40
केतु	17/03/2025 17:29
शुक्र	17/03/2025 22:39
सूर्य	18/03/2025 00:12
चंद्र	18/03/2025 02:48
मंगल	18/03/2025 04:36
राहु	18/03/2025 09:16
गुरु	18/03/2025 13:24
शनि	18/03/2025 18:19

चंद्र - सूर्य - सूर्य - केतु	
18/03/2025 18:19	
19/03/2025 07:06	
केतु	18/03/2025 19:04
शुक्र	18/03/2025 21:12
सूर्य	18/03/2025 21:50
चंद्र	18/03/2025 22:54
मंगल	18/03/2025 23:39
राहु	19/03/2025 01:34
गुरु	19/03/2025 03:16
शनि	19/03/2025 05:17
बुध	19/03/2025 07:06

चंद्र - सूर्य - सूर्य - शुक्र	
19/03/2025 07:06	
20/03/2025 19:38	
शुक्र	19/03/2025 13:11
सूर्य	19/03/2025 15:01
चंद्र	19/03/2025 18:04
मंगल	19/03/2025 20:11
राहु	20/03/2025 01:40
गुरु	20/03/2025 06:32
शनि	20/03/2025 12:19
बुध	20/03/2025 17:30
केतु	20/03/2025 19:38

चंद्र - सूर्य - चंद्र - चंद्र	
20/03/2025 19:38	
22/03/2025 02:04	
चंद्र	20/03/2025 22:10
मंगल	20/03/2025 23:56
राहु	21/03/2025 04:30
गुरु	21/03/2025 08:34
शनि	21/03/2025 13:23
बुध	21/03/2025 17:42
केतु	21/03/2025 19:28
शुक्र	22/03/2025 00:32
सूर्य	22/03/2025 02:04

चंद्र - सूर्य - चंद्र - मंगल	
22/03/2025 02:04	
22/03/2025 23:22	
मंगल	22/03/2025 03:18
राहु	22/03/2025 06:30
गुरु	22/03/2025 09:21
शनि	22/03/2025 12:43
बुध	22/03/2025 15:44
केतु	22/03/2025 16:59
शुक्र	22/03/2025 20:32
सूर्य	22/03/2025 21:36
चंद्र	22/03/2025 23:22

चंद्र - सूर्य - चंद्र - राहु	
22/03/2025 23:22	
25/03/2025 06:09	
राहु	23/03/2025 07:35
गुरु	23/03/2025 14:54
शनि	23/03/2025 23:34
बुध	24/03/2025 07:20
केतु	24/03/2025 10:31
शुक्र	24/03/2025 19:39
सूर्य	24/03/2025 22:24
चंद्र	25/03/2025 02:58
मंगल	25/03/2025 06:09

चंद्र - सूर्य - चंद्र - गुरु	
25/03/2025 06:09	
27/03/2025 06:51	
गुरु	25/03/2025 12:39
शनि	25/03/2025 20:22
बुध	26/03/2025 03:16
केतु	26/03/2025 06:06
शुक्र	26/03/2025 14:13
सूर्य	26/03/2025 16:39
चंद्र	26/03/2025 20:43
मंगल	26/03/2025 23:33
राहु	27/03/2025 06:51

चंद्र - सूर्य - चंद्र - शनि	
27/03/2025 06:51	
29/03/2025 16:41	
शनि	27/03/2025 16:01
बुध	28/03/2025 00:12
केतु	28/03/2025 03:35
शुक्र	28/03/2025 13:13
सूर्य	28/03/2025 16:07
चंद्र	28/03/2025 20:56
मंगल	29/03/2025 00:18
राहु	29/03/2025 08:59
गुरु	29/03/2025 16:41

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 10 वर्ष 5 मास 17 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
15/08/1947		30/01/1958		30/01/1970		31/01/1983		30/01/1997	
30/01/1958		30/01/1970		31/01/1983		30/01/1997		31/01/2012	
सूर्य	16/02/1948	मंगल	29/04/1959	गुरु	16/07/1971	शनि	09/10/1984	केतु	09/01/1999
मंगल	06/04/1949	गुरु	01/09/1960	शनि	09/02/1973	केतु	01/08/1986	चंद्र	02/02/2001
गुरु	30/06/1950	शनि	12/02/1962	केतु	16/10/1974	चंद्र	06/07/1988	बुध	16/04/2003
शनि	28/10/1951	केतु	02/09/1963	चंद्र	31/07/1976	बुध	26/07/1990	शुक्र	13/08/2005
केतु	31/03/1953	चंद्र	28/04/1965	बुध	27/06/1978	शुक्र	26/09/1992	सूर्य	15/01/2007
चंद्र	06/10/1954	बुध	31/01/1967	शुक्र	03/07/1980	सूर्य	24/01/1994	मंगल	04/08/2008
बुध	17/05/1956	शुक्र	11/12/1968	सूर्य	26/09/1981	मंगल	07/07/1995	गुरु	10/04/2010
शुक्र	30/01/1958	सूर्य	30/01/1970	मंगल	31/01/1983	गुरु	30/01/1997	शनि	31/01/2012

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
31/01/2012		31/01/2028		30/01/2045		31/01/2063	
31/01/2028		30/01/2045		31/01/2063		00/00/0000	
चंद्र	16/04/2014	बुध	29/07/2030	शुक्र	16/11/2047	सूर्य	15/08/2063
बुध	19/08/2016	शुक्र	18/03/2033	सूर्य	01/08/2049		00/00/0000
शुक्र	12/02/2019	सूर्य	28/10/2034	मंगल	12/06/2051		00/00/0000
सूर्य	19/08/2020	मंगल	31/07/2036	गुरु	18/06/2053		00/00/0000
मंगल	16/04/2022	गुरु	27/06/2038	शनि	20/08/2055		00/00/0000
गुरु	31/01/2024	शनि	16/07/2040	केतु	17/12/2057		00/00/0000
शनि	05/01/2026	केतु	27/09/2042	चंद्र	11/06/2060		00/00/0000
केतु	31/01/2028	चंद्र	30/01/2045	बुध	31/01/2063		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य	
15/08/1947	
16/02/1948	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	15/08/1947
केतु	01/09/1947
चंद्र	24/10/1947
बुध	18/12/1947
शुक्र	16/02/1948

सूर्य - मंगल	
16/02/1948	
06/04/1949	
मंगल	30/03/1948
गुरु	15/05/1948
शनि	04/07/1948
केतु	27/08/1948
चंद्र	23/10/1948
बुध	23/12/1948
शुक्र	26/02/1949
सूर्य	06/04/1949

सूर्य - गुरु	
06/04/1949	
30/06/1950	
गुरु	27/05/1949
शनि	20/07/1949
केतु	16/09/1949
चंद्र	17/11/1949
बुध	22/01/1950
शुक्र	02/04/1950
सूर्य	15/05/1950
मंगल	30/06/1950

सूर्य - शनि	
30/06/1950	
28/10/1951	
शनि	28/08/1950
केतु	30/10/1950
चंद्र	05/01/1951
बुध	17/03/1951
शुक्र	31/05/1951
सूर्य	16/07/1951
मंगल	04/09/1951
गुरु	28/10/1951

सूर्य - केतु	
28/10/1951	
31/03/1953	
केतु	04/01/1952
चंद्र	15/03/1952
बुध	30/05/1952
शुक्र	19/08/1952
सूर्य	07/10/1952
मंगल	30/11/1952
गुरु	27/01/1953
शनि	31/03/1953

सूर्य - चंद्र	
31/03/1953	
06/10/1954	
चंद्र	15/06/1953
बुध	05/09/1953
शुक्र	30/11/1953
सूर्य	21/01/1954
मंगल	19/03/1954
गुरु	21/05/1954
शनि	26/07/1954
केतु	06/10/1954

सूर्य - बुध	
06/10/1954	
17/05/1956	
बुध	31/12/1954
शुक्र	02/04/1955
सूर्य	28/05/1955
मंगल	27/07/1955
गुरु	01/10/1955
शनि	12/12/1955
केतु	26/02/1956
चंद्र	17/05/1956

सूर्य - शुक्र	
17/05/1956	
30/01/1958	
शुक्र	22/08/1956
सूर्य	20/10/1956
मंगल	23/12/1956
गुरु	03/03/1957
शनि	17/05/1957
केतु	06/08/1957
चंद्र	31/10/1957
बुध	30/01/1958

मंगल - मंगल	
30/01/1958	
29/04/1959	
मंगल	18/03/1958
गुरु	08/05/1958
शनि	02/07/1958
केतु	29/08/1958
चंद्र	31/10/1958
बुध	05/01/1959
शुक्र	17/03/1959
सूर्य	29/04/1959

मंगल - गुरु	
29/04/1959	
01/09/1960	
गुरु	23/06/1959
शनि	21/08/1959
केतु	24/10/1959
चंद्र	30/12/1959
बुध	11/03/1960
शुक्र	27/05/1960
सूर्य	12/07/1960
मंगल	01/09/1960

मंगल - शनि	
01/09/1960	
12/02/1962	
शनि	04/11/1960
केतु	11/01/1961
चंद्र	25/03/1961
बुध	11/06/1961
शुक्र	01/09/1961
सूर्य	21/10/1961
मंगल	15/12/1961
गुरु	12/02/1962

मंगल - केतु	
12/02/1962	
02/09/1963	
केतु	26/04/1962
चंद्र	13/07/1962
बुध	04/10/1962
शुक्र	31/12/1962
सूर्य	23/02/1963
मंगल	23/04/1963
गुरु	25/06/1963
शनि	02/09/1963

मंगल - चंद्र	
02/09/1963	
28/04/1965	
चंद्र	24/11/1963
बुध	21/02/1964
शुक्र	24/05/1964
सूर्य	21/07/1964
मंगल	21/09/1964
गुरु	28/11/1964
शनि	09/02/1965
केतु	28/04/1965

मंगल - बुध	
28/04/1965	
31/01/1967	
बुध	31/07/1965
शुक्र	08/11/1965
सूर्य	08/01/1966
मंगल	15/03/1966
गुरु	26/05/1966
शनि	12/08/1966
केतु	03/11/1966
चंद्र	31/01/1967

मंगल - शुक्र	
31/01/1967	
11/12/1968	
शुक्र	16/05/1967
सूर्य	20/07/1967
मंगल	28/09/1967
गुरु	13/12/1967
शनि	04/03/1968
केतु	31/05/1968
चंद्र	02/09/1968
बुध	11/12/1968

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य	
11/12/1968	
30/01/1970	
सूर्य	19/01/1969
मंगल	03/03/1969
गुरु	19/04/1969
शनि	08/06/1969
केतु	01/08/1969
चंद्र	27/09/1969
बुध	27/11/1969
शुक्र	30/01/1970

गुरु - गुरु	
30/01/1970	
16/07/1971	
गुरु	31/03/1970
शनि	03/06/1970
केतु	11/08/1970
चंद्र	23/10/1970
बुध	09/01/1971
शुक्र	02/04/1971
सूर्य	22/05/1971
मंगल	16/07/1971

गुरु - शनि	
16/07/1971	
09/02/1973	
शनि	24/09/1971
केतु	07/12/1971
चंद्र	24/02/1972
बुध	18/05/1972
शुक्र	15/08/1972
सूर्य	08/10/1972
मंगल	06/12/1972
गुरु	09/02/1973

गुरु - केतु	
09/02/1973	
16/10/1974	
केतु	29/04/1973
चंद्र	23/07/1973
बुध	21/10/1973
शुक्र	24/01/1974
सूर्य	23/03/1974
मंगल	26/05/1974
गुरु	02/08/1974
शनि	16/10/1974

गुरु - चंद्र	
16/10/1974	
31/07/1976	
चंद्र	14/01/1975
बुध	20/04/1975
शुक्र	30/07/1975
सूर्य	01/10/1975
मंगल	07/12/1975
गुरु	19/02/1976
शनि	08/05/1976
केतु	31/07/1976

गुरु - बुध	
31/07/1976	
27/06/1978	
बुध	10/11/1976
शुक्र	26/02/1977
सूर्य	03/05/1977
मंगल	14/07/1977
गुरु	30/09/1977
शनि	23/12/1977
केतु	23/03/1978
चंद्र	27/06/1978

गुरु - शुक्र	
27/06/1978	
03/07/1980	
शुक्र	20/10/1978
सूर्य	29/12/1978
मंगल	15/03/1979
गुरु	05/06/1979
शनि	02/09/1979
केतु	06/12/1979
चंद्र	17/03/1980
बुध	03/07/1980

गुरु - सूर्य	
03/07/1980	
26/09/1981	
सूर्य	15/08/1980
मंगल	30/09/1980
गुरु	20/11/1980
शनि	13/01/1981
केतु	12/03/1981
चंद्र	14/05/1981
बुध	18/07/1981
शुक्र	26/09/1981

गुरु - मंगल	
26/09/1981	
31/01/1983	
मंगल	16/11/1981
गुरु	10/01/1982
शनि	11/03/1982
केतु	13/05/1982
चंद्र	20/07/1982
बुध	30/09/1982
शुक्र	15/12/1982
सूर्य	31/01/1983

शनि - शनि	
31/01/1983	
09/10/1984	
शनि	15/04/1983
केतु	04/07/1983
चंद्र	27/09/1983
बुध	26/12/1983
शुक्र	31/03/1984
सूर्य	29/05/1984
मंगल	01/08/1984
गुरु	09/10/1984

शनि - केतु	
09/10/1984	
01/08/1986	
केतु	02/01/1985
चंद्र	03/04/1985
बुध	09/07/1985
शुक्र	20/10/1985
सूर्य	22/12/1985
मंगल	28/02/1986
गुरु	13/05/1986
शनि	01/08/1986

शनि - चंद्र	
01/08/1986	
06/07/1988	
चंद्र	06/11/1986
बुध	18/02/1987
शुक्र	07/06/1987
सूर्य	13/08/1987
मंगल	25/10/1987
गुरु	12/01/1988
शनि	06/04/1988
केतु	06/07/1988

शनि - बुध	
06/07/1988	
26/07/1990	
बुध	24/10/1988
शुक्र	17/02/1989
सूर्य	29/04/1989
मंगल	16/07/1989
गुरु	08/10/1989
शनि	06/01/1990
केतु	13/04/1990
चंद्र	26/07/1990

शनि - शुक्र	
26/07/1990	
26/09/1992	
शुक्र	26/11/1990
सूर्य	09/02/1991
मंगल	02/05/1991
गुरु	30/07/1991
शनि	03/11/1991
केतु	13/02/1992
चंद्र	02/06/1992
बुध	26/09/1992

शनि - सूर्य	
26/09/1992	
24/01/1994	
सूर्य	11/11/1992
मंगल	31/12/1992
गुरु	24/02/1993
शनि	23/04/1993
केतु	25/06/1993
चंद्र	31/08/1993
बुध	10/11/1993
शुक्र	24/01/1994

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
24/01/1994		**07/07/1995**		**30/01/1997**		**09/01/1999**		**02/02/2001**	
07/07/1995		**30/01/1997**		**09/01/1999**		**02/02/2001**		**16/04/2003**	
मंगल	20/03/1994	गुरु	09/09/1995	केतु	02/05/1997	चंद्र	23/04/1999	बुध	31/05/2001
गुरु	18/05/1994	शनि	17/11/1995	चंद्र	07/08/1997	बुध	12/08/1999	शुक्र	02/10/2001
शनि	21/07/1994	केतु	30/01/1996	बुध	19/11/1997	शुक्र	07/12/1999	सूर्य	18/12/2001
केतु	27/09/1994	चंद्र	19/04/1996	शुक्र	09/03/1998	सूर्य	16/02/2000	मंगल	11/03/2002
चंद्र	09/12/1994	बुध	12/07/1996	सूर्य	15/05/1998	मंगल	05/05/2000	गुरु	09/06/2002
बुध	25/02/1995	शुक्र	08/10/1996	मंगल	28/07/1998	गुरु	28/07/2000	शनि	14/09/2002
शुक्र	18/05/1995	सूर्य	02/12/1996	गुरु	15/10/1998	शनि	27/10/2000	केतु	26/12/2002
सूर्य	07/07/1995	मंगल	30/01/1997	शनि	09/01/1999	केतु	02/02/2001	चंद्र	16/04/2003

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
16/04/2003		**13/08/2005**		**15/01/2007**		**04/08/2008**		**10/04/2010**	
13/08/2005		**15/01/2007**		**04/08/2008**		**10/04/2010**		**31/01/2012**	
शुक्र	26/08/2003	सूर्य	02/10/2005	मंगल	14/03/2007	गुरु	11/10/2008	शनि	28/06/2010
सूर्य	15/11/2003	मंगल	24/11/2005	गुरु	17/05/2007	शनि	24/12/2008	केतु	22/09/2010
मंगल	11/02/2004	गुरु	22/01/2006	शनि	24/07/2007	केतु	14/03/2009	चंद्र	22/12/2010
गुरु	16/05/2004	शनि	25/03/2006	केतु	06/10/2007	चंद्र	07/06/2009	बुध	29/03/2011
शनि	26/08/2004	केतु	31/05/2006	चंद्र	23/12/2007	बुध	05/09/2009	शुक्र	10/07/2011
केतु	14/12/2004	चंद्र	11/08/2006	बुध	15/03/2008	शुक्र	09/12/2009	सूर्य	10/09/2011
चंद्र	11/04/2005	बुध	26/10/2006	शुक्र	11/06/2008	सूर्य	05/02/2010	मंगल	18/11/2011
बुध	13/08/2005	शुक्र	15/01/2007	सूर्य	04/08/2008	मंगल	10/04/2010	गुरु	31/01/2012

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
31/01/2012		**16/04/2014**		**19/08/2016**		**12/02/2019**		**19/08/2020**	
16/04/2014		**19/08/2016**		**12/02/2019**		**19/08/2020**		**16/04/2022**	
चंद्र	21/05/2012	बुध	19/08/2014	शुक्र	07/01/2017	सूर्य	06/04/2019	मंगल	21/10/2020
बुध	16/09/2012	शुक्र	30/12/2014	सूर्य	03/04/2017	मंगल	02/06/2019	गुरु	28/12/2020
शुक्र	19/01/2013	सूर्य	22/03/2015	मंगल	06/07/2017	गुरु	03/08/2019	शनि	11/03/2021
सूर्य	06/04/2013	मंगल	18/06/2015	गुरु	15/10/2017	शनि	09/10/2019	केतु	28/05/2021
मंगल	28/06/2013	गुरु	22/09/2015	शनि	02/02/2018	केतु	20/12/2019	चंद्र	19/08/2021
गुरु	26/09/2013	शनि	03/01/2016	केतु	30/05/2018	चंद्र	05/03/2020	बुध	16/11/2021
शनि	02/01/2014	केतु	23/04/2016	चंद्र	02/10/2018	बुध	25/05/2020	शुक्र	18/02/2022
केतु	16/04/2014	चंद्र	19/08/2016	बुध	12/02/2019	शुक्र	19/08/2020	सूर्य	16/04/2022

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
16/04/2022		31/01/2024		05/01/2026		31/01/2028		29/07/2030	
31/01/2024		05/01/2026		31/01/2028		29/07/2030		18/03/2033	
गुरु	28/06/2022	शनि	25/04/2024	केतु	13/04/2026	बुध	12/06/2028	शुक्र	25/12/2030
शनि	15/09/2022	केतु	25/07/2024	चंद्र	26/07/2026	शुक्र	31/10/2028	सूर्य	27/03/2031
केतु	09/12/2022	चंद्र	30/10/2024	बुध	14/11/2026	सूर्य	26/01/2029	मंगल	04/07/2031
चंद्र	09/03/2023	बुध	11/02/2025	शुक्र	11/03/2027	मंगल	30/04/2029	गुरु	20/10/2031
बुध	13/06/2023	शुक्र	31/05/2025	सूर्य	22/05/2027	गुरु	10/08/2029	शनि	14/02/2032
शुक्र	23/09/2023	सूर्य	06/08/2025	मंगल	08/08/2027	शनि	28/11/2029	केतु	17/06/2032
सूर्य	24/11/2023	मंगल	18/10/2025	गुरु	01/11/2027	केतु	25/03/2030	चंद्र	28/10/2032
मंगल	31/01/2024	गुरु	05/01/2026	शनि	31/01/2028	चंद्र	29/07/2030	बुध	18/03/2033

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
18/03/2033		28/10/2034		31/07/2036		27/06/2038		16/07/2040	
28/10/2034		31/07/2036		27/06/2038		16/07/2040		27/09/2042	
सूर्य	13/05/2033	मंगल	03/01/2035	गुरु	17/10/2036	शनि	26/09/2038	केतु	28/10/2040
मंगल	13/07/2033	गुरु	16/03/2035	शनि	09/01/2037	केतु	01/01/2039	चंद्र	15/02/2041
गुरु	17/09/2033	शनि	01/06/2035	केतु	09/04/2037	चंद्र	14/04/2039	बुध	13/06/2041
शनि	27/11/2033	केतु	23/08/2035	चंद्र	14/07/2037	बुध	02/08/2039	शुक्र	16/10/2041
केतु	11/02/2034	चंद्र	20/11/2035	बुध	24/10/2037	शुक्र	26/11/2039	सूर्य	31/12/2041
चंद्र	03/05/2034	बुध	22/02/2036	शुक्र	09/02/2038	सूर्य	05/02/2040	मंगल	24/03/2042
बुध	29/07/2034	शुक्र	01/06/2036	सूर्य	16/04/2038	मंगल	23/04/2040	गुरु	22/06/2042
शुक्र	28/10/2034	सूर्य	31/07/2036	मंगल	27/06/2038	गुरु	16/07/2040	शनि	27/09/2042

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
27/09/2042		30/01/2045		16/11/2047		01/08/2049		12/06/2051	
30/01/2045		16/11/2047		01/08/2049		12/06/2051		18/06/2053	
चंद्र	23/01/2043	शुक्र	07/07/2045	सूर्य	14/01/2048	मंगल	10/10/2049	गुरु	02/09/2051
बुध	28/05/2043	सूर्य	12/10/2045	मंगल	19/03/2048	गुरु	25/12/2049	शनि	30/11/2051
शुक्र	08/10/2043	मंगल	26/01/2046	गुरु	28/05/2048	शनि	17/03/2050	केतु	05/03/2052
सूर्य	28/12/2043	गुरु	20/05/2046	शनि	11/08/2048	केतु	13/06/2050	चंद्र	14/06/2052
मंगल	26/03/2044	शनि	20/09/2046	केतु	31/10/2048	चंद्र	15/09/2050	बुध	30/09/2052
गुरु	30/06/2044	केतु	30/01/2047	चंद्र	25/01/2049	बुध	24/12/2050	शुक्र	23/01/2053
शनि	11/10/2044	चंद्र	20/06/2047	बुध	26/04/2049	शुक्र	08/04/2051	सूर्य	02/04/2053
केतु	30/01/2045	बुध	16/11/2047	शुक्र	01/08/2049	सूर्य	12/06/2051	मंगल	18/06/2053

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 12 वर्ष 0 मास 17 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
15/08/1947		01/09/1959		01/01/1971		01/09/1975		31/12/1988	
01/09/1959		01/01/1971		01/09/1975		31/12/1988		31/12/1992	
शनि	02/01/1949	बुध	10/04/1961	केतु	10/04/1971	शुक्र	21/11/1977	सूर्य	14/03/1989
बुध	20/10/1950	केतु	07/12/1961	शुक्र	19/01/1972	सूर्य	23/07/1978	चंद्र	14/07/1989
केतु	17/07/1951	शुक्र	28/10/1963	सूर्य	14/04/1972	चंद्र	01/09/1979	मंगल	07/10/1989
शुक्र	26/08/1953	सूर्य	22/05/1964	चंद्र	03/09/1972	मंगल	11/06/1980	राहु	15/05/1990
सूर्य	14/04/1954	चंद्र	02/05/1965	मंगल	11/12/1972	राहु	12/06/1982	गुरु	25/11/1990
चंद्र	05/05/1955	मंगल	30/12/1965	राहु	24/08/1973	गुरु	22/03/1984	शनि	15/07/1991
मंगल	30/01/1956	राहु	12/09/1967	गुरु	08/04/1974	शनि	02/05/1986	बुध	07/02/1992
राहु	24/12/1957	गुरु	16/03/1969	शनि	03/01/1975	बुध	22/03/1988	केतु	02/05/1992
गुरु	01/09/1959	शनि	01/01/1971	बुध	01/09/1975	केतु	31/12/1988	शुक्र	31/12/1992

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
31/12/1992		01/09/1999		02/05/2004		02/05/2016		01/01/2027	
01/09/1999		02/05/2004		02/05/2016		01/01/2027		00/00/0000	
चंद्र	22/07/1993	मंगल	10/12/1999	राहु	18/02/2006	गुरु	03/10/2017	शनि	15/08/2027
मंगल	11/12/1993	राहु	21/08/2000	गुरु	26/09/2007	शनि	12/06/2019		00/00/0000
राहु	12/12/1994	गुरु	06/04/2001	शनि	20/08/2009	बुध	15/12/2020		00/00/0000
गुरु	01/11/1995	शनि	01/01/2002	बुध	03/05/2011	केतु	30/07/2021		00/00/0000
शनि	21/11/1996	बुध	30/08/2002	केतु	13/01/2012	शुक्र	11/05/2023		00/00/0000
बुध	01/11/1997	केतु	08/12/2002	शुक्र	13/01/2014	सूर्य	22/11/2023		00/00/0000
केतु	23/03/1998	शुक्र	18/09/2003	सूर्य	20/08/2014	चंद्र	11/10/2024		00/00/0000
शुक्र	03/05/1999	सूर्य	12/12/2003	चंद्र	20/08/2015	मंगल	26/05/2025		00/00/0000
सूर्य	01/09/1999	चंद्र	02/05/2004	मंगल	02/05/2016	राहु	01/01/2027		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
15/08/1947		02/01/1949		20/10/1950		17/07/1951		26/08/1953	
02/01/1949		20/10/1950		17/07/1951		26/08/1953		14/04/1954	
	00/00/0000	बुध	05/04/1949	केतु	05/11/1950	शुक्र	22/11/1951	सूर्य	06/09/1953
	15/08/1947	केतु	13/05/1949	शुक्र	20/12/1950	सूर्य	31/12/1951	चंद्र	26/09/1953
केतु	20/09/1947	शुक्र	31/08/1949	सूर्य	02/01/1951	चंद्र	04/03/1952	मंगल	09/10/1953
शुक्र	20/01/1948	सूर्य	02/10/1949	चंद्र	25/01/1951	मंगल	18/04/1952	राहु	13/11/1953
सूर्य	26/02/1948	चंद्र	26/11/1949	मंगल	09/02/1951	राहु	12/08/1952	गुरु	14/12/1953
चंद्र	27/04/1948	मंगल	03/01/1950	राहु	22/03/1951	गुरु	22/11/1952	शनि	19/01/1954
मंगल	09/06/1948	राहु	12/04/1950	गुरु	27/04/1951	शनि	25/03/1953	बुध	21/02/1954
राहु	27/09/1948	गुरु	08/07/1950	शनि	08/06/1951	बुध	12/07/1953	केतु	07/03/1954
गुरु	02/01/1949	शनि	20/10/1950	बुध	17/07/1951	केतु	26/08/1953	शुक्र	14/04/1954

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
14/04/1954		05/05/1955		30/01/1956		24/12/1957		01/09/1959	
05/05/1955		30/01/1956		24/12/1957		01/09/1959		10/04/1961	
चंद्र	16/05/1954	मंगल	20/05/1955	राहु	13/05/1956	गुरु	16/03/1958	बुध	23/11/1959
मंगल	08/06/1954	राहु	30/06/1955	गुरु	13/08/1956	शनि	21/06/1958	केतु	28/12/1959
राहु	05/08/1954	गुरु	05/08/1955	शनि	01/12/1956	बुध	17/09/1958	शुक्र	03/04/1960
गुरु	25/09/1954	शनि	17/09/1955	बुध	09/03/1957	केतु	23/10/1958	सूर्य	03/05/1960
शनि	25/11/1954	बुध	25/10/1955	केतु	19/04/1957	शुक्र	03/02/1959	चंद्र	21/06/1960
बुध	19/01/1955	केतु	10/11/1955	शुक्र	12/08/1957	सूर्य	05/03/1959	मंगल	25/07/1960
केतु	10/02/1955	शुक्र	25/12/1955	सूर्य	16/09/1957	चंद्र	26/04/1959	राहु	21/10/1960
शुक्र	15/04/1955	सूर्य	07/01/1956	चंद्र	13/11/1957	मंगल	01/06/1959	गुरु	07/01/1961
सूर्य	05/05/1955	चंद्र	30/01/1956	मंगल	24/12/1957	राहु	01/09/1959	शनि	10/04/1961

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
10/04/1961		07/12/1961		28/10/1963		22/05/1964		02/05/1965	
07/12/1961		28/10/1963		22/05/1964		02/05/1965		30/12/1965	
केतु	24/04/1961	शुक्र	01/04/1962	सूर्य	08/11/1963	चंद्र	20/06/1964	मंगल	16/05/1965
शुक्र	03/06/1961	सूर्य	06/05/1962	चंद्र	25/11/1963	मंगल	10/07/1964	राहु	21/06/1965
सूर्य	15/06/1961	चंद्र	02/07/1962	मंगल	07/12/1963	राहु	31/08/1964	गुरु	24/07/1965
चंद्र	05/07/1961	मंगल	11/08/1962	राहु	07/01/1964	गुरु	16/10/1964	शनि	31/08/1965
मंगल	19/07/1961	राहु	23/11/1962	गुरु	04/02/1964	शनि	09/12/1964	बुध	04/10/1965
राहु	25/08/1961	गुरु	23/02/1963	शनि	07/03/1964	बुध	27/01/1965	केतु	18/10/1965
गुरु	26/09/1961	शनि	12/06/1963	बुध	06/04/1964	केतु	16/02/1965	शुक्र	27/11/1965
शनि	03/11/1961	बुध	18/09/1963	केतु	18/04/1964	शुक्र	15/04/1965	सूर्य	09/12/1965
बुध	07/12/1961	केतु	28/10/1963	शुक्र	22/05/1964	सूर्य	02/05/1965	चंद्र	30/12/1965

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु	
30/12/1965	
12/09/1967	
राहु	02/04/1966
गुरु	24/06/1966
शनि	30/09/1966
बुध	27/12/1966
केतु	01/02/1967
शुक्र	16/05/1967
सूर्य	16/06/1967
चंद्र	06/08/1967
मंगल	12/09/1967

बुध - गुरु	
12/09/1967	
16/03/1969	
गुरु	24/11/1967
शनि	20/02/1968
बुध	08/05/1968
केतु	09/06/1968
शुक्र	09/09/1968
सूर्य	06/10/1968
चंद्र	21/11/1968
मंगल	24/12/1968
राहु	16/03/1969

बुध - शनि	
16/03/1969	
01/01/1971	
शनि	28/06/1969
बुध	29/09/1969
केतु	06/11/1969
शुक्र	24/02/1970
सूर्य	28/03/1970
चंद्र	22/05/1970
मंगल	29/06/1970
राहु	05/10/1970
गुरु	01/01/1971

केतु - केतु	
01/01/1971	
10/04/1971	
केतु	07/01/1971
शुक्र	23/01/1971
सूर्य	28/01/1971
चंद्र	06/02/1971
मंगल	11/02/1971
राहु	26/02/1971
गुरु	11/03/1971
शनि	27/03/1971
बुध	10/04/1971

केतु - शुक्र	
10/04/1971	
19/01/1972	
शुक्र	28/05/1971
सूर्य	11/06/1971
चंद्र	05/07/1971
मंगल	21/07/1971
राहु	02/09/1971
गुरु	10/10/1971
शनि	24/11/1971
बुध	03/01/1972
केतु	19/01/1972

केतु - सूर्य	
19/01/1972	
14/04/1972	
सूर्य	24/01/1972
चंद्र	31/01/1972
मंगल	05/02/1972
राहु	18/02/1972
गुरु	29/02/1972
शनि	13/03/1972
बुध	25/03/1972
केतु	30/03/1972
शुक्र	14/04/1972

केतु - चंद्र	
14/04/1972	
03/09/1972	
चंद्र	25/04/1972
मंगल	04/05/1972
राहु	25/05/1972
गुरु	13/06/1972
शनि	05/07/1972
बुध	26/07/1972
केतु	03/08/1972
शुक्र	27/08/1972
सूर्य	03/09/1972

केतु - मंगल	
03/09/1972	
11/12/1972	
मंगल	08/09/1972
राहु	23/09/1972
गुरु	07/10/1972
शनि	22/10/1972
बुध	05/11/1972
केतु	11/11/1972
शुक्र	28/11/1972
सूर्य	03/12/1972
चंद्र	11/12/1972

केतु - राहु	
11/12/1972	
24/08/1973	
राहु	18/01/1973
गुरु	22/02/1973
शनि	03/04/1973
बुध	09/05/1973
केतु	24/05/1973
शुक्र	06/07/1973
सूर्य	19/07/1973
चंद्र	09/08/1973
मंगल	24/08/1973

केतु - गुरु	
24/08/1973	
08/04/1974	
गुरु	23/09/1973
शनि	29/10/1973
बुध	30/11/1973
केतु	13/12/1973
शुक्र	20/01/1974
सूर्य	01/02/1974
चंद्र	20/02/1974
मंगल	05/03/1974
राहु	08/04/1974

केतु - शनि	
08/04/1974	
03/01/1975	
शनि	21/05/1974
बुध	28/06/1974
केतु	14/07/1974
शुक्र	28/08/1974
सूर्य	10/09/1974
चंद्र	03/10/1974
मंगल	18/10/1974
राहु	28/11/1974
गुरु	03/01/1975

केतु - बुध	
03/01/1975	
01/09/1975	
बुध	06/02/1975
केतु	20/02/1975
शुक्र	01/04/1975
सूर्य	14/04/1975
चंद्र	04/05/1975
मंगल	18/05/1975
राहु	23/06/1975
गुरु	25/07/1975
शनि	01/09/1975

शुक्र - शुक्र	
01/09/1975	
21/11/1977	
शुक्र	15/01/1976
सूर्य	24/02/1976
चंद्र	02/05/1976
मंगल	18/06/1976
राहु	18/10/1976
गुरु	03/02/1977
शनि	12/06/1977
बुध	05/10/1977
केतु	21/11/1977

शुक्र - सूर्य	
21/11/1977	
23/07/1978	
सूर्य	03/12/1977
चंद्र	24/12/1977
मंगल	07/01/1978
राहु	12/02/1978
गुरु	17/03/1978
शनि	24/04/1978
बुध	29/05/1978
केतु	12/06/1978
शुक्र	23/07/1978

शुक्र - चंद्र	
23/07/1978	
01/09/1979	
चंद्र	25/08/1978
मंगल	18/09/1978
राहु	18/11/1978
गुरु	11/01/1979
शनि	16/03/1979
बुध	13/05/1979
केतु	05/06/1979
शुक्र	12/08/1979
सूर्य	01/09/1979

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल	
01/09/1979	
11/06/1980	
मंगल	18/09/1979
राहु	31/10/1979
गुरु	07/12/1979
शनि	21/01/1980
बुध	02/03/1980
केतु	18/03/1980
शुक्र	05/05/1980
सूर्य	19/05/1980
चंद्र	11/06/1980

शुक्र - राहु	
11/06/1980	
12/06/1982	
राहु	29/09/1980
गुरु	04/01/1981
शनि	30/04/1981
बुध	12/08/1981
केतु	23/09/1981
शुक्र	23/01/1982
सूर्य	28/02/1982
चंद्र	30/04/1982
मंगल	12/06/1982

शुक्र - गुरु	
12/06/1982	
22/03/1984	
गुरु	07/09/1982
शनि	18/12/1982
बुध	20/03/1983
केतु	27/04/1983
शुक्र	13/08/1983
सूर्य	15/09/1983
चंद्र	08/11/1983
मंगल	16/12/1983
राहु	22/03/1984

शुक्र - शनि	
22/03/1984	
02/05/1986	
शनि	22/07/1984
बुध	09/11/1984
केतु	24/12/1984
शुक्र	01/05/1985
सूर्य	09/06/1985
चंद्र	12/08/1985
मंगल	26/09/1985
राहु	20/01/1986
गुरु	02/05/1986

शुक्र - बुध	
02/05/1986	
22/03/1988	
बुध	08/08/1986
केतु	17/09/1986
शुक्र	10/01/1987
सूर्य	14/02/1987
चंद्र	12/04/1987
मंगल	23/05/1987
राहु	03/09/1987
गुरु	04/12/1987
शनि	22/03/1988

शुक्र - केतु	
22/03/1988	
31/12/1988	
केतु	08/04/1988
शुक्र	25/05/1988
सूर्य	08/06/1988
चंद्र	02/07/1988
मंगल	19/07/1988
राहु	30/08/1988
गुरु	07/10/1988
शनि	21/11/1988
बुध	31/12/1988

सूर्य - सूर्य	
31/12/1988	
14/03/1989	
सूर्य	04/01/1989
चंद्र	10/01/1989
मंगल	14/01/1989
राहु	25/01/1989
गुरु	04/02/1989
शनि	16/02/1989
बुध	26/02/1989
केतु	02/03/1989
शुक्र	14/03/1989

सूर्य - चंद्र	
14/03/1989	
14/07/1989	
चंद्र	25/03/1989
मंगल	01/04/1989
राहु	19/04/1989
गुरु	05/05/1989
शनि	24/05/1989
बुध	11/06/1989
केतु	18/06/1989
शुक्र	08/07/1989
सूर्य	14/07/1989

सूर्य - मंगल	
14/07/1989	
07/10/1989	
मंगल	19/07/1989
राहु	01/08/1989
गुरु	12/08/1989
शनि	26/08/1989
बुध	07/09/1989
केतु	12/09/1989
शुक्र	26/09/1989
सूर्य	30/09/1989
चंद्र	07/10/1989

सूर्य - राहु	
07/10/1989	
15/05/1990	
राहु	09/11/1989
गुरु	08/12/1989
शनि	12/01/1990
बुध	12/02/1990
केतु	25/02/1990
शुक्र	03/04/1990
सूर्य	14/04/1990
चंद्र	02/05/1990
मंगल	15/05/1990

सूर्य - गुरु	
15/05/1990	
25/11/1990	
गुरु	10/06/1990
शनि	10/07/1990
बुध	07/08/1990
केतु	18/08/1990
शुक्र	20/09/1990
सूर्य	30/09/1990
चंद्र	16/10/1990
मंगल	27/10/1990
राहु	25/11/1990

सूर्य - शनि	
25/11/1990	
15/07/1991	
शनि	01/01/1991
बुध	03/02/1991
केतु	16/02/1991
शुक्र	27/03/1991
सूर्य	07/04/1991
चंद्र	27/04/1991
मंगल	10/05/1991
राहु	14/06/1991
गुरु	15/07/1991

सूर्य - बुध	
15/07/1991	
07/02/1992	
बुध	13/08/1991
केतु	25/08/1991
शुक्र	29/09/1991
सूर्य	09/10/1991
चंद्र	26/10/1991
मंगल	07/11/1991
राहु	08/12/1991
गुरु	05/01/1992
शनि	07/02/1992

सूर्य - केतु	
07/02/1992	
02/05/1992	
केतु	12/02/1992
शुक्र	26/02/1992
सूर्य	01/03/1992
चंद्र	08/03/1992
मंगल	13/03/1992
राहु	26/03/1992
गुरु	06/04/1992
शनि	20/04/1992
बुध	02/05/1992

सूर्य - शुक्र	
02/05/1992	
31/12/1992	
शुक्र	11/06/1992
सूर्य	24/06/1992
चंद्र	14/07/1992
मंगल	28/07/1992
राहु	03/09/1992
गुरु	05/10/1992
शनि	13/11/1992
बुध	17/12/1992
केतु	31/12/1992

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
31/12/1992	
22/07/1993	
चंद्र	17/01/1993
मंगल	29/01/1993
राहु	01/03/1993
गुरु	28/03/1993
शनि	29/04/1993
बुध	27/05/1993
केतु	08/06/1993
शुक्र	12/07/1993
सूर्य	22/07/1993

चंद्र - मंगल	
22/07/1993	
11/12/1993	
मंगल	31/07/1993
राहु	21/08/1993
गुरु	09/09/1993
शनि	01/10/1993
बुध	21/10/1993
केतु	30/10/1993
शुक्र	22/11/1993
सूर्य	29/11/1993
चंद्र	11/12/1993

चंद्र - राहु	
11/12/1993	
12/12/1994	
राहु	04/02/1994
गुरु	25/03/1994
शनि	22/05/1994
बुध	12/07/1994
केतु	03/08/1994
शुक्र	03/10/1994
सूर्य	21/10/1994
चंद्र	20/11/1994
मंगल	12/12/1994

चंद्र - गुरु	
12/12/1994	
01/11/1995	
गुरु	24/01/1995
शनि	16/03/1995
बुध	01/05/1995
केतु	20/05/1995
शुक्र	13/07/1995
सूर्य	30/07/1995
चंद्र	26/08/1995
मंगल	14/09/1995
राहु	01/11/1995

चंद्र - शनि	
01/11/1995	
21/11/1996	
शनि	01/01/1996
बुध	25/02/1996
केतु	18/03/1996
शुक्र	22/05/1996
सूर्य	10/06/1996
चंद्र	12/07/1996
मंगल	04/08/1996
राहु	30/09/1996
गुरु	21/11/1996

चंद्र - बुध	
21/11/1996	
01/11/1997	
बुध	09/01/1997
केतु	29/01/1997
शुक्र	27/03/1997
सूर्य	14/04/1997
चंद्र	12/05/1997
मंगल	01/06/1997
राहु	23/07/1997
गुरु	07/09/1997
शनि	01/11/1997

चंद्र - केतु	
01/11/1997	
23/03/1998	
केतु	09/11/1997
शुक्र	03/12/1997
सूर्य	10/12/1997
चंद्र	22/12/1997
मंगल	30/12/1997
राहु	20/01/1998
गुरु	08/02/1998
शनि	03/03/1998
बुध	23/03/1998

चंद्र - शुक्र	
23/03/1998	
03/05/1999	
शुक्र	29/05/1998
सूर्य	19/06/1998
चंद्र	23/07/1998
मंगल	15/08/1998
राहु	15/10/1998
गुरु	08/12/1998
शनि	10/02/1999
बुध	09/04/1999
केतु	03/05/1999

चंद्र - सूर्य	
03/05/1999	
01/09/1999	
सूर्य	09/05/1999
चंद्र	19/05/1999
मंगल	26/05/1999
राहु	13/06/1999
गुरु	29/06/1999
शनि	19/07/1999
बुध	05/08/1999
केतु	12/08/1999
शुक्र	01/09/1999

मंगल - मंगल	
01/09/1999	
10/12/1999	
मंगल	07/09/1999
राहु	22/09/1999
गुरु	05/10/1999
शनि	21/10/1999
बुध	04/11/1999
केतु	10/11/1999
शुक्र	27/11/1999
सूर्य	02/12/1999
चंद्र	10/12/1999

मंगल - राहु	
10/12/1999	
21/08/2000	
राहु	17/01/2000
गुरु	20/02/2000
शनि	01/04/2000
बुध	07/05/2000
केतु	22/05/2000
शुक्र	03/07/2000
सूर्य	16/07/2000
चंद्र	07/08/2000
मंगल	21/08/2000

मंगल - गुरु	
21/08/2000	
06/04/2001	
गुरु	21/09/2000
शनि	27/10/2000
बुध	28/11/2000
केतु	11/12/2000
शुक्र	18/01/2001
सूर्य	29/01/2001
चंद्र	17/02/2001
मंगल	03/03/2001
राहु	06/04/2001

मंगल - शनि	
06/04/2001	
01/01/2002	
शनि	18/05/2001
बुध	26/06/2001
केतु	11/07/2001
शुक्र	25/08/2001
सूर्य	08/09/2001
चंद्र	30/09/2001
मंगल	16/10/2001
राहु	26/11/2001
गुरु	01/01/2002

मंगल - बुध	
01/01/2002	
30/08/2002	
बुध	04/02/2002
केतु	18/02/2002
शुक्र	30/03/2002
सूर्य	11/04/2002
चंद्र	01/05/2002
मंगल	15/05/2002
राहु	21/06/2002
गुरु	23/07/2002
शनि	30/08/2002

मंगल - केतु	
30/08/2002	
08/12/2002	
केतु	05/09/2002
शुक्र	21/09/2002
सूर्य	26/09/2002
चंद्र	05/10/2002
मंगल	11/10/2002
राहु	25/10/2002
गुरु	08/11/2002
शनि	23/11/2002
बुध	08/12/2002

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र	
08/12/2002	
18/09/2003	
शुक्र	24/01/2003
सूर्य	07/02/2003
चंद्र	03/03/2003
मंगल	19/03/2003
राहु	01/05/2003
गुरु	08/06/2003
शनि	23/07/2003
बुध	01/09/2003
केतु	18/09/2003

मंगल - सूर्य	
18/09/2003	
12/12/2003	
सूर्य	22/09/2003
चंद्र	29/09/2003
मंगल	04/10/2003
राहु	17/10/2003
गुरु	28/10/2003
शनि	11/11/2003
बुध	23/11/2003
केतु	28/11/2003
शुक्र	12/12/2003

मंगल - चंद्र	
12/12/2003	
02/05/2004	
चंद्र	24/12/2003
मंगल	01/01/2004
राहु	22/01/2004
गुरु	10/02/2004
शनि	04/03/2004
बुध	24/03/2004
केतु	01/04/2004
शुक्र	25/04/2004
सूर्य	02/05/2004

राहु - राहु	
02/05/2004	
18/02/2006	
राहु	08/08/2004
गुरु	04/11/2004
शनि	16/02/2005
बुध	20/05/2005
केतु	28/06/2005
शुक्र	15/10/2005
सूर्य	17/11/2005
चंद्र	11/01/2006
मंगल	18/02/2006

राहु - गुरु	
18/02/2006	
26/09/2007	
गुरु	07/05/2006
शनि	08/08/2006
बुध	30/10/2006
केतु	03/12/2006
शुक्र	10/03/2007
सूर्य	08/04/2007
चंद्र	27/05/2007
मंगल	30/06/2007
राहु	26/09/2007

राहु - शनि	
26/09/2007	
20/08/2009	
शनि	14/01/2008
बुध	21/04/2008
केतु	31/05/2008
शुक्र	24/09/2008
सूर्य	29/10/2008
चंद्र	26/12/2008
मंगल	04/02/2009
राहु	19/05/2009
गुरु	20/08/2009

राहु - बुध	
20/08/2009	
03/05/2011	
बुध	16/11/2009
केतु	22/12/2009
शुक्र	04/04/2010
सूर्य	05/05/2010
चंद्र	26/06/2010
मंगल	01/08/2010
राहु	03/11/2010
गुरु	24/01/2011
शनि	03/05/2011

राहु - केतु	
03/05/2011	
13/01/2012	
केतु	18/05/2011
शुक्र	29/06/2011
सूर्य	12/07/2011
चंद्र	02/08/2011
मंगल	17/08/2011
राहु	25/09/2011
गुरु	29/10/2011
शनि	08/12/2011
बुध	13/01/2012

राहु - शुक्र	
13/01/2012	
13/01/2014	
शुक्र	14/05/2012
सूर्य	20/06/2012
चंद्र	19/08/2012
मंगल	01/10/2012
राहु	19/01/2013
गुरु	26/04/2013
शनि	20/08/2013
बुध	01/12/2013
केतु	13/01/2014

राहु - सूर्य	
13/01/2014	
20/08/2014	
सूर्य	24/01/2014
चंद्र	11/02/2014
मंगल	24/02/2014
राहु	29/03/2014
गुरु	27/04/2014
शनि	01/06/2014
बुध	02/07/2014
केतु	14/07/2014
शुक्र	20/08/2014

राहु - चंद्र	
20/08/2014	
20/08/2015	
चंद्र	19/09/2014
मंगल	11/10/2014
राहु	04/12/2014
गुरु	22/01/2015
शनि	21/03/2015
बुध	12/05/2015
केतु	02/06/2015
शुक्र	02/08/2015
सूर्य	20/08/2015

राहु - मंगल	
20/08/2015	
02/05/2016	
मंगल	04/09/2015
राहु	12/10/2015
गुरु	16/11/2015
शनि	26/12/2015
बुध	31/01/2016
केतु	15/02/2016
शुक्र	29/03/2016
सूर्य	11/04/2016
चंद्र	02/05/2016

गुरु - गुरु	
02/05/2016	
03/10/2017	
गुरु	10/07/2016
शनि	30/09/2016
बुध	13/12/2016
केतु	12/01/2017
शुक्र	09/04/2017
सूर्य	05/05/2017
चंद्र	17/06/2017
मंगल	17/07/2017
राहु	03/10/2017

गुरु - शनि	
03/10/2017	
12/06/2019	
शनि	09/01/2018
बुध	06/04/2018
केतु	12/05/2018
शुक्र	23/08/2018
सूर्य	23/09/2018
चंद्र	13/11/2018
मंगल	19/12/2018
राहु	22/03/2019
गुरु	12/06/2019

गुरु - बुध	
12/06/2019	
15/12/2020	
बुध	29/08/2019
केतु	01/10/2019
शुक्र	01/01/2020
सूर्य	28/01/2020
चंद्र	14/03/2020
मंगल	15/04/2020
राहु	07/07/2020
गुरु	19/09/2020
शनि	15/12/2020

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 10 मास 25 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
15/08/1947		09/07/1949		09/07/1964		09/07/1972		09/07/1989	
09/07/1949		09/07/1964		09/07/1972		09/07/1989		10/07/1999	
	00/00/0000	चंद्र	09/08/1951	मंगल	11/02/1965	बुध	14/03/1975	शनि	13/06/1990
	00/00/0000	मंगल	18/09/1952	बुध	17/05/1966	शनि	08/10/1976	गुरु	16/03/1992
	00/00/0000	बुध	29/01/1955	शनि	11/02/1967	गुरु	06/10/1979	राहु	26/04/1993
	00/00/0000	शनि	19/06/1956	गुरु	09/07/1968	राहु	26/08/1981	शुक्र	06/04/1995
	15/08/1947	गुरु	08/02/1959	राहु	30/05/1969	शुक्र	15/12/1984	सूर्य	26/10/1995
गुरु	09/09/1947	राहु	08/10/1960	शुक्र	19/12/1970	सूर्य	25/11/1985	चंद्र	16/03/1997
राहु	09/05/1948	शुक्र	09/09/1963	सूर्य	30/05/1971	चंद्र	05/04/1988	मंगल	12/12/1997
शुक्र	09/07/1949	सूर्य	09/07/1964	चंद्र	09/07/1972	मंगल	09/07/1989	बुध	10/07/1999

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
10/07/1999		10/07/2018		10/07/2030		10/07/2051	
10/07/2018		10/07/2030		10/07/2051		00/00/0000	
गुरु	12/11/2002	राहु	09/11/2019	शुक्र	09/08/2034	सूर्य	09/11/2051
राहु	22/12/2004	शुक्र	10/03/2022	सूर्य	09/10/2035	चंद्र	08/09/2052
शुक्र	01/09/2008	सूर्य	08/11/2022	चंद्र	08/09/2038	मंगल	17/02/2053
सूर्य	22/09/2009	चंद्र	09/07/2024	मंगल	30/03/2040	बुध	28/01/2054
चंद्र	13/05/2012	मंगल	30/05/2025	बुध	20/07/2043	शनि	19/08/2054
मंगल	09/10/2013	बुध	20/04/2027	शनि	29/06/2045	गुरु	15/08/2055
बुध	05/10/2016	शनि	30/05/2028	गुरु	10/03/2049		00/00/0000
शनि	10/07/2018	गुरु	10/07/2030	राहु	10/07/2051		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
15/08/1947		**09/09/1947**		**09/05/1948**		**09/07/1949**		**09/08/1951**	
09/09/1947		**09/05/1948**		**09/07/1949**		**09/08/1951**		**18/09/1952**	
	00/00/0000	राहु	06/10/1947	शुक्र	31/07/1948	चंद्र	23/10/1949	मंगल	08/09/1951
	00/00/0000	शुक्र	22/11/1947	सूर्य	24/08/1948	मंगल	18/12/1949	बुध	11/11/1951
	00/00/0000	सूर्य	06/12/1947	चंद्र	22/10/1948	बुध	17/04/1950	शनि	19/12/1951
	00/00/0000	चंद्र	08/01/1948	मंगल	23/11/1948	शनि	27/06/1950	गुरु	28/02/1952
	00/00/0000	मंगल	27/01/1948	बुध	29/01/1949	गुरु	08/11/1950	राहु	13/04/1952
	00/00/0000	बुध	05/03/1948	शनि	09/03/1949	राहु	31/01/1951	शुक्र	01/07/1952
	15/08/1947	शनि	27/03/1948	गुरु	23/05/1949	शुक्र	28/06/1951	सूर्य	24/07/1952
शनि	09/09/1947	गुरु	09/05/1948	राहु	09/07/1949	सूर्य	09/08/1951	चंद्र	18/09/1952

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
18/09/1952		**29/01/1955**		**19/06/1956**		**08/02/1959**		**08/10/1960**	
29/01/1955		**19/06/1956**		**08/02/1959**		**08/10/1960**		**09/09/1963**	
बुध	01/02/1953	शनि	17/03/1955	गुरु	05/12/1956	राहु	16/04/1959	शुक्र	04/05/1961
शनि	22/04/1953	गुरु	14/06/1955	राहु	22/03/1957	शुक्र	13/08/1959	सूर्य	02/07/1961
गुरु	20/09/1953	राहु	09/08/1955	शुक्र	26/09/1957	सूर्य	16/09/1959	चंद्र	27/11/1961
राहु	25/12/1953	शुक्र	16/11/1955	सूर्य	18/11/1957	चंद्र	09/12/1959	मंगल	14/02/1962
शुक्र	11/06/1954	सूर्य	14/12/1955	चंद्र	01/04/1958	मंगल	23/01/1960	बुध	31/07/1962
सूर्य	29/07/1954	चंद्र	22/02/1956	मंगल	12/06/1958	बुध	28/04/1960	शनि	07/11/1962
चंद्र	26/11/1954	मंगल	31/03/1956	बुध	10/11/1958	शनि	23/06/1960	गुरु	13/05/1963
मंगल	29/01/1955	बुध	19/06/1956	शनि	08/02/1959	गुरु	08/10/1960	राहु	09/09/1963

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
09/09/1963		**09/07/1964**		**11/02/1965**		**17/05/1966**		**11/02/1967**	
09/07/1964		**11/02/1965**		**17/05/1966**		**11/02/1967**		**09/07/1968**	
सूर्य	26/09/1963	मंगल	25/07/1964	बुध	24/04/1965	शनि	11/06/1966	गुरु	13/05/1967
चंद्र	07/11/1963	बुध	28/08/1964	शनि	06/06/1965	गुरु	28/07/1966	राहु	09/07/1967
मंगल	29/11/1963	शनि	17/09/1964	गुरु	25/08/1965	राहु	27/08/1966	शुक्र	17/10/1967
बुध	16/01/1964	गुरु	25/10/1964	राहु	16/10/1965	शुक्र	19/10/1966	सूर्य	14/11/1967
शनि	14/02/1964	राहु	18/11/1964	शुक्र	13/01/1966	सूर्य	03/11/1966	चंद्र	25/01/1968
गुरु	07/04/1964	शुक्र	30/12/1964	सूर्य	08/02/1966	चंद्र	10/12/1966	मंगल	03/03/1968
राहु	11/05/1964	सूर्य	12/01/1965	चंद्र	12/04/1966	मंगल	30/12/1966	बुध	23/05/1968
शुक्र	09/07/1964	चंद्र	11/02/1965	मंगल	17/05/1966	बुध	11/02/1967	शनि	09/07/1968

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु	
09/07/1968	
30/05/1969	
राहु	14/08/1968
शुक्र	16/10/1968
सूर्य	03/11/1968
चंद्र	18/12/1968
मंगल	12/01/1969
बुध	04/03/1969
शनि	03/04/1969
गुरु	30/05/1969

मंगल - शुक्र	
30/05/1969	
19/12/1970	
शुक्र	17/09/1969
सूर्य	19/10/1969
चंद्र	06/01/1970
मंगल	17/02/1970
बुध	17/05/1970
शनि	09/07/1970
गुरु	17/10/1970
राहु	19/12/1970

मंगल - सूर्य	
19/12/1970	
30/05/1971	
सूर्य	28/12/1970
चंद्र	20/01/1971
मंगल	01/02/1971
बुध	26/02/1971
शनि	13/03/1971
गुरु	11/04/1971
राहु	29/04/1971
शुक्र	30/05/1971

मंगल - चंद्र	
30/05/1971	
09/07/1972	
चंद्र	26/07/1971
मंगल	25/08/1971
बुध	28/10/1971
शनि	04/12/1971
गुरु	14/02/1972
राहु	30/03/1972
शुक्र	17/06/1972
सूर्य	09/07/1972

बुध - बुध	
09/07/1972	
14/03/1975	
बुध	10/12/1972
शनि	10/03/1973
गुरु	29/08/1973
राहु	16/12/1973
शुक्र	24/06/1974
सूर्य	17/08/1974
चंद्र	31/12/1974
मंगल	14/03/1975

बुध - शनि	
14/03/1975	
08/10/1976	
शनि	06/05/1975
गुरु	15/08/1975
राहु	18/10/1975
शुक्र	07/02/1976
सूर्य	10/03/1976
चंद्र	28/05/1976
मंगल	10/07/1976
बुध	08/10/1976

बुध - गुरु	
08/10/1976	
06/10/1979	
गुरु	19/04/1977
राहु	18/08/1977
शुक्र	18/03/1978
सूर्य	18/05/1978
चंद्र	17/10/1978
मंगल	06/01/1979
बुध	27/06/1979
शनि	06/10/1979

बुध - राहु	
06/10/1979	
26/08/1981	
राहु	21/12/1979
शुक्र	04/05/1980
सूर्य	11/06/1980
चंद्र	15/09/1980
मंगल	05/11/1980
बुध	21/02/1981
शनि	26/04/1981
गुरु	26/08/1981

बुध - शुक्र	
26/08/1981	
15/12/1984	
शुक्र	17/04/1982
सूर्य	24/06/1982
चंद्र	08/12/1982
मंगल	08/03/1983
बुध	14/09/1983
शनि	04/01/1984
गुरु	03/08/1984
राहु	15/12/1984

बुध - सूर्य	
15/12/1984	
25/11/1985	
सूर्य	03/01/1985
चंद्र	20/02/1985
मंगल	18/03/1985
बुध	11/05/1985
शनि	12/06/1985
गुरु	12/08/1985
राहु	19/09/1985
शुक्र	25/11/1985

बुध - चंद्र	
25/11/1985	
05/04/1988	
चंद्र	25/03/1986
मंगल	28/05/1986
बुध	10/10/1986
शनि	29/12/1986
गुरु	30/05/1987
राहु	03/09/1987
शुक्र	18/02/1988
सूर्य	05/04/1988

बुध - मंगल	
05/04/1988	
09/07/1989	
मंगल	10/05/1988
बुध	21/07/1988
शनि	01/09/1988
गुरु	21/11/1988
राहु	12/01/1989
शुक्र	11/04/1989
सूर्य	06/05/1989
चंद्र	09/07/1989

शनि - शनि	
09/07/1989	
13/06/1990	
शनि	10/08/1989
गुरु	08/10/1989
राहु	15/11/1989
शुक्र	20/01/1990
सूर्य	07/02/1990
चंद्र	26/03/1990
मंगल	20/04/1990
बुध	13/06/1990

शनि - गुरु	
13/06/1990	
16/03/1992	
गुरु	04/10/1990
राहु	14/12/1990
शुक्र	18/04/1991
सूर्य	24/05/1991
चंद्र	21/08/1991
मंगल	07/10/1991
बुध	17/01/1992
शनि	16/03/1992

शनि - राहु	
16/03/1992	
26/04/1993	
राहु	30/04/1992
शुक्र	18/07/1992
सूर्य	10/08/1992
चंद्र	05/10/1992
मंगल	04/11/1992
बुध	07/01/1993
शनि	14/02/1993
गुरु	26/04/1993

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
26/04/1993		06/04/1995		26/10/1995		16/03/1997		12/12/1997	
06/04/1995		26/10/1995		16/03/1997		12/12/1997		10/07/1999	
शुक्र	11/09/1993	सूर्य	17/04/1995	चंद्र	05/01/1996	मंगल	05/04/1997	बुध	12/03/1998
सूर्य	21/10/1993	चंद्र	16/05/1995	मंगल	11/02/1996	बुध	18/05/1997	शनि	05/05/1998
चंद्र	27/01/1994	मंगल	31/05/1995	बुध	01/05/1996	शनि	12/06/1997	गुरु	14/08/1998
मंगल	21/03/1994	बुध	02/07/1995	शनि	17/06/1996	गुरु	30/07/1997	राहु	17/10/1998
बुध	11/07/1994	शनि	20/07/1995	गुरु	14/09/1996	राहु	29/08/1997	शुक्र	05/02/1999
शनि	14/09/1994	गुरु	25/08/1995	राहु	10/11/1996	शुक्र	20/10/1997	सूर्य	09/03/1999
गुरु	17/01/1995	राहु	17/09/1995	शुक्र	16/02/1997	सूर्य	04/11/1997	चंद्र	28/05/1999
राहु	06/04/1995	शुक्र	26/10/1995	सूर्य	16/03/1997	चंद्र	12/12/1997	मंगल	10/07/1999

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
10/07/1999		12/11/2002		22/12/2004		01/09/2008		22/09/2009	
12/11/2002		22/12/2004		01/09/2008		22/09/2009		13/05/2012	
गुरु	10/02/2000	राहु	05/02/2003	शुक्र	10/09/2005	सूर्य	23/09/2008	चंद्र	03/02/2010
राहु	24/06/2000	शुक्र	05/07/2003	सूर्य	24/11/2005	चंद्र	15/11/2008	मंगल	15/04/2010
शुक्र	17/02/2001	सूर्य	17/08/2003	चंद्र	31/05/2006	मंगल	14/12/2008	बुध	14/09/2010
सूर्य	26/04/2001	चंद्र	02/12/2003	मंगल	08/09/2006	बुध	12/02/2009	शनि	12/12/2010
चंद्र	12/10/2001	मंगल	28/01/2004	बुध	08/04/2007	शनि	20/03/2009	गुरु	31/05/2011
मंगल	11/01/2002	बुध	29/05/2004	शनि	11/08/2007	गुरु	27/05/2009	राहु	15/09/2011
बुध	22/07/2002	शनि	08/08/2004	गुरु	04/04/2008	राहु	09/07/2009	शुक्र	20/03/2012
शनि	12/11/2002	गुरु	22/12/2004	राहु	01/09/2008	शुक्र	22/09/2009	सूर्य	13/05/2012

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
13/05/2012		09/10/2013		05/10/2016		10/07/2018		09/11/2019	
09/10/2013		05/10/2016		10/07/2018		09/11/2019		10/03/2022	
मंगल	20/06/2012	बुध	30/03/2014	शनि	04/12/2016	राहु	02/09/2018	शुक्र	22/04/2020
बुध	09/09/2012	शनि	09/07/2014	गुरु	27/03/2017	शुक्र	05/12/2018	सूर्य	09/06/2020
शनि	26/10/2012	गुरु	17/01/2015	राहु	06/06/2017	सूर्य	01/01/2019	चंद्र	05/10/2020
गुरु	25/01/2013	राहु	18/05/2015	शुक्र	09/10/2017	चंद्र	10/03/2019	मंगल	07/12/2020
राहु	23/03/2013	शुक्र	17/12/2015	सूर्य	14/11/2017	मंगल	15/04/2019	बुध	20/04/2021
शुक्र	01/07/2013	सूर्य	15/02/2016	चंद्र	11/02/2018	बुध	01/07/2019	शनि	08/07/2021
सूर्य	29/07/2013	चंद्र	16/07/2016	मंगल	30/03/2018	शनि	15/08/2019	गुरु	05/12/2021
चंद्र	09/10/2013	मंगल	05/10/2016	बुध	10/07/2018	गुरु	09/11/2019	राहु	10/03/2022

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
10/03/2022		08/11/2022		09/07/2024		30/05/2025		20/04/2027	
08/11/2022		09/07/2024		30/05/2025		20/04/2027		30/05/2028	
सूर्य	23/03/2022	चंद्र	01/02/2023	मंगल	02/08/2024	बुध	15/09/2025	शनि	27/05/2027
चंद्र	26/04/2022	मंगल	18/03/2023	बुध	22/09/2024	शनि	18/11/2025	गुरु	07/08/2027
मंगल	14/05/2022	बुध	22/06/2023	शनि	22/10/2024	गुरु	20/03/2026	राहु	21/09/2027
बुध	22/06/2022	शनि	17/08/2023	गुरु	18/12/2024	राहु	04/06/2026	शुक्र	09/12/2027
शनि	14/07/2022	गुरु	02/12/2023	राहु	24/01/2025	शुक्र	16/10/2026	सूर्य	31/12/2027
गुरु	26/08/2022	राहु	08/02/2024	शुक्र	28/03/2025	सूर्य	24/11/2026	चंद्र	26/02/2028
राहु	22/09/2022	शुक्र	05/06/2024	सूर्य	15/04/2025	चंद्र	28/02/2027	मंगल	27/03/2028
शुक्र	08/11/2022	सूर्य	09/07/2024	चंद्र	30/05/2025	मंगल	20/04/2027	बुध	30/05/2028

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
30/05/2028		10/07/2030		09/08/2034		09/10/2035		08/09/2038	
10/07/2030		09/08/2034		09/10/2035		08/09/2038		30/03/2040	
गुरु	12/10/2028	शुक्र	26/04/2031	सूर्य	02/09/2034	चंद्र	05/03/2036	मंगल	21/10/2038
राहु	06/01/2029	सूर्य	17/07/2031	चंद्र	31/10/2034	मंगल	23/05/2036	बुध	18/01/2039
शुक्र	05/06/2029	चंद्र	10/02/2032	मंगल	01/12/2034	बुध	07/11/2036	शनि	12/03/2039
सूर्य	18/07/2029	मंगल	30/05/2032	बुध	07/02/2035	शनि	13/02/2037	गुरु	20/06/2039
चंद्र	02/11/2029	बुध	20/01/2033	शनि	18/03/2035	गुरु	20/08/2037	राहु	22/08/2039
मंगल	29/12/2029	शनि	07/06/2033	गुरु	01/06/2035	राहु	16/12/2037	शुक्र	10/12/2039
बुध	29/04/2030	गुरु	24/02/2034	राहु	18/07/2035	शुक्र	11/07/2038	सूर्य	11/01/2040
शनि	10/07/2030	राहु	09/08/2034	शुक्र	09/10/2035	सूर्य	08/09/2038	चंद्र	30/03/2040

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
30/03/2040		20/07/2043		29/06/2045		10/03/2049		10/07/2051	
20/07/2043		29/06/2045		10/03/2049		10/07/2051		09/11/2051	
बुध	06/10/2040	शनि	24/09/2043	गुरु	22/02/2046	राहु	12/06/2049	सूर्य	17/07/2051
शनि	26/01/2041	गुरु	27/01/2044	राहु	22/07/2046	शुक्र	25/11/2049	चंद्र	03/08/2051
गुरु	26/08/2041	राहु	15/04/2044	शुक्र	10/04/2047	सूर्य	11/01/2050	मंगल	12/08/2051
राहु	07/01/2042	शुक्र	31/08/2044	सूर्य	24/06/2047	चंद्र	10/05/2050	बुध	31/08/2051
शुक्र	30/08/2042	सूर्य	09/10/2044	चंद्र	28/12/2047	मंगल	12/07/2050	शनि	11/09/2051
सूर्य	05/11/2042	चंद्र	16/01/2045	मंगल	06/04/2048	बुध	23/11/2050	गुरु	02/10/2051
चंद्र	22/04/2043	मंगल	09/03/2045	बुध	05/11/2048	शनि	10/02/2051	राहु	16/10/2051
मंगल	20/07/2043	बुध	29/06/2045	शनि	10/03/2049	गुरु	10/07/2051	शुक्र	09/11/2051

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 2 वर्ष 10 मास 7 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
15/08/1947		22/06/1950		22/06/1954		22/06/1959		22/06/1965	
22/06/1950		22/06/1954		22/06/1959		22/06/1965		21/06/1972	
धांय	21/09/1947	भ्राम	01/12/1950	भद्रि	02/03/1955	उल्क	21/06/1960	सिद्ध	01/11/1966
भ्राम	21/01/1948	भद्रि	22/06/1951	उल्क	01/01/1956	सिद्ध	21/08/1961	संक	22/05/1968
भद्रि	21/06/1948	उल्क	21/02/1952	सिद्ध	21/12/1956	संक	21/12/1962	मंग	01/08/1968
उल्क	21/12/1948	सिद्ध	01/12/1952	संक	31/01/1958	मंग	20/02/1963	पिंग	21/12/1968
सिद्ध	22/07/1949	संक	21/10/1953	मंग	22/03/1958	पिंग	22/06/1963	धांय	22/07/1969
संक	22/03/1950	मंग	01/12/1953	पिंग	02/07/1958	धांय	22/12/1963	भ्राम	02/05/1970
मंग	22/04/1950	पिंग	20/02/1954	धांय	01/12/1958	भ्राम	21/08/1964	भद्रि	22/04/1971
पिंग	22/06/1950	धांय	22/06/1954	भ्राम	22/06/1959	भद्रि	22/06/1965	उल्क	21/06/1972

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
21/06/1972		21/06/1980		22/06/1981		22/06/1983		22/06/1986	
21/06/1980		22/06/1981		22/06/1983		22/06/1986		22/06/1990	
संक	02/04/1974	मंग	01/07/1980	पिंग	01/08/1981	धांय	21/09/1983	भ्राम	01/12/1986
मंग	22/06/1974	पिंग	22/07/1980	धांय	01/10/1981	भ्राम	21/01/1984	भद्रि	22/06/1987
पिंग	01/12/1974	धांय	21/08/1980	भ्राम	21/12/1981	भद्रि	21/06/1984	उल्क	21/02/1988
धांय	02/08/1975	भ्राम	01/10/1980	भद्रि	02/04/1982	उल्क	21/12/1984	सिद्ध	01/12/1988
भ्राम	21/06/1976	भद्रि	20/11/1980	उल्क	01/08/1982	सिद्ध	22/07/1985	संक	21/10/1989
भद्रि	01/08/1977	उल्क	20/01/1981	सिद्ध	21/12/1982	संक	22/03/1986	मंग	01/12/1989
उल्क	01/12/1978	सिद्ध	01/04/1981	संक	02/06/1983	मंग	22/04/1986	पिंग	20/02/1990
सिद्ध	21/06/1980	संक	22/06/1981	मंग	22/06/1983	पिंग	22/06/1986	धांय	22/06/1990

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष	
22/06/1990	
22/06/1995	
भद्रि	02/03/1991
उल्क	01/01/1992
सिद्ध	21/12/1992
संक	31/01/1994
मंग	22/03/1994
पिंग	02/07/1994
धांय	01/12/1994
भ्राम	22/06/1995

उल्का 6 वर्ष	
22/06/1995	
22/06/2001	
उल्क	21/06/1996
सिद्ध	21/08/1997
संक	21/12/1998
मंग	20/02/1999
पिंग	22/06/1999
धांय	22/12/1999
भ्राम	21/08/2000
भद्रि	22/06/2001

सिद्धा 7 वर्ष	
22/06/2001	
21/06/2008	
सिद्ध	01/11/2002
संक	22/05/2004
मंग	01/08/2004
पिंग	21/12/2004
धांय	22/07/2005
भ्राम	02/05/2006
भद्रि	22/04/2007
उल्क	21/06/2008

संकटा 8 वर्ष	
21/06/2008	
21/06/2016	
संक	02/04/2010
मंग	22/06/2010
पिंग	01/12/2010
धांय	02/08/2011
भ्राम	21/06/2012
भद्रि	01/08/2013
उल्क	01/12/2014
सिद्ध	21/06/2016

मंगला 1 वर्ष	
21/06/2016	
22/06/2017	
मंग	01/07/2016
पिंग	22/07/2016
धांय	21/08/2016
भ्राम	01/10/2016
भद्रि	20/11/2016
उल्क	20/01/2017
सिद्ध	01/04/2017
संक	22/06/2017

पिंगला 2 वर्ष	
22/06/2017	
22/06/2019	
पिंग	01/08/2017
धांय	01/10/2017
भ्राम	21/12/2017
भद्रि	02/04/2018
उल्क	01/08/2018
सिद्ध	21/12/2018
संक	02/06/2019
मंग	22/06/2019

धान्या 3 वर्ष	
22/06/2019	
22/06/2022	
धांय	21/09/2019
भ्राम	21/01/2020
भद्रि	21/06/2020
उल्क	21/12/2020
सिद्ध	22/07/2021
संक	22/03/2022
मंग	22/04/2022
पिंग	22/06/2022

भ्रामरी 4 वर्ष	
22/06/2022	
22/06/2026	
भ्राम	01/12/2022
भद्रि	22/06/2023
उल्क	21/02/2024
सिद्ध	01/12/2024
संक	21/10/2025
मंग	01/12/2025
पिंग	20/02/2026
धांय	22/06/2026

भद्रिका 5 वर्ष	
22/06/2026	
22/06/2031	
भद्रि	02/03/2027
उल्क	01/01/2028
सिद्ध	21/12/2028
संक	31/01/2030
मंग	22/03/2030
पिंग	02/07/2030
धांय	01/12/2030
भ्राम	22/06/2031

उल्का 6 वर्ष	
22/06/2031	
22/06/2037	
उल्क	21/06/2032
सिद्ध	21/08/2033
संक	21/12/2034
मंग	20/02/2035
पिंग	22/06/2035
धांय	22/12/2035
भ्राम	21/08/2036
भद्रि	22/06/2037

सिद्धा 7 वर्ष	
22/06/2037	
21/06/2044	
सिद्ध	01/11/2038
संक	22/05/2040
मंग	01/08/2040
पिंग	21/12/2040
धांय	22/07/2041
भ्राम	02/05/2042
भद्रि	22/04/2043
उल्क	21/06/2044

संकटा 8 वर्ष	
21/06/2044	
21/06/2052	
संक	02/04/2046
मंग	22/06/2046
पिंग	01/12/2046
धांय	02/08/2047
भ्राम	21/06/2048
भद्रि	01/08/2049
उल्क	01/12/2050
सिद्ध	21/06/2052

मंगला 1 वर्ष	
21/06/2052	
22/06/2053	
मंग	01/07/2052
पिंग	22/07/2052
धांय	21/08/2052
भ्राम	01/10/2052
भद्रि	20/11/2052
उल्क	20/01/2053
सिद्ध	01/04/2053
संक	22/06/2053

पिंगला 2 वर्ष	
22/06/2053	
22/06/2055	
पिंग	01/08/2053
धांय	01/10/2053
भ्राम	21/12/2053
भद्रि	02/04/2054
उल्क	01/08/2054
सिद्ध	21/12/2054
संक	02/06/2055
मंग	22/06/2055

धान्या 3 वर्ष	
22/06/2055	
00/00/0000	
धांय	15/08/2055
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय		भद्रि - भद्रि	
01/12/2024		21/10/2025		01/12/2025		20/02/2026		22/06/2026	
21/10/2025		01/12/2025		20/02/2026		22/06/2026		02/03/2027	
संक	11/02/2025	मंग	22/10/2025	पिंग	05/12/2025	धांय	02/03/2026	भद्रि	27/07/2026
मंग	20/02/2025	पिंग	25/10/2025	धांय	12/12/2025	भ्राम	16/03/2026	उल्क	07/09/2026
पिंग	10/03/2025	धांय	28/10/2025	भ्राम	21/12/2025	भद्रि	02/04/2026	सिद्ध	27/10/2026
धांय	06/04/2025	भ्राम	02/11/2025	भद्रि	01/01/2026	उल्क	22/04/2026	संक	22/12/2026
भ्राम	12/05/2025	भद्रि	07/11/2025	उल्क	15/01/2026	सिद्ध	16/05/2026	मंग	29/12/2026
भद्रि	26/06/2025	उल्क	14/11/2025	सिद्ध	31/01/2026	संक	12/06/2026	पिंग	12/01/2027
उल्क	19/08/2025	सिद्ध	22/11/2025	संक	18/02/2026	मंग	15/06/2026	धांय	02/02/2027
सिद्ध	21/10/2025	संक	01/12/2025	मंग	20/02/2026	पिंग	22/06/2026	भ्राम	02/03/2027

भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग	
02/03/2027		01/01/2028		21/12/2028		31/01/2030		22/03/2030	
01/01/2028		21/12/2028		31/01/2030		22/03/2030		02/07/2030	
उल्क	22/04/2027	सिद्ध	10/03/2028	संक	21/03/2029	मंग	01/02/2030	पिंग	28/03/2030
सिद्ध	20/06/2027	संक	28/05/2028	मंग	01/04/2029	पिंग	04/02/2030	धांय	06/04/2030
संक	27/08/2027	मंग	07/06/2028	पिंग	24/04/2029	धांय	08/02/2030	भ्राम	17/04/2030
मंग	04/09/2027	पिंग	26/06/2028	धांय	28/05/2029	भ्राम	14/02/2030	भद्रि	01/05/2030
पिंग	21/09/2027	धांय	26/07/2028	भ्राम	12/07/2029	भद्रि	21/02/2030	उल्क	18/05/2030
धांय	17/10/2027	भ्राम	03/09/2028	भद्रि	06/09/2029	उल्क	01/03/2030	सिद्ध	07/06/2030
भ्राम	20/11/2027	भद्रि	23/10/2028	उल्क	13/11/2029	सिद्ध	11/03/2030	संक	29/06/2030
भद्रि	01/01/2028	उल्क	21/12/2028	सिद्ध	31/01/2030	संक	22/03/2030	मंग	02/07/2030

भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक	
02/07/2030		01/12/2030		22/06/2031		21/06/2032		21/08/2033	
01/12/2030		22/06/2031		21/06/2032		21/08/2033		21/12/2034	
धांय	15/07/2030	भ्राम	24/12/2030	उल्क	22/08/2031	सिद्ध	12/09/2032	संक	08/12/2033
भ्राम	01/08/2030	भद्रि	21/01/2031	सिद्ध	01/11/2031	संक	16/12/2032	मंग	21/12/2033
भद्रि	22/08/2030	उल्क	24/02/2031	संक	21/01/2032	मंग	28/12/2032	पिंग	17/01/2034
उल्क	16/09/2030	सिद्ध	04/04/2031	मंग	31/01/2032	पिंग	20/01/2033	धांय	27/02/2034
सिद्ध	16/10/2030	संक	19/05/2031	पिंग	21/02/2032	धांय	25/02/2033	भ्राम	22/04/2034
संक	18/11/2030	मंग	25/05/2031	धांय	22/03/2032	भ्राम	13/04/2033	भद्रि	29/06/2034
मंग	23/11/2030	पिंग	05/06/2031	भ्राम	02/05/2032	भद्रि	11/06/2033	उल्क	18/09/2034
पिंग	01/12/2030	धांय	22/06/2031	भद्रि	21/06/2032	उल्क	21/08/2033	सिद्ध	21/12/2034

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि	
21/12/2034		**20/02/2035**		**22/06/2035**		**22/12/2035**		**21/08/2036**	
20/02/2035		**22/06/2035**		**22/12/2035**		**21/08/2036**		**22/06/2037**	
मंग	23/12/2034	पिंग	27/02/2035	धांय	07/07/2035	भ्राम	18/01/2036	भद्रि	02/10/2036
पिंग	27/12/2034	धांय	09/03/2035	भ्राम	28/07/2035	भद्रि	21/02/2036	उल्क	22/11/2036
धांय	01/01/2035	भ्राम	23/03/2035	भद्रि	22/08/2035	उल्क	01/04/2036	सिद्ध	20/01/2037
भ्राम	07/01/2035	भद्रि	09/04/2035	उल्क	21/09/2035	सिद्ध	18/05/2036	संक	29/03/2037
भद्रि	16/01/2035	उल्क	29/04/2035	सिद्ध	27/10/2035	संक	12/07/2036	मंग	06/04/2037
उल्क	26/01/2035	सिद्ध	23/05/2035	संक	06/12/2035	मंग	18/07/2036	पिंग	23/04/2037
सिद्ध	07/02/2035	संक	19/06/2035	मंग	12/12/2035	पिंग	01/08/2036	धांय	19/05/2037
संक	20/02/2035	मंग	22/06/2035	पिंग	22/12/2035	धांय	21/08/2036	भ्राम	22/06/2037

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
22/06/2037		**01/11/2038**		**22/05/2040**		**01/08/2040**		**21/12/2040**	
01/11/2038		**22/05/2040**		**01/08/2040**		**21/12/2040**		**22/07/2041**	
सिद्ध	26/09/2037	संक	07/03/2039	मंग	24/05/2040	पिंग	09/08/2040	धांय	08/01/2041
संक	15/01/2038	मंग	23/03/2039	पिंग	28/05/2040	धांय	21/08/2040	भ्राम	31/01/2041
मंग	29/01/2038	पिंग	23/04/2039	धांय	03/06/2040	भ्राम	05/09/2040	भद्रि	02/03/2041
पिंग	25/02/2038	धांय	10/06/2039	भ्राम	11/06/2040	भद्रि	25/09/2040	उल्क	06/04/2041
धांय	08/04/2038	भ्राम	12/08/2039	भद्रि	20/06/2040	उल्क	19/10/2040	सिद्ध	18/05/2041
भ्राम	02/06/2038	भद्रि	30/10/2039	उल्क	02/07/2040	सिद्ध	15/11/2040	संक	04/07/2041
भद्रि	10/08/2038	उल्क	01/02/2040	सिद्ध	16/07/2040	संक	17/12/2040	मंग	10/07/2041
उल्क	01/11/2038	सिद्ध	22/05/2040	संक	01/08/2040	मंग	21/12/2040	पिंग	22/07/2041

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
22/07/2041		**02/05/2042**		**22/04/2043**		**21/06/2044**		**02/04/2046**	
02/05/2042		**22/04/2043**		**21/06/2044**		**02/04/2046**		**22/06/2046**	
भ्राम	23/08/2041	भद्रि	20/06/2042	उल्क	02/07/2043	संक	13/11/2044	मंग	04/04/2046
भद्रि	01/10/2041	उल्क	19/08/2042	सिद्ध	23/09/2043	मंग	01/12/2044	पिंग	08/04/2046
उल्क	17/11/2041	सिद्ध	27/10/2042	संक	27/12/2043	पिंग	06/01/2045	धांय	15/04/2046
सिद्ध	12/01/2042	संक	14/01/2043	मंग	08/01/2044	धांय	01/03/2045	भ्राम	24/04/2046
संक	16/03/2042	मंग	23/01/2043	पिंग	31/01/2044	भ्राम	12/05/2045	भद्रि	05/05/2046
मंग	24/03/2042	पिंग	12/02/2043	धांय	07/03/2044	भद्रि	10/08/2045	उल्क	19/05/2046
पिंग	08/04/2042	धांय	14/03/2043	भ्राम	23/04/2044	उल्क	26/11/2045	सिद्ध	04/06/2046
धांय	02/05/2042	भ्राम	22/04/2043	भद्रि	21/06/2044	सिद्ध	02/04/2046	संक	22/06/2046

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 3 वर्ष 5 मास 27 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : पुष्य - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
15/08/1947		10/02/1951		10/02/1960		10/02/1981		10/02/1986	
10/02/1951		10/02/1960		10/02/1981		10/02/1986		10/02/1995	
	00/00/0000	कन्या	03/12/1951	कर्क	09/07/1964	सिंह	12/05/1981	मिथु	03/12/1986
	00/00/0000	कर्क	23/10/1953	सिंह	28/07/1965	मिथु	23/10/1981	वृष	12/05/1988
	00/00/0000	सिंह	06/04/1954	मिथु	18/06/1967	वृष	12/08/1982	मेष	28/12/1988
	00/00/0000	मिथु	27/01/1955	वृष	27/10/1970	मेष	17/12/1982	मीन	22/11/1989
	00/00/0000	वृष	06/07/1956	मेष	16/04/1972	मीन	18/06/1983	वृश्चि	10/07/1990
	15/08/1947	मेष	21/02/1957	मीन	23/05/1974	वृश्चि	24/10/1983	तुला	18/12/1991
मेष	23/05/1948	मीन	15/01/1958	वृश्चि	11/11/1975	तुला	11/08/1984	कन्या	09/10/1992
मीन	28/12/1949	वृश्चि	03/09/1958	तुला	22/03/1979	कन्या	22/01/1985	कर्क	30/08/1994
वृश्चि	10/02/1951	तुला	10/02/1960	कन्या	10/02/1981	कर्क	10/02/1986	सिंह	10/02/1995

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
10/02/1995		10/02/2011		10/02/2018		10/02/2028		10/02/2035	
10/02/2011		10/02/2018		10/02/2028		10/02/2035		00/00/0000	
वृष	02/09/1997	मेष	08/08/2011	मीन	10/02/2019	वृश्चि	07/08/2028	तुला	02/09/2037
मेष	16/10/1998	मीन	20/04/2012	वृश्चि	24/10/2019	तुला	21/09/2029	कन्या	10/02/2039
मीन	23/05/2000	वृश्चि	16/10/2012	तुला	30/05/2021	कन्या	09/05/2030	कर्क	21/06/2042
वृश्चि	06/07/2001	तुला	29/11/2013	कन्या	24/04/2022	कर्क	28/10/2031	सिंह	10/04/2043
तुला	27/01/2004	कन्या	17/07/2014	कर्क	30/05/2024	सिंह	03/03/2032	मिथु	17/09/2044
कन्या	06/07/2005	कर्क	05/01/2016	सिंह	29/11/2024	मिथु	20/10/2032	वृष	10/04/2047
कर्क	14/11/2008	सिंह	12/05/2016	मिथु	23/10/2025	वृष	03/12/2033	मेष	15/08/2047
सिंह	02/09/2009	मिथु	28/12/2016	वृष	31/05/2027	मेष	31/05/2034		00/00/0000
मिथु	10/02/2011	वृष	10/02/2018	मेष	10/02/2028	मीन	10/02/2035		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मिथु	
29/11/2024	
23/10/2025	
मिथु	28/12/2024
वृष	19/02/2025
मेष	14/03/2025
मीन	16/04/2025
वृश्चि	09/05/2025
तुला	30/06/2025
कन्या	30/07/2025
कर्क	07/10/2025
सिंह	23/10/2025

मीन - वृष	
23/10/2025	
31/05/2027	
वृष	25/01/2026
मेष	07/03/2026
मीन	04/05/2026
वृश्चि	14/06/2026
तुला	16/09/2026
कन्या	07/11/2026
कर्क	10/03/2027
सिंह	08/04/2027
मिथु	31/05/2027

मीन - मेष	
31/05/2027	
10/02/2028	
मेष	18/06/2027
मीन	13/07/2027
वृश्चि	31/07/2027
तुला	10/09/2027
कन्या	03/10/2027
कर्क	26/11/2027
सिंह	09/12/2027
मिथु	01/01/2028
वृष	10/02/2028

वृश्चि - वृश्चि	
10/02/2028	
07/08/2028	
वृश्चि	23/02/2028
तुला	23/03/2028
कन्या	08/04/2028
कर्क	15/05/2028
सिंह	24/05/2028
मिथु	09/06/2028
वृष	08/07/2028
मेष	21/07/2028
मीन	07/08/2028

वृश्चि - तुला	
07/08/2028	
21/09/2029	
तुला	12/10/2028
कन्या	18/11/2028
कर्क	12/02/2029
सिंह	04/03/2029
मिथु	10/04/2029
वृष	14/06/2029
मेष	13/07/2029
मीन	23/08/2029
वृश्चि	21/09/2029

वृश्चि - कन्या	
21/09/2029	
09/05/2030	
कन्या	11/10/2029
कर्क	29/11/2029
सिंह	10/12/2029
मिथु	31/12/2029
वृष	06/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	17/03/2030
वृश्चि	02/04/2030
तुला	09/05/2030

वृश्चि - कर्क	
09/05/2030	
28/10/2031	
कर्क	29/08/2030
सिंह	25/09/2030
मिथु	13/11/2030
वृष	06/02/2031
मेष	16/03/2031
मीन	09/05/2031
वृश्चि	15/06/2031
तुला	09/09/2031
कन्या	28/10/2031

वृश्चि - सिंह	
28/10/2031	
03/03/2032	
सिंह	03/11/2031
मिथु	14/11/2031
वृष	05/12/2031
मेष	14/12/2031
मीन	27/12/2031
वृश्चि	05/01/2032
तुला	25/01/2032
कन्या	06/02/2032
कर्क	03/03/2032

वृश्चि - मिथु	
03/03/2032	
20/10/2032	
मिथु	24/03/2032
वृष	30/04/2032
मेष	16/05/2032
मीन	08/06/2032
वृश्चि	24/06/2032
तुला	31/07/2032
कन्या	21/08/2032
कर्क	08/10/2032
सिंह	20/10/2032

वृश्चि - वृष	
20/10/2032	
03/12/2033	
वृष	24/12/2032
मेष	22/01/2033
मीन	03/03/2033
वृश्चि	01/04/2033
तुला	06/06/2033
कन्या	12/07/2033
कर्क	06/10/2033
सिंह	27/10/2033
मिथु	03/12/2033

वृश्चि - मेष	
03/12/2033	
31/05/2034	
मेष	15/12/2033
मीन	02/01/2034
वृश्चि	15/01/2034
तुला	12/02/2034
कन्या	28/02/2034
कर्क	07/04/2034
सिंह	16/04/2034
मिथु	02/05/2034
वृष	31/05/2034

वृश्चि - मीन	
31/05/2034	
10/02/2035	
मीन	25/06/2034
वृश्चि	13/07/2034
तुला	23/08/2034
कन्या	15/09/2034
कर्क	08/11/2034
सिंह	20/11/2034
मिथु	13/12/2034
वृष	23/01/2035
मेष	10/02/2035

तुला - तुला	
10/02/2035	
02/09/2037	
तुला	10/07/2035
कन्या	02/10/2035
कर्क	15/04/2036
सिंह	01/06/2036
मिथु	24/08/2036
वृष	21/01/2037
मेष	27/03/2037
मीन	29/06/2037
वृश्चि	02/09/2037

तुला - कन्या	
02/09/2037	
10/02/2039	
कन्या	20/10/2037
कर्क	07/02/2038
सिंह	05/03/2038
मिथु	22/04/2038
वृष	15/07/2038
मेष	21/08/2038
मीन	12/10/2038
वृश्चि	18/11/2038
तुला	10/02/2039

तुला - कर्क	
10/02/2039	
21/06/2042	
कर्क	26/10/2039
सिंह	26/12/2039
मिथु	15/04/2040
वृष	28/10/2040
मेष	22/01/2041
मीन	25/05/2041
वृश्चि	19/08/2041
तुला	03/03/2042
कन्या	21/06/2042

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - सिंह		तुला - मिथु		तुला - वृष		तुला - मेष	
21/06/2042		**10/04/2043**		**17/09/2044**		**10/04/2047**	
10/04/2043		**17/09/2044**		**10/04/2047**		**00/00/0000**	
सिंह	06/07/2042	मिथु	27/05/2043	वृष	13/02/2045	मेष	08/05/2047
मिथु	01/08/2042	वृष	19/08/2043	मेष	20/04/2045	मीन	18/06/2047
वृष	17/09/2042	मेष	25/09/2043	मीन	22/07/2045	वृश्चि	17/07/2047
मेष	08/10/2042	मीन	17/11/2043	वृश्चि	26/09/2045	तुला	15/08/2047
मीन	06/11/2042	वृश्चि	23/12/2043	तुला	22/02/2046		00/00/0000
वृश्चि	26/11/2042	तुला	17/03/2044	कन्या	17/05/2046		00/00/0000
तुला	12/01/2043	कन्या	03/05/2044	कर्क	30/11/2046		00/00/0000
कन्या	07/02/2043	कर्क	21/08/2044	सिंह	16/01/2047		00/00/0000
कर्क	10/04/2043	सिंह	17/09/2044	मिथु	10/04/2047		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 2 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 2 वर्ष	
15/08/1947	
14/08/1949	
मेष	14/10/1947
मीन	14/12/1947
कुंभ	13/02/1948
मक	14/04/1948
धनु	14/06/1948
वृश्चि	14/08/1948
तुला	14/10/1948
कन्या	14/12/1948
सिंह	12/02/1949
कर्क	14/04/1949
मिथु	14/06/1949
वृष	14/08/1949

मेष 2 वर्ष	
14/08/1949	
15/08/1951	
वृष	14/10/1949
मिथु	14/12/1949
कर्क	13/02/1950
सिंह	15/04/1950
कन्या	14/06/1950
तुला	14/08/1950
वृश्चि	14/10/1950
धनु	14/12/1950
मक	13/02/1951
कुंभ	15/04/1951
मीन	15/06/1951
मेष	15/08/1951

मीन 5 वर्ष	
15/08/1951	
14/08/1956	
मेष	14/01/1952
वृष	14/06/1952
मिथु	13/11/1952
कर्क	14/04/1953
सिंह	13/09/1953
कन्या	13/02/1954
तुला	15/07/1954
वृश्चि	14/12/1954
धनु	15/05/1955
मक	14/10/1955
कुंभ	15/03/1956
मीन	14/08/1956

कुम्भ 7 वर्ष	
14/08/1956	
15/08/1963	
मीन	15/03/1957
मेष	14/10/1957
वृष	15/05/1958
मिथु	14/12/1958
कर्क	15/07/1959
सिंह	13/02/1960
कन्या	13/09/1960
तुला	14/04/1961
वृश्चि	13/11/1961
धनु	14/06/1962
मक	13/01/1963
कुंभ	15/08/1963

मकर 6 वर्ष	
15/08/1963	
14/08/1969	
धनु	13/02/1964
वृश्चि	14/08/1964
तुला	12/02/1965
कन्या	14/08/1965
सिंह	13/02/1966
कर्क	14/08/1966
मिथु	13/02/1967
वृष	15/08/1967
मेष	13/02/1968
मीन	14/08/1968
कुंभ	12/02/1969
मक	14/08/1969

धनु 10 वर्ष	
14/08/1969	
15/08/1979	
वृश्चि	14/06/1970
तुला	15/04/1971
कन्या	13/02/1972
सिंह	14/12/1972
कर्क	14/10/1973
मिथु	14/08/1974
वृष	15/06/1975
मेष	14/04/1976
मीन	12/02/1977
कुंभ	14/12/1977
मक	14/10/1978
धनु	15/08/1979

वृश्चिक 7 वर्ष	
15/08/1979	
14/08/1986	
तुला	15/03/1980
कन्या	14/10/1980
सिंह	15/05/1981
कर्क	14/12/1981
मिथु	15/07/1982
वृष	13/02/1983
मेष	14/09/1983
मीन	14/04/1984
कुंभ	13/11/1984
मक	14/06/1985
धनु	13/01/1986
वृश्चि	14/08/1986

तुला 9 वर्ष	
14/08/1986	
15/08/1995	
वृश्चि	15/05/1987
धनु	13/02/1988
मक	13/11/1988
कुंभ	14/08/1989
मीन	15/05/1990
मेष	13/02/1991
वृष	14/11/1991
मिथु	14/08/1992
कर्क	15/05/1993
सिंह	13/02/1994
कन्या	14/11/1994
तुला	15/08/1995

कन्या 2 वर्ष	
15/08/1995	
14/08/1997	
तुला	14/10/1995
वृश्चि	14/12/1995
धनु	13/02/1996
मक	14/04/1996
कुंभ	14/06/1996
मीन	14/08/1996
मेष	14/10/1996
वृष	14/12/1996
मिथु	12/02/1997
कर्क	14/04/1997
सिंह	14/06/1997
कन्या	14/08/1997

सिंह 1 वर्ष	
14/08/1997	
14/08/1998	
कन्या	13/09/1997
तुला	14/10/1997
वृश्चि	13/11/1997
धनु	14/12/1997
मक	13/01/1998
कुंभ	13/02/1998
मीन	15/03/1998
मेष	15/04/1998
वृष	15/05/1998
मिथु	14/06/1998
कर्क	15/07/1998
सिंह	14/08/1998

कर्क 12 वर्ष	
14/08/1998	
14/08/2010	
मिथु	15/08/1999
वृष	14/08/2000
मेष	14/08/2001
मीन	14/08/2002
कुंभ	15/08/2003
मक	14/08/2004
धनु	14/08/2005
वृश्चि	14/08/2006
तुला	15/08/2007
कन्या	14/08/2008
सिंह	14/08/2009
कर्क	14/08/2010

मिथुन 1 वर्ष	
14/08/2010	
15/08/2011	
वृष	14/09/2010
मेष	14/10/2010
मीन	14/11/2010
कुंभ	14/12/2010
मक	13/01/2011
धनु	13/02/2011
वृश्चि	15/03/2011
तुला	15/04/2011
कन्या	15/05/2011
सिंह	15/06/2011
कर्क	15/07/2011
मिथु	15/08/2011

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

मिथु - मिथु	
15/07/2011	
15/08/2011	
वृष	18/07/2011
मेष	20/07/2011
मीन	23/07/2011
कुंभ	25/07/2011
मक	28/07/2011
धनु	30/07/2011
वृश्चि	02/08/2011
तुला	04/08/2011
कन्या	07/08/2011
सिंह	09/08/2011
कर्क	12/08/2011
मिथु	15/08/2011

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंगल, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	राहु, शनि, शुक्र
		मारक	-	मंगल, गुरु, केतु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	44%	पराक्रम, सुख
चन्द्र	42%	पराक्रम,
मंगल	31%	धन, कम खर्च, दम्पति
बुध	45%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
गुरु	31%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	48%	पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
शनि	50%	पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	74%	स्वास्थ्य, पराक्रम
केतु	36%	दम्पति, धन

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शनि	10/09/1965	59	58	21	85	46	86	87	68	40
बुध	10/09/1982	84	58	34	85	46	86	75	55	53
केतु	10/09/1989	44	43	46	57	34	71	47	43	80
शुक्र	10/09/2009	59	58	34	85	46	86	87	68	65
सूर्य	10/09/2015	84	83	46	72	59	61	62	43	40
चन्द्र	10/09/2025	84	83	34	85	46	74	75	43	40
मंगल	10/09/2032	53	52	78	28	63	42	43	43	49
राहु	10/09/2050	28	27	21	41	34	55	56	99	24
गुरु	10/09/2066	67	66	63	42	78	44	57	55	36

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	हीरा		पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम		पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना		पराक्रम, धन, सन्तति सुख
दशा	**रत्न**	**क्षमता**	**मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ**
शनि	नीलम	94%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
15/08/1947	पन्ना	88%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
10/09/1965	हीरा	75%	पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
बुध	पन्ना	94%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
10/09/1965	नीलम	81%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
10/09/1982	हीरा	75%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
केतु	पन्ना	81%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
10/09/1982	हीरा	75%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
10/09/1989	लहसुनिया	73%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
शुक्र	पन्ना	88%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
10/09/1989	नीलम	88%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
10/09/2009	हीरा	81%	पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
सूर्य	पन्ना	81%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
10/09/2009	माणिक्य	73%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
10/09/2015	नीलम	69%	पराक्रम, सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
चन्द्र	पन्ना	88%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
10/09/2015	नीलम	81%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
10/09/2025	हीरा	69%	पराक्रम, सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
मंगल	नीलम	81%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
10/09/2025	पन्ना	69%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, तेल
10/09/2032	हीरा	69%	धन, कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	———	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	———	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	15/08/1947-26/07/1948	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/07/1948-20/09/1950	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/11/1952-24/04/1953	21/08/1953-12/11/1955	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/01/1964-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ भावस्थ मंगल की

दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी–कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी–कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय–समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न–बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार–बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठाता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय–समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि–विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे – कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

एस्ट्रोग्राफ – 2025

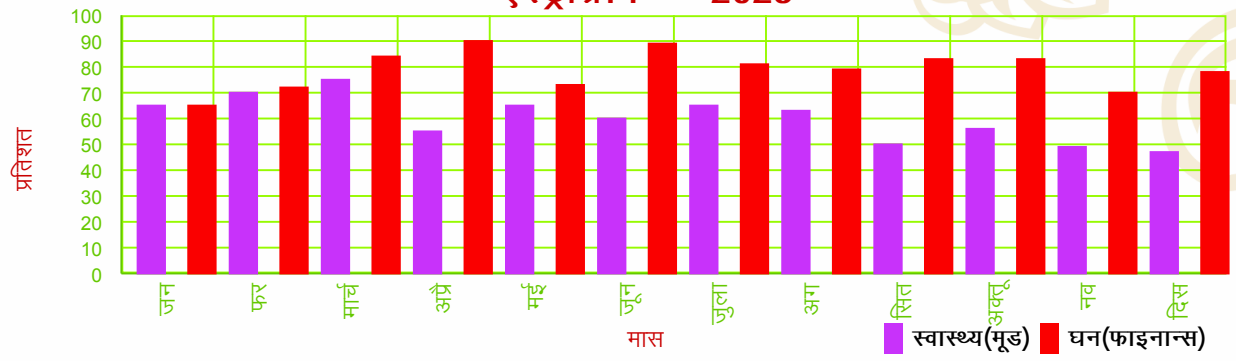

एस्ट्रोग्राफ – 2026

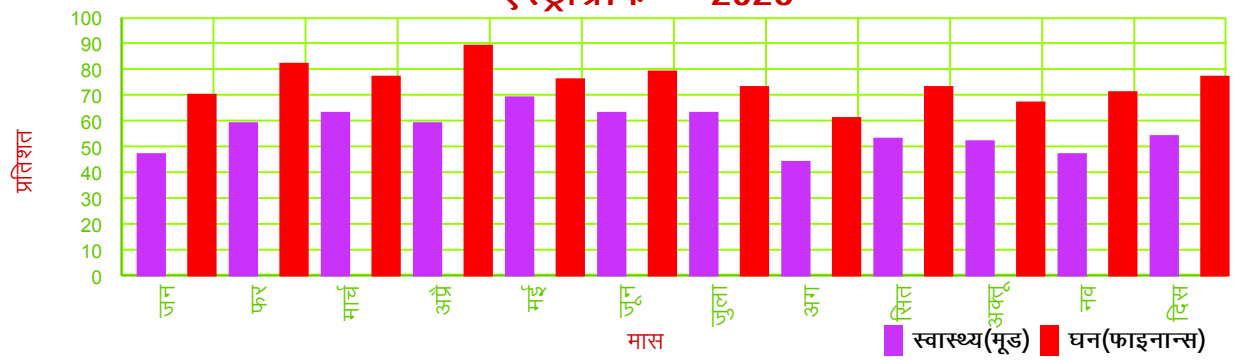

एस्ट्रोग्राफ – 2027

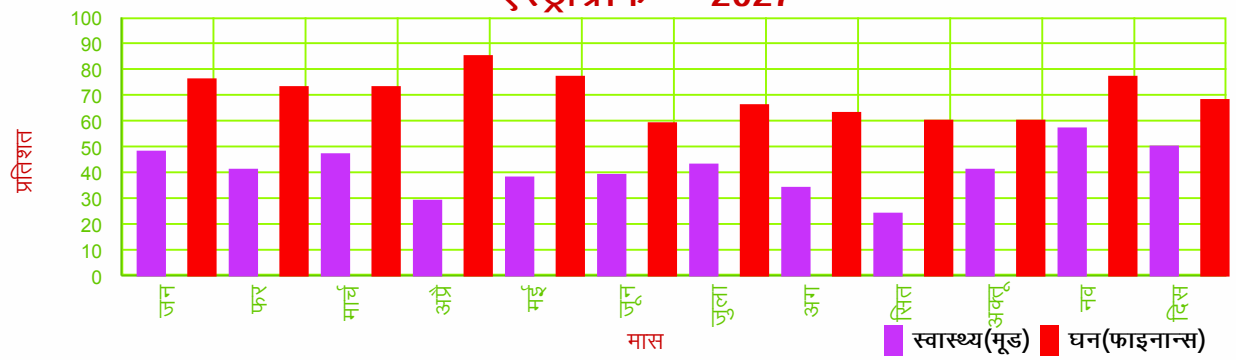

एस्ट्रोग्राफ – 2028

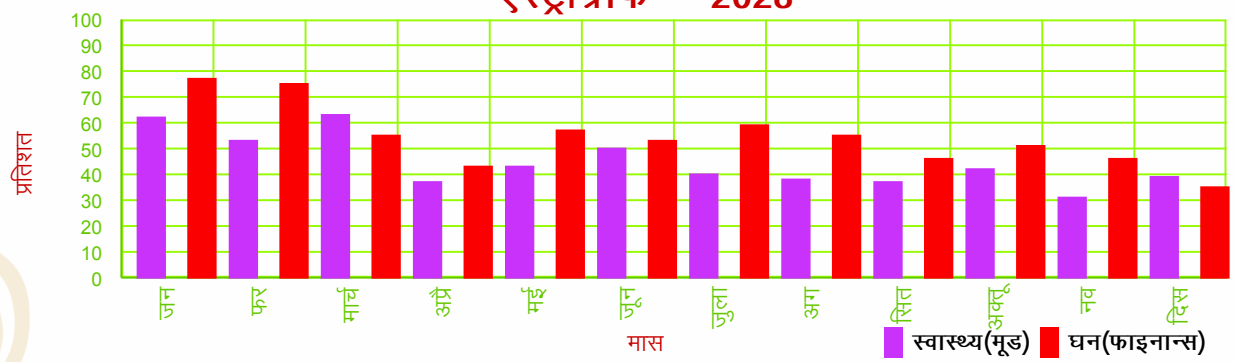

एस्ट्रोग्राफ – 2029

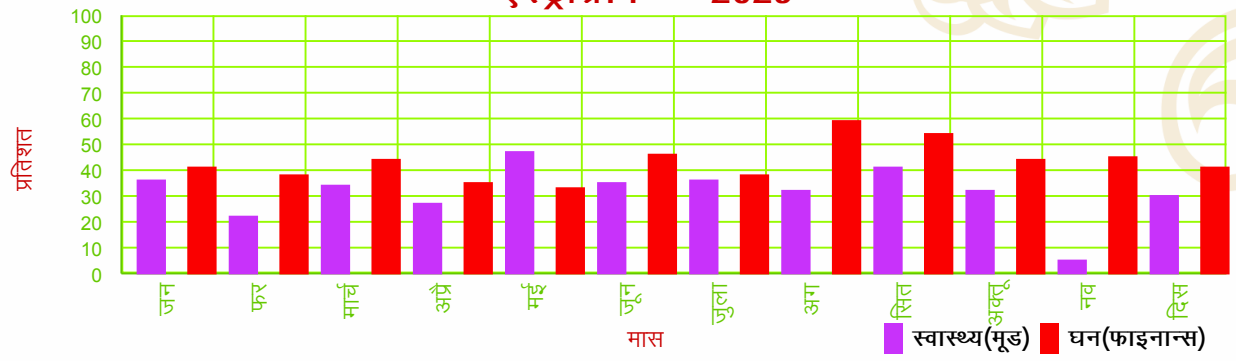

एस्ट्रोग्राफ – 2030

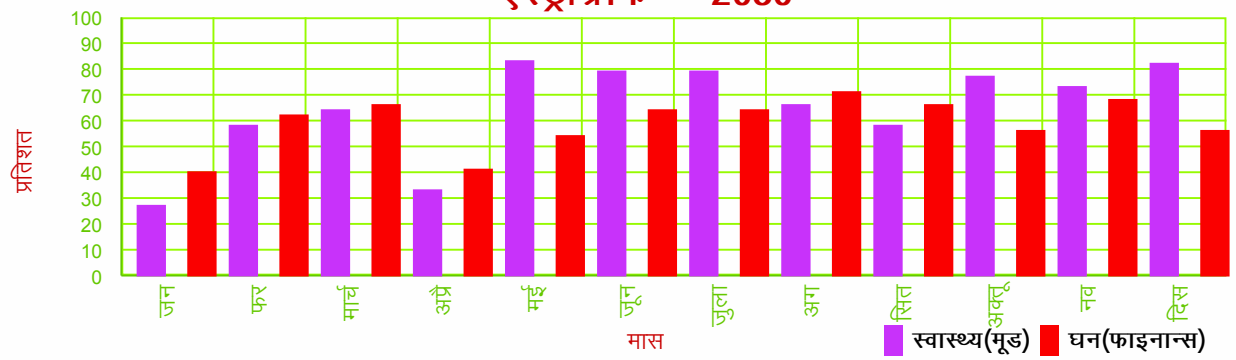

एस्ट्रोग्राफ – 2031

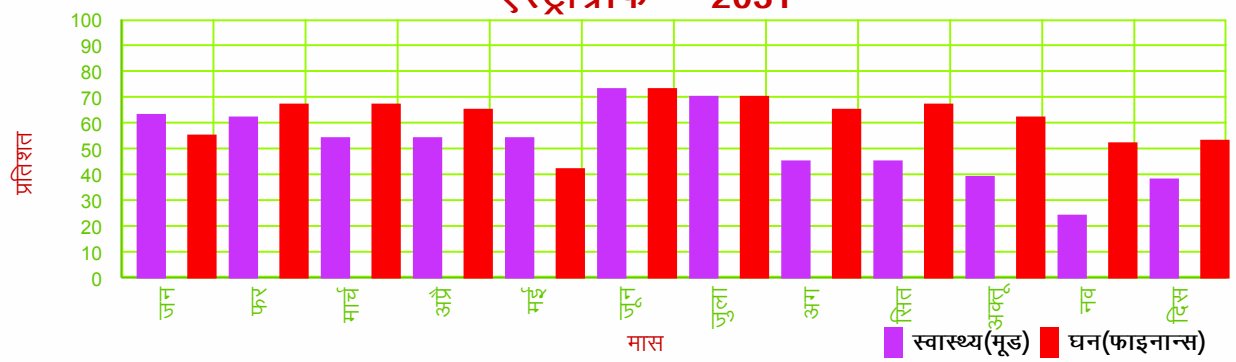

एस्ट्रोग्राफ – 2032

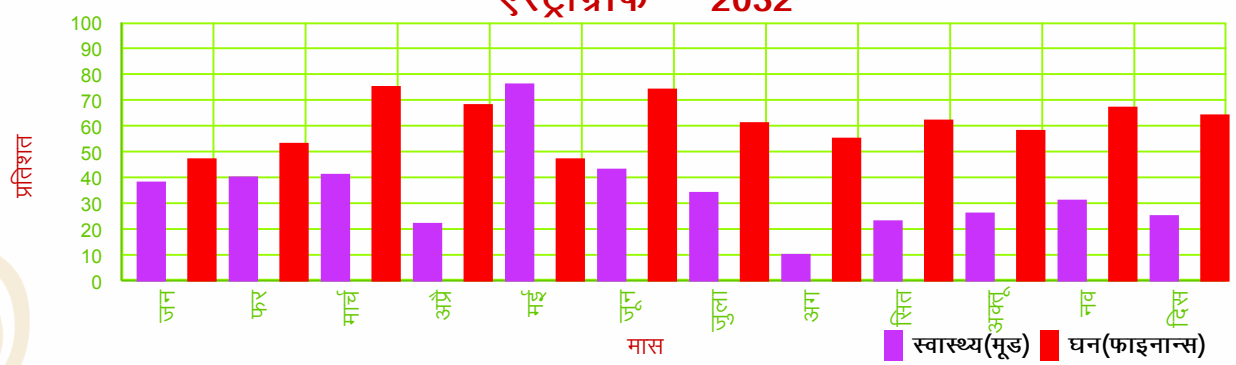

एस्ट्रोग्राफ – 2033

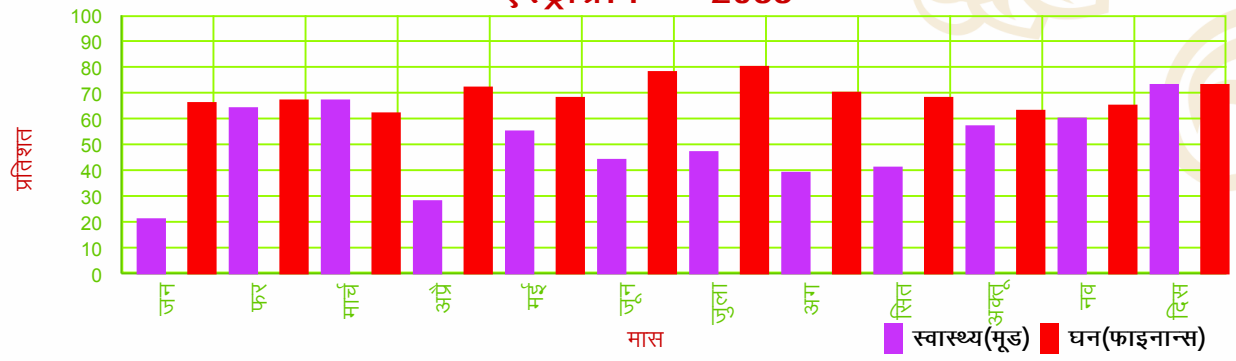

एस्ट्रोग्राफ – 2034

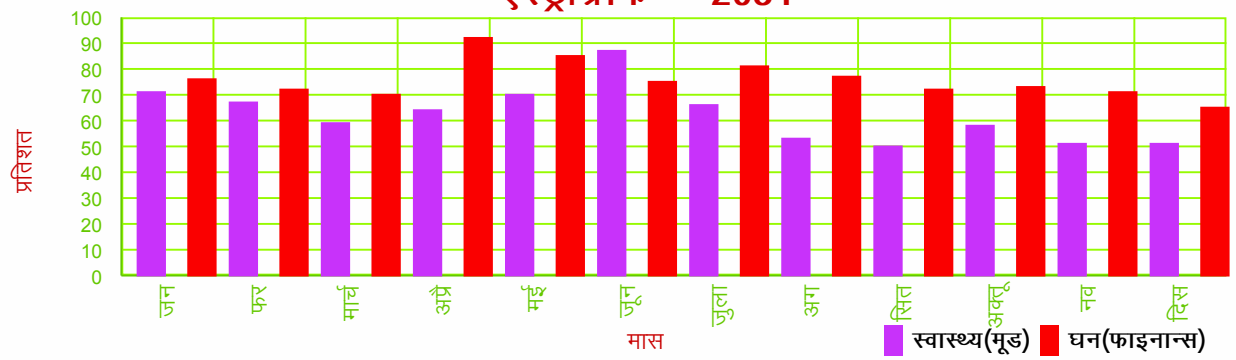

एस्ट्रोग्राफ – 2035

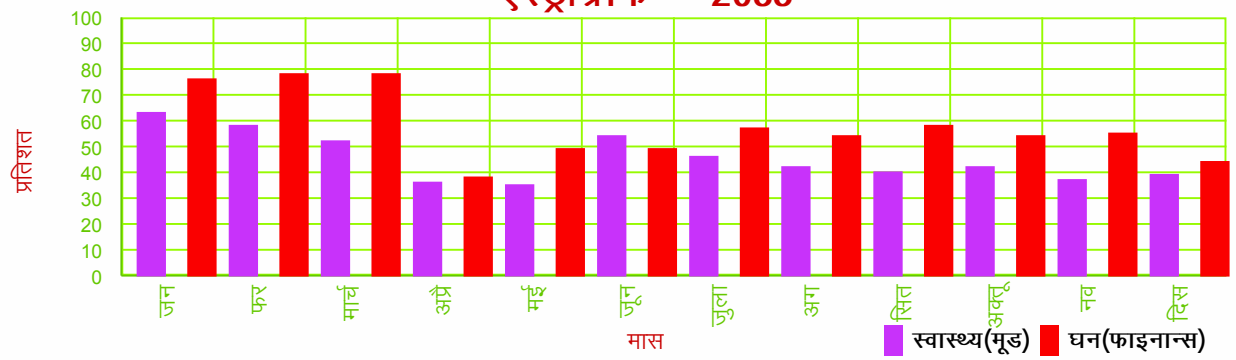

एस्ट्रोग्राफ – 2036

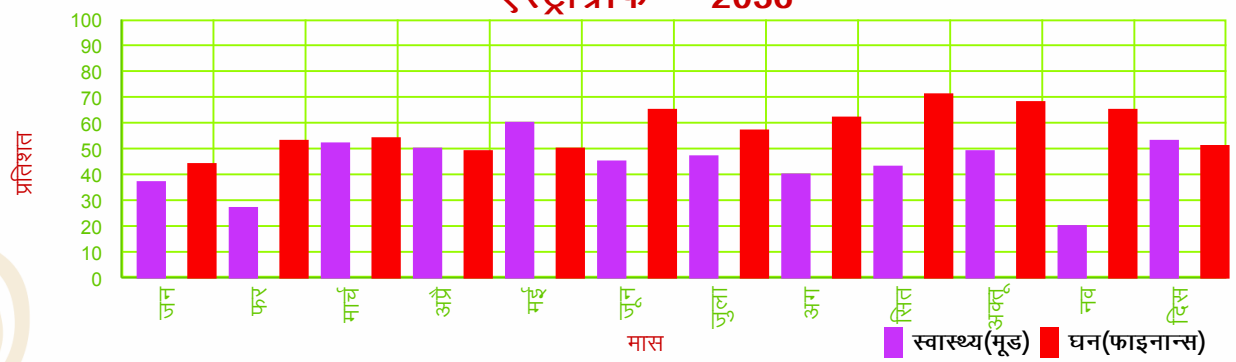

एस्ट्रोग्राफ – 2037

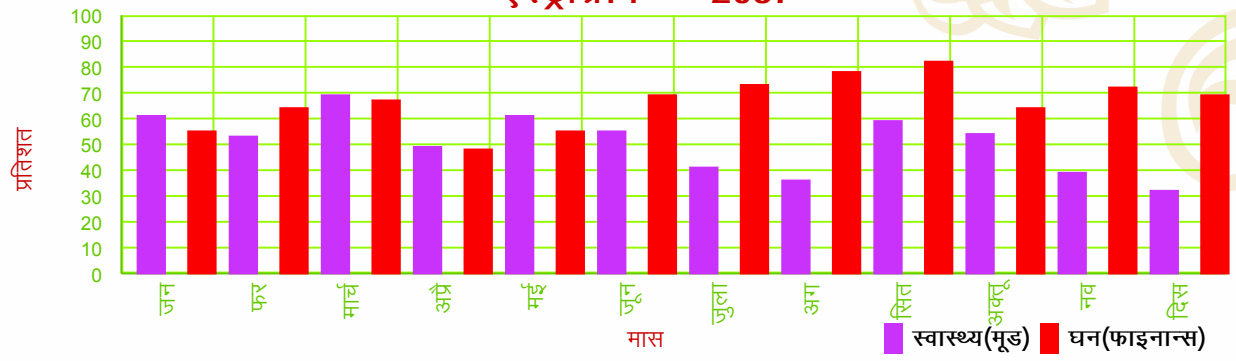

एस्ट्रोग्राफ – 2038

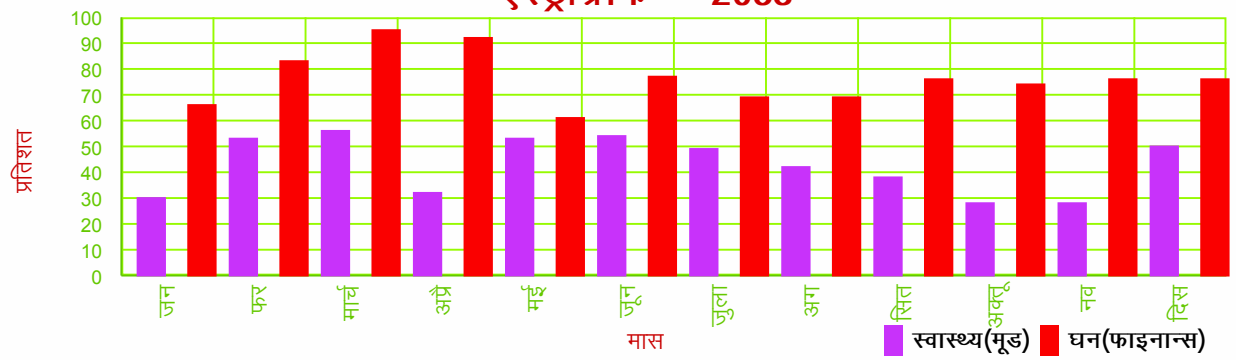

एस्ट्रोग्राफ – 2039

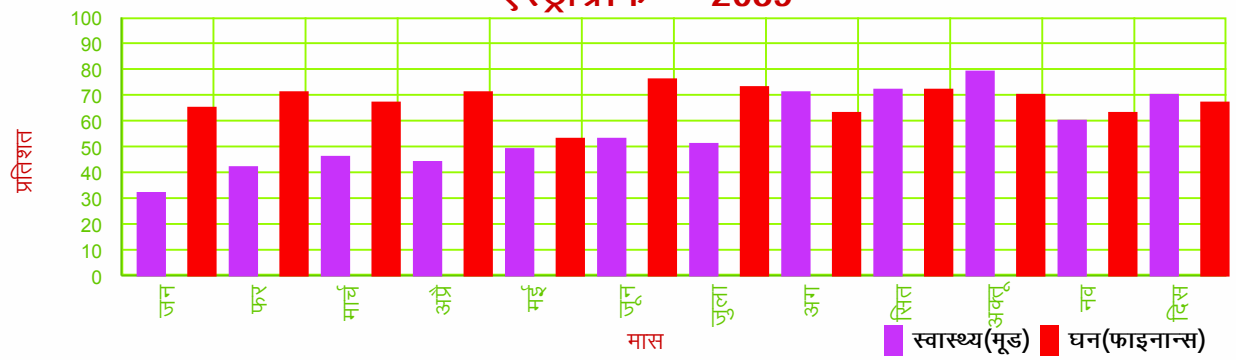

एस्ट्रोग्राफ – 2040

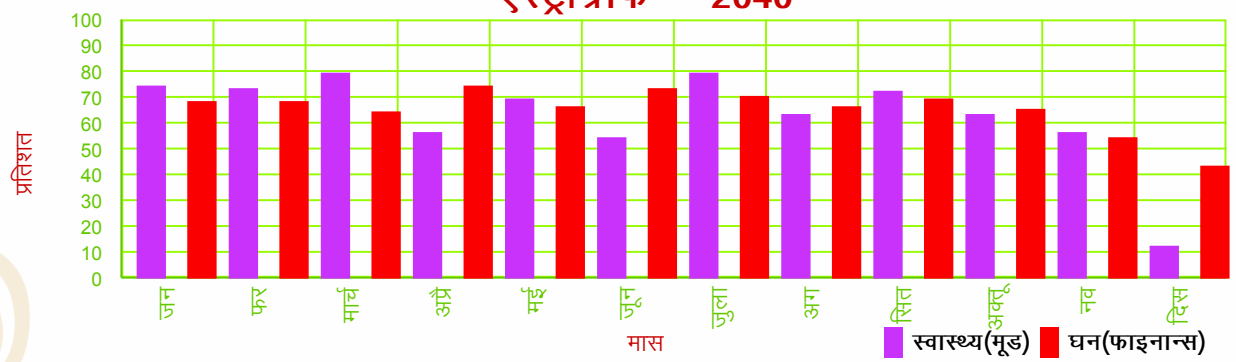

एस्ट्रोग्राफ – 2041

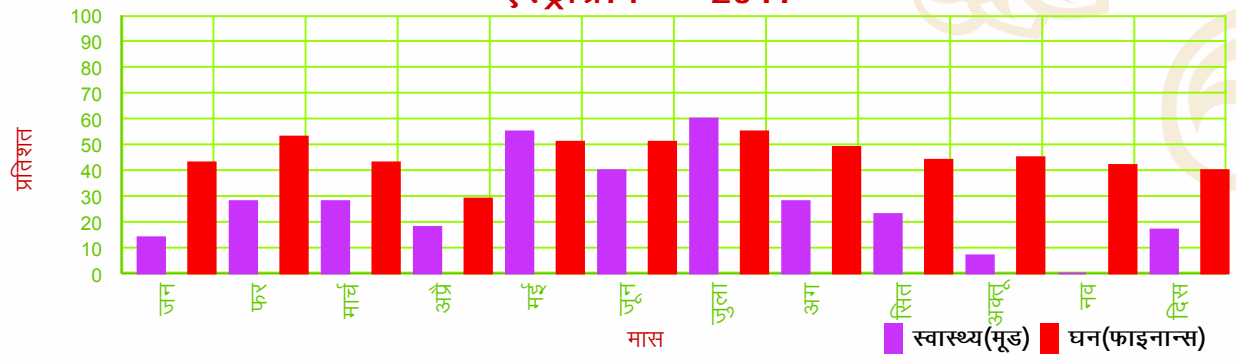

एस्ट्रोग्राफ – 2042

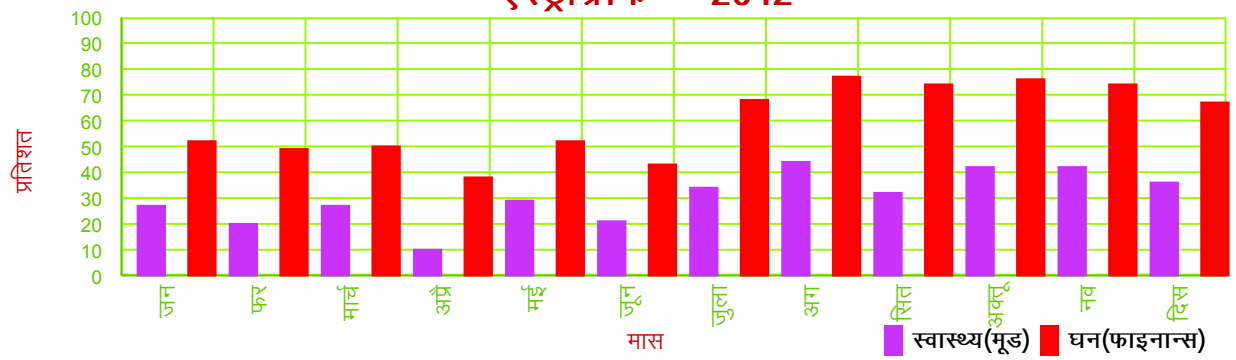

एस्ट्रोग्राफ – 2043

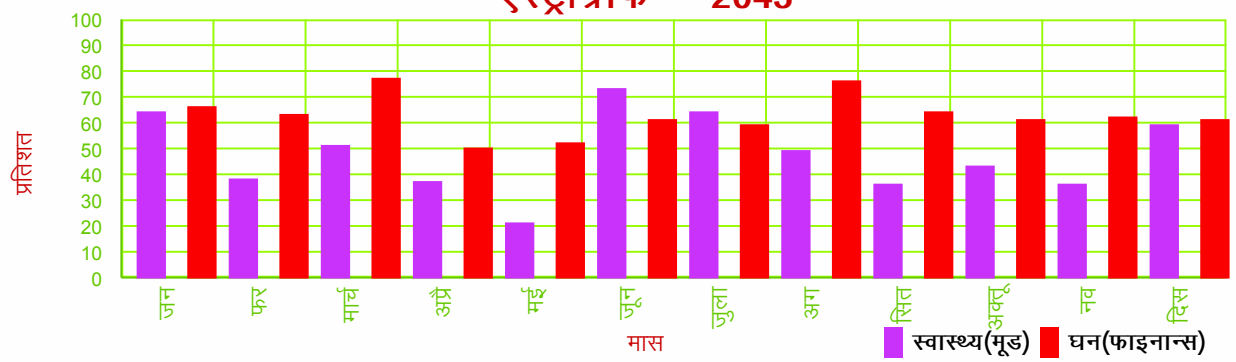

एस्ट्रोग्राफ – 2044

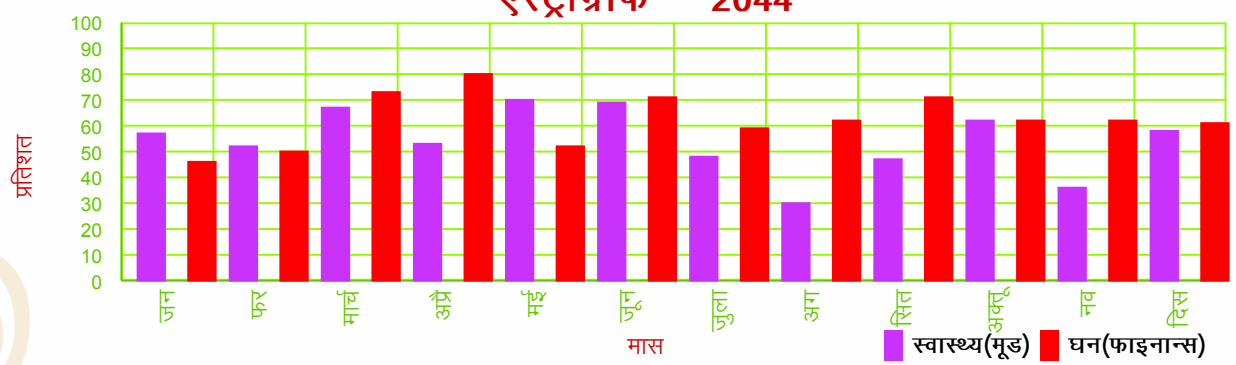

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश–विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज–सुख प्राप्त करेंगे।

वसुमनयोग

चन्द्राद्वा वसुमांस्तथोपचयगैर्लग्नात्समस्तैः शुभैः ।
तिष्ठेयुः स्वगृहे सदा वसुमति द्रव्याण्यनल्पान्यपि।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19–20

यदि सभी शुभ ग्रह लग्न से अथवा चन्द्रमा से गिनने पर तृतीय, षष्ठ,

दशम एवं एकादश इन स्थानों में हो तो वसुमन योग होता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक सदैव घर में निवास करेगा और उसके पास बहुत द्रव्य होगा। पूर्व में परदेश में निवास करना कष्ट का लक्षण और अपने घर में रहना सुख का लक्षण समझा जाता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 81 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, सुखी और भाग्यवान होंगे।

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्विरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का

राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

नौका योग

होरादिकष्टकेभ्यः सप्तर्क्षगतैः क्रमेण योगाः स्युः।
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशाः ख्यातकीर्तयो हृष्टाः।
कृपणा बलिनो लुब्धा नौसम्भूताश्चलाः पुरुषाः ।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 11, 21।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से सप्तम स्थान तक ही सातों ग्रह स्थित हों तो नौका योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र,शा योग की संभावना : 45 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में नौकायोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप जल द्वारा जीविका करके अधिक विभव तथा धन लाभ कर्त्ता, प्रसिद्ध, यशस्वी, आशावान, प्रसन्न चित्त, कृपण, बली, लालची और चंचल स्वभाव के प्राणी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने

वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. –16

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र,बुध,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–33 ।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4 / श्लो.–47 ।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4 / श्लो.–49 ।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,केतु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.–285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.–285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–59 ।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.–148

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–32।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–35

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.–8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–9 ।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.– 3/श्लो.–11

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–3/श्लो.–116

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह

के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–14।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,शुक्र,शनि,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–19

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,शनि,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–40

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–62

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षत हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.–14/श्लो.–3।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,शुक्र योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है या चन्द्रमा नीच अस्तादि में न

गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग– प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ–
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से

निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

Model: KundliDetailed,Yoga,PredictionPack20Year

SrNo: 110-124-101-1177 / 31 Date: 25/01/2025

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**14-15/08/1947**
दिन	गुरु–शुक्रवार
जन्म समय	**00:00:00 घंटे**
इष्ट	45:27:00 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	23:38:52 घंटे
वेलान्तर	-00:04:45 घंटे
साम्पातिक काल	21:08:13 घंटे
सूर्योदय	05:49:12 घंटे
सूर्यास्त	19:02:13 घंटे
दिनमान	13:13:01 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	27:59:21 कर्क
लग्न के अंश	07:45:37 वृष

चैत्रादि संवत / शक	2004 / 1869
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	13
तिथि समाप्ति काल	24:00:34
जन्म तिथि	13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल	22:57:55 घंटे
जन्म नक्षत्र	पुष्य
सूर्योदय कालीन योग	वज्र
योग समाप्ति काल	06:01:30 घंटे
जन्म योग	सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण	गर
करण समाप्ति काल	13:47:32 घंटे
जन्म करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृष – शुक्र
राशि–स्वामी	**कर्क – चन्द्र**
नक्षत्र–चरण	**पुष्य – 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	सिद्धि
करण	वणिज
गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हू–हुकमसिंह
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

घात चक्र

मास	पौष
तिथि	2-7-12
दिन	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	1
वर्ग	श्वान
लग्न	तुला
सूर्य	सिंह
चन्द्र	सिंह
मंगल	कन्या
बुध	मिथुन
गुरु	तुला
शुक्र	वृश्चिक
शनि	कर्क
राहु	धनु

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	07:45:37	395:04:16	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	———
सूर्य			कर्क	27:59:21	00:57:39	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	03:59:01	15:05:12	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	स्वराशि
मंगल			मिथु	07:27:23	00:39:28	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	शत्रु राशि
बुध			कर्क	13:40:28	01:48:17	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
गुरु			तुला	25:52:40	00:05:07	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	शत्रु राशि
शुक्र		अ	कर्क	22:33:40	01:14:06	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	शत्रु राशि
शनि		अ	कर्क	20:28:23	00:07:40	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		वृष	05:44:33	00:08:46	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	05:44:33	00:08:46	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
हर्ष			मिथु	02:03:12	00:02:20	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	केतु	———
नेप			कन्या	15:42:26	00:01:38	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	———
प्लूटो			कर्क	20:06:29	00:01:47	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	———
दशम भाव			मक	21:27:35	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:07:18

लग्न–चलित

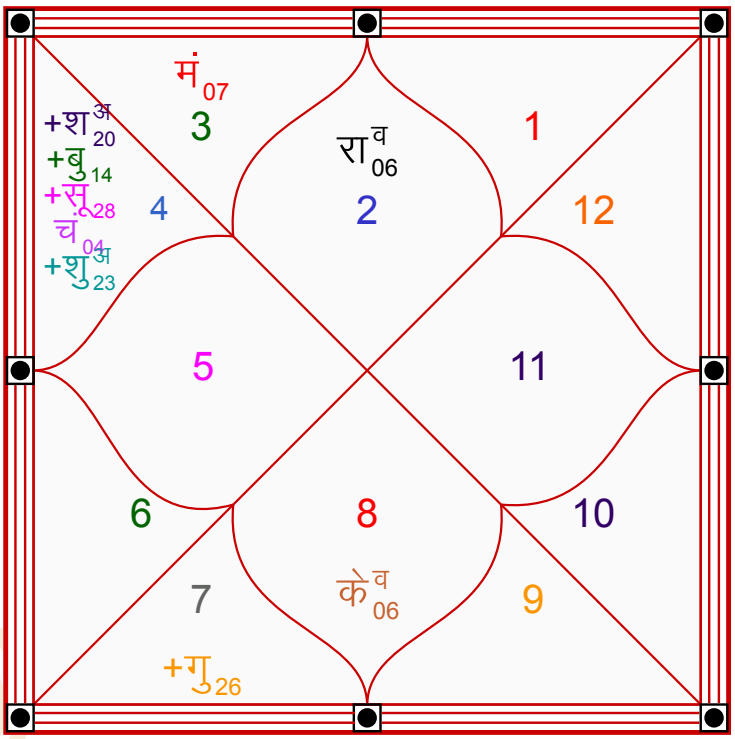

चन्द्र कुंडली

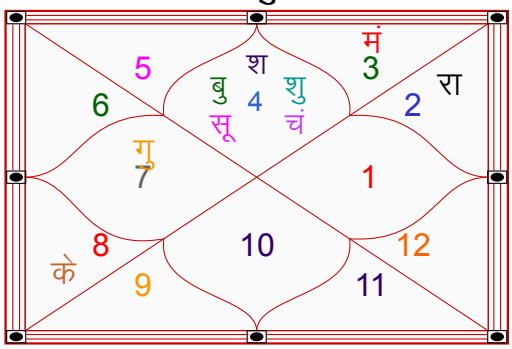

नवमांश कुंडली

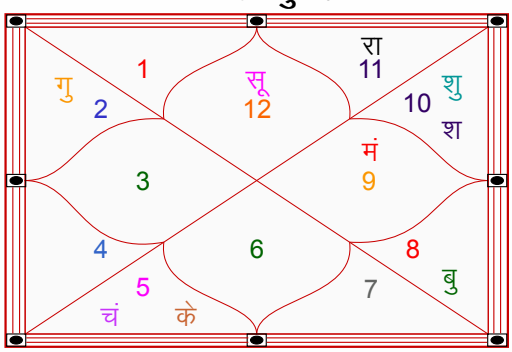

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	20:02:36	वृष	07:45:37
2	वृष	20:02:36	मिथुन	02:19:36
3	मिथुन	14:36:36	मिथुन	26:53:36
4	कर्क	09:10:36	कर्क	21:27:35
5	सिंह	09:10:36	सिंह	26:53:36
6	कन्या	14:36:36	तुला	02:19:36
7	तुला	20:02:36	वृश्चिक	07:45:37
8	वृश्चिक	20:02:36	धनु	02:19:36
9	धनु	14:36:36	धनु	26:53:36
10	मकर	09:10:36	मकर	21:27:35
11	कुम्भ	09:10:36	कुम्भ	26:53:36
12	मीन	14:36:36	मेष	02:19:36

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	07:45:37
2	मिथुन	03:21:41
3	मिथुन	26:33:37
4	कर्क	21:27:35
5	सिंह	21:37:11
6	कन्या	28:42:15
7	वृश्चिक	07:45:37
8	धनु	03:21:41
9	धनु	26:33:37
10	मकर	21:27:35
11	कुम्भ	21:37:11
12	मीन	28:42:15

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

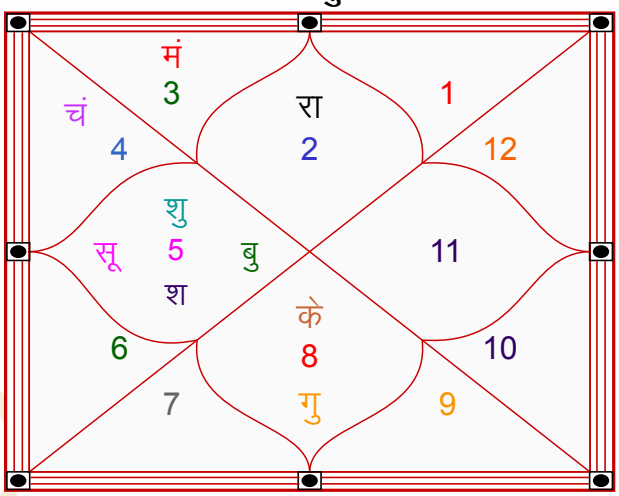

भाव कुंडली

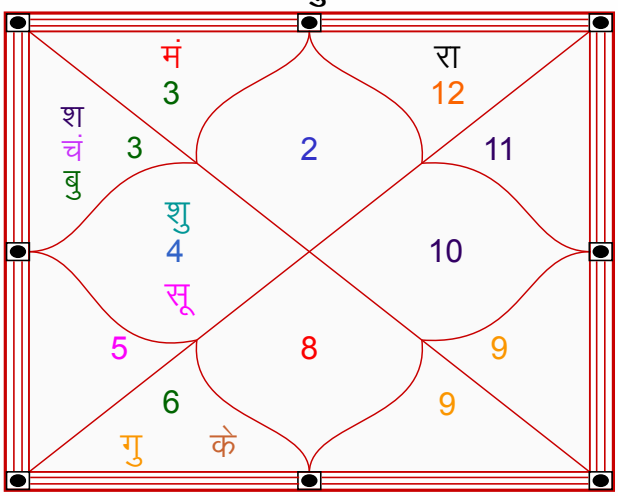

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल	मुदित	प्रकाश	4.00	49 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	स्वस्थ	नेत्रपाणि	8.93	52 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	कुमार	खल	शयन	1.40	55 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	खल	कौतुक	1.32	62 %
गुरु	अमात्य	धन	मृत	खल	कौतुक	2.69	41 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	कुमार	विकल	शयन	1.15	71 %
शनि	मातृ	आयु	कुमार	विकल	प्रकाश	1.01	13 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	मुदित	सभा	0.00	11 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	मुदित	शयन	0.00	11 %
कुल						**20.49**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

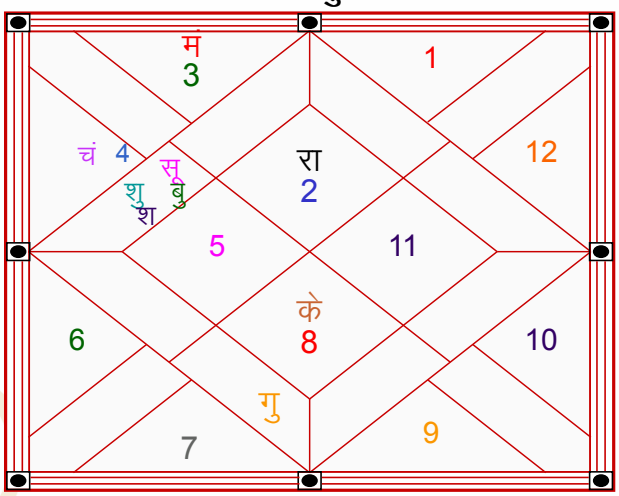

लग्न–चलित

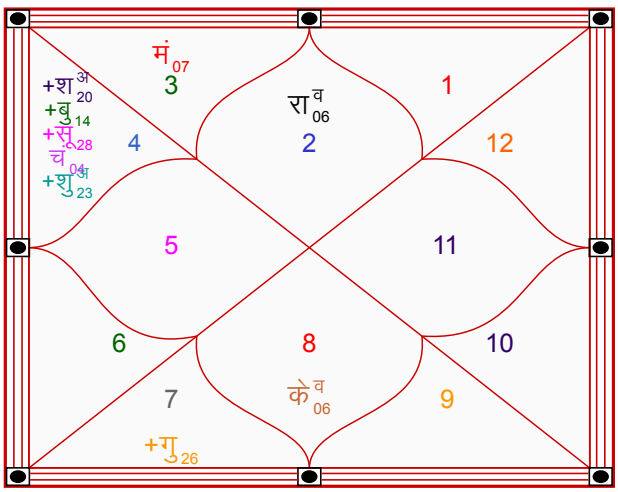

सुदर्शन चक्र

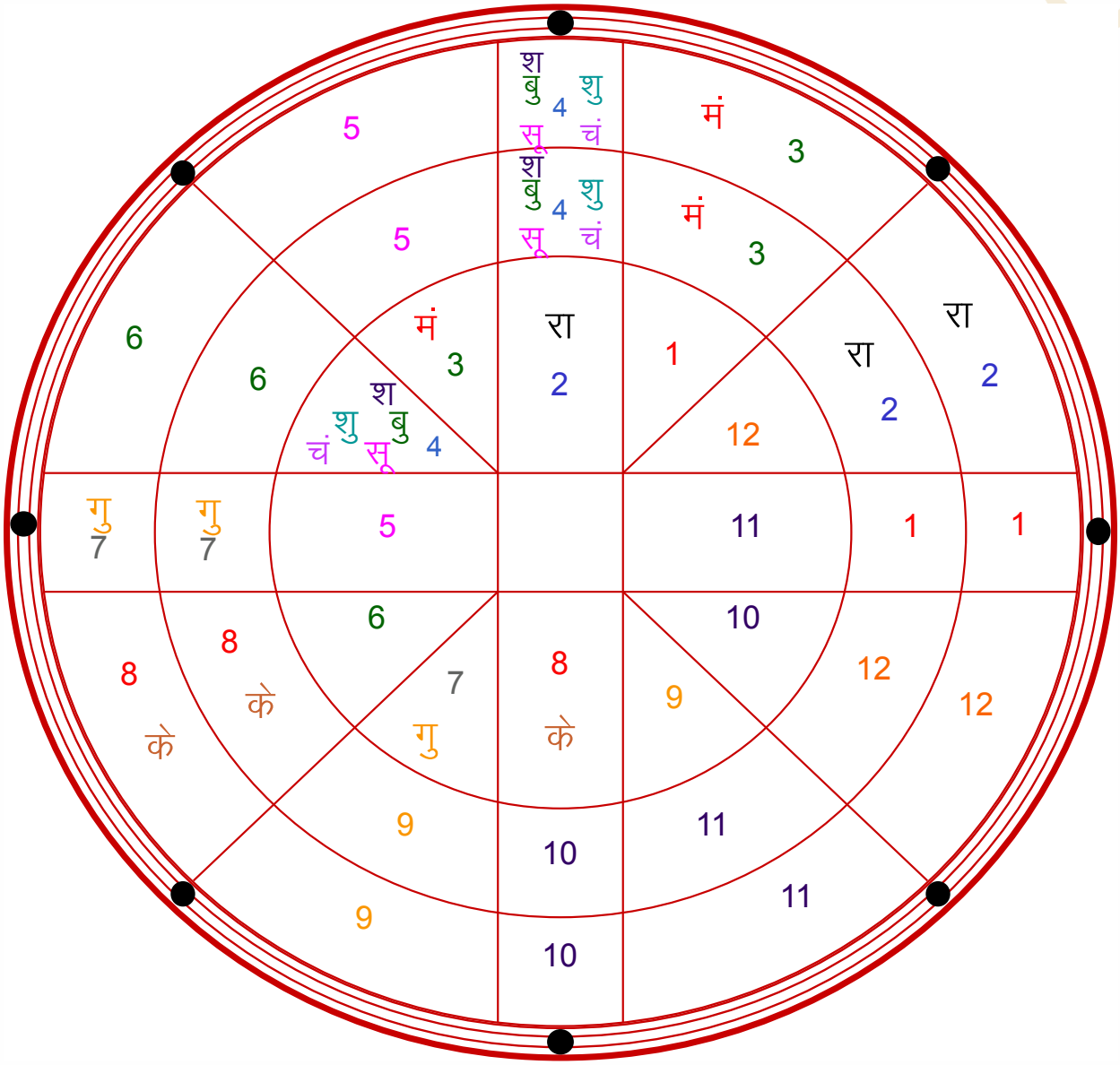

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 17 वर्ष 11 मास 7 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	28:05:08	चंद्र	बुध	शनि	शनि
चंद्र		कर्क	04:04:48	चंद्र	शनि	शनि	केतु
मंगल		मिथु	07:33:10	बुध	राहु	राहु	बुध
बुध		कर्क	13:46:15	चंद्र	शनि	राहु	शनि
गुरु		तुला	25:58:27	शुक्र	गुरु	केतु	सूर्य
शुक्र		कर्क	22:39:28	चंद्र	बुध	चंद्र	गुरु
शनि		कर्क	20:34:10	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
राहु	व	वृष	05:50:21	शुक्र	सूर्य	बुध	सूर्य
केतु	व	वृश्चि	05:50:21	मंगल	शनि	बुध	शुक्र
हर्ष		मिथु	02:09:00	बुध	मंगल	केतु	चंद्र
नेप		कन्या	15:48:14	बुध	चंद्र	शनि	शनि
प्लूटो		कर्क	20:12:17	चंद्र	बुध	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	07:51:24	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शुक्र
2	मिथु	03:27:28	बुध	मंगल	शुक्र	मंगल
3	मिथु	26:39:24	बुध	गुरु	शुक्र	शुक्र
4	कर्क	21:33:23	चंद्र	बुध	सूर्य	सूर्य
5	सिंह	21:42:59	सूर्य	शुक्र	गुरु	राहु
6	कन्या	28:48:02	बुध	मंगल	शनि	शुक्र
7	वृश्चि	07:51:24	मंगल	शनि	केतु	गुरु
8	धनु	03:27:28	गुरु	केतु	सूर्य	बुध
9	धनु	26:39:24	गुरु	शुक्र	केतु	बुध
10	मक	21:33:23	शनि	चंद्र	शुक्र	राहु
11	कुंभ	21:42:59	शनि	गुरु	गुरु	राहु
12	मीन	28:48:02	गुरु	बुध	शनि	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:01:31

फॉरच्युना : मेष 13:51:04

लग्न कुंडली

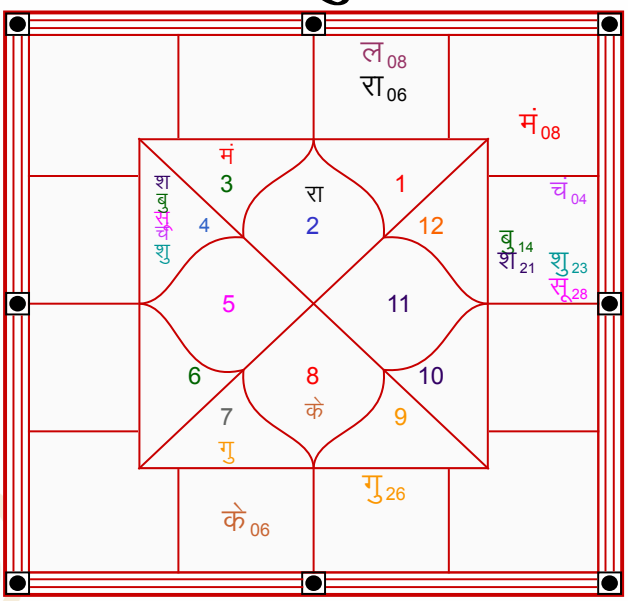

भाव कुंडली

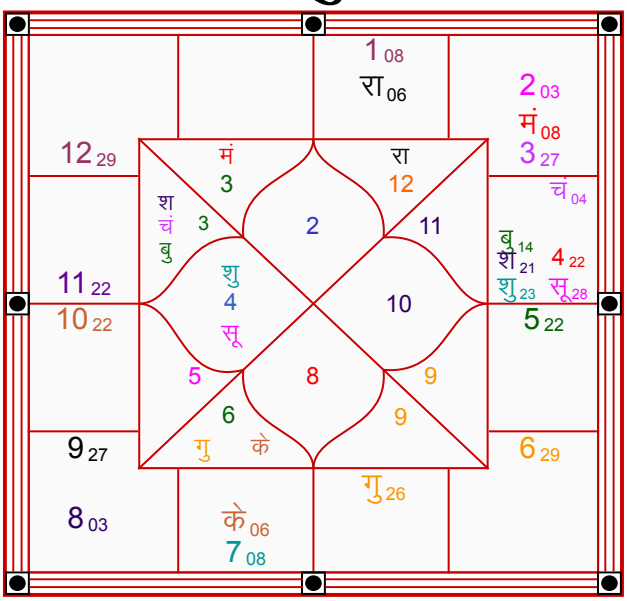

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र–
2	सूर्य– मंगल, बुध– शुक्र– शनि–
3	सूर्य+ चंद्र+ बुध+ शुक्र+ शनि+ केतु,
4	सूर्य, चंद्र– शुक्र, राहु,
5	सूर्य– राहु–
6	सूर्य– बुध– गुरु+ शुक्र– शनि– केतु,
7	मंगल–
8	गुरु,
9	गुरु,
10	चंद्र– बुध– शनि– केतु–
11	चंद्र– बुध– शनि– केतु–
12	मंगल, गुरु, राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 3+ 4, 5- 6-
चंद्र	3+ 4- 10- 11-
मंगल	2, 7- 12,
बुध	2- 3+ 6- 10- 11-
गुरु	6+ 8, 9, 12,
शुक्र	1- 2- 3+ 4, 6-
शनि	2- 3+ 6- 10- 11-
राहु	4, 5- 12,
केतु	3, 6, 10- 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	शु
2	--	मं	सू शु श	बु
3	सू चं बु शु श के	चं बु श	सू शु श	बु
4	रा	सू शु	--	चं
5	--	--	रा	सू
6	गु	गु के	सू शु श	बु
7	--	--	--	मं
8	--	--	गु	गु
9	--	--	गु	गु
10	--	--	चं बु के	श
11	--	--	चं बु के	श
12	मं	रा	गु	गु

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1	कर्क	4
चंद्र	4	10	कर्क	3
मंगल	7	2,6	मिथुन	2
बुध	2,3,6	4,12	कर्क	3
गुरु	8,9,12	3,11	तुला	6
शुक्र	1	5,9	कर्क	4
शनि	10,11	7	कर्क	3
राहु	---	---	वृष	12
केतु	---	8	वृश्चिक	6

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,3,6	4,12	3	10,11	7	3
चंद्र	10,11	7	3	10,11	7	3
मंगल	---	---	12	---	---	12
बुध	10,11	7	3	---	---	12
गुरु	8,9,12	3,11	6	---	8	6
शुक्र	2,3,6	4,12	3	4	10	3
शनि	2,3,6	4,12	3	1	5,9	4
राहु	5	1	4	2,3,6	4,12	3
केतु	10,11	7	3	2,3,6	4,12	3

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	117.99	**93.98**	**67.46**	**103.67**	**205.88**	**112.56**	**110.47**	**35.74**	**215.74**	**62.05**	**165.71**	**110.11**
सूर्य	––	––	––	युति	चतु	युति	युति	––	––	––	––	युति
117.99	0.00	0.00	0.00	0.72	2.55	8.43	7.06	0.00	0.00	0.00	0.00	6.78
चंद्र	––	––	––	युति	––	––	––	––	पंच	––	पंचा	––
93.98	0.00	0.00	0.00	5.28	0.00	0.00	0.00	0.00	2.69	0.00	0.91	0.00
मंगल	––	––	––	––	––	अष्ट	––	––	––	युति	4था	––
67.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.99	0.00	0.00	0.00	8.44	6.49	0.00
बुध	युति	युति	––	––	––	युति	युति	––	––	––	तृती	युति
103.67	0.72	5.28	0.00	0.00	0.00	5.97	7.57	0.00	0.00	0.00	2.59	7.81
गुरु	––	9वां	––	––	––	––	––	सप्त	युति	––	––	––
205.88	0.00	6.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.12	5.12	0.00	0.00	0.00
शुक्र	युति	––	––	युति	चतु	––	युति	––	––	––	––	युति
112.56	8.43	0.00	0.00	5.97	1.94	0.00	9.76	0.00	0.00	0.00	0.00	9.67
शनि	युति	––	––	युति	चतु	युति	––	––	––	––	3रा	युति
110.47	7.06	0.00	0.00	7.57	0.47	9.76	0.00	0.00	0.00	0.00	8.78	9.99
राहु	––	तृती	––	––	सप्त	––	––	––	सप्त	––	––	––
35.74	0.00	2.69	0.00	0.00	5.12	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	––	––	––	––	युति	––	––	सप्त	––	––	––	––
215.74	0.00	0.00	0.00	0.00	5.12	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	तृती	––	युति	––	––	––	––	––	––	––	––	––
62.05	1.46	0.00	8.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	––	––	––	––	नवां	––	––	––	––	––	––	––
165.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	––	––	युति	चतु	युति	युति	––	––	––	तृती	––
110.11	6.78	0.00	0.00	7.81	0.18	9.67	9.99	0.00	0.00	0.00	1.22	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	37.76	62.33	86.89	111.46	146.89	182.33	217.76	242.33	266.89	291.46	326.89	2.33
सूर्य	––	––	––	युति	––	तृती	––	पंच	––	सप्त	––	––
117.99	0.00	0.00	0.00	7.75	0.00	1.26	0.00	1.26	0.00	7.75	0.00	0.00
चंद्र	––	––	युति	––	––	चतु	पंच	––	सप्त	––	––	––
93.98	0.00	0.00	7.37	0.00	0.00	2.72	1.65	0.00	7.37	0.00	0.00	0.00
मंगल	––	युति	––	अष्ट	4था	पंच	षष्ठ	सप्त	8वां	8वां	––	––
67.46	0.00	8.59	0.00	0.01	4.48	0.68	0.89	8.59	4.48	1.04	0.00	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	पंच	––	––	सप्त	––	––
103.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.07	0.00	0.00	6.86	0.00	0.00
गुरु	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति	––	तृती	चतु	5वां	––
205.88	3.21	0.00	9.94	0.00	0.00	0.00	3.21	0.00	2.89	1.21	9.94	0.00
शुक्र	––	––	––	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––
112.56	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00
शनि	––	––	––	युति	––	3रा	––	––	––	सप्त	––	––
110.47	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	3.24	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
राहु	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––
35.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––	––
215.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	––	युति	––	––	चतु	पंच	––	सप्त	––	––	––	––
62.05	0.00	10.00	0.00	0.00	0.65	2.99	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	––	––	––	––	––	––	––	––	––	पंच	––	––
165.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.19	0.00	0.00
प्लूटो	––	––	––	युति	––	पंचा	––	––	––	सप्त	––	––
110.11	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.94	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	37.76	63.36	86.56	111.46	141.62	178.70	217.76	243.36	266.56	291.46	321.62	358.70
सूर्य	––	––	––	युति	––	तृती	––	पंच	––	सप्त	––	––
117.99	0.00	0.00	0.00	7.75	0.00	2.95	0.00	0.49	0.00	7.75	0.00	0.00
चंद्र	––	––	युति	––	––	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	––	––	––
93.98	0.00	0.00	7.13	0.00	0.00	0.56	1.65	0.56	7.13	0.00	0.00	0.00
मंगल	––	युति	––	अष्ट	––	––	षष्ठ	सप्त	8वां	8वां	––	––
67.46	0.00	9.09	0.00	0.01	0.00	0.00	0.89	9.09	4.17	1.04	0.00	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	पंच	––	––	सप्त	––	––
103.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.07	0.00	0.00	6.86	0.00	0.00
गुरु	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति	––	तृती	चतु	5वां	––
205.88	3.21	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	3.21	0.00	2.95	1.21	9.02	0.00
शुक्र	––	––	––	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––
112.56	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00
शनि	––	––	––	युति	––	3रा	––	––	––	सप्त	––	––
110.47	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	6.51	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
राहु	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––
35.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	––	––
215.74	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	––	युति	––	––	––	पंच	––	सप्त	––	––	––	––
62.05	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	1.92	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	––	––	––	––	––	युति	––	––	––	पंच	––	सप्त
165.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.08	0.00	0.00	0.00	0.19	0.00	2.08
प्लूटो	––	––	––	युति	––	––	––	––	––	सप्त	––	––
110.11	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.90	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

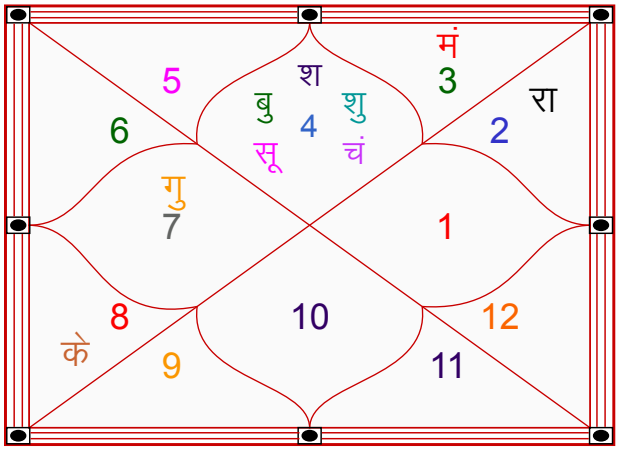

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

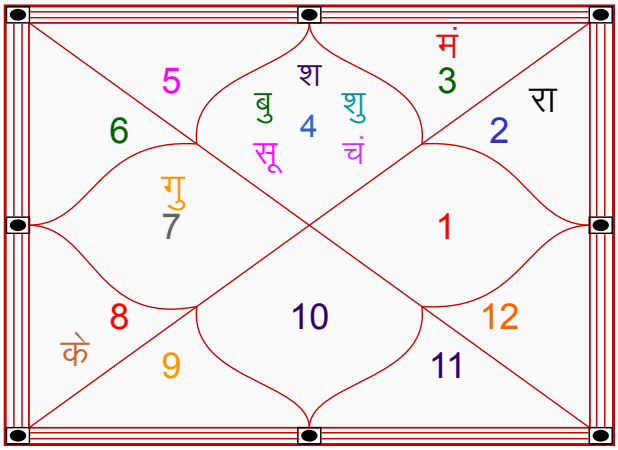

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

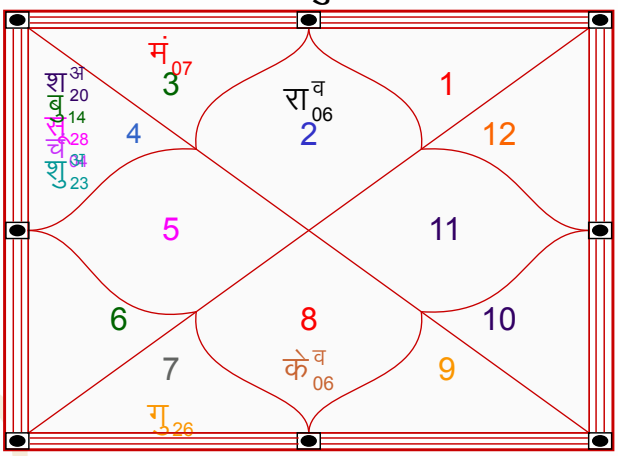

देह विचारः

होरा कुंडली

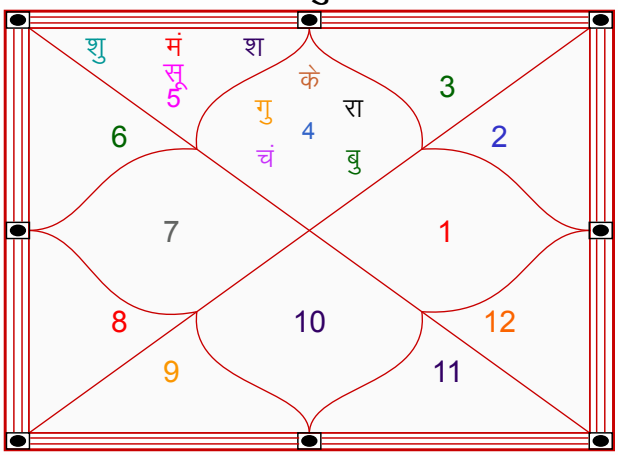

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

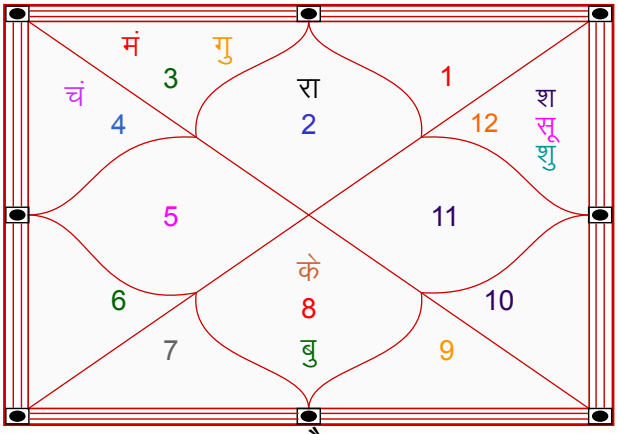

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

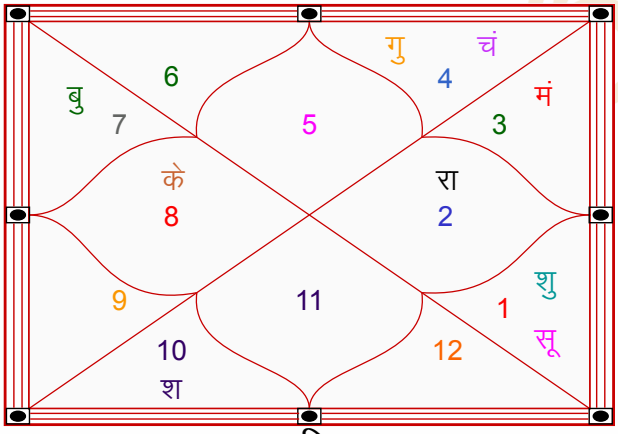

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

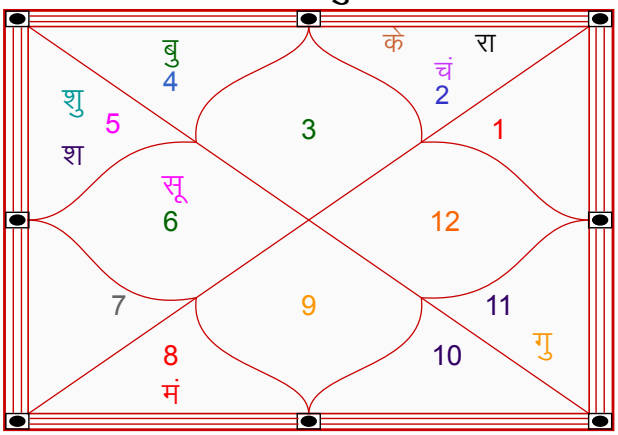

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

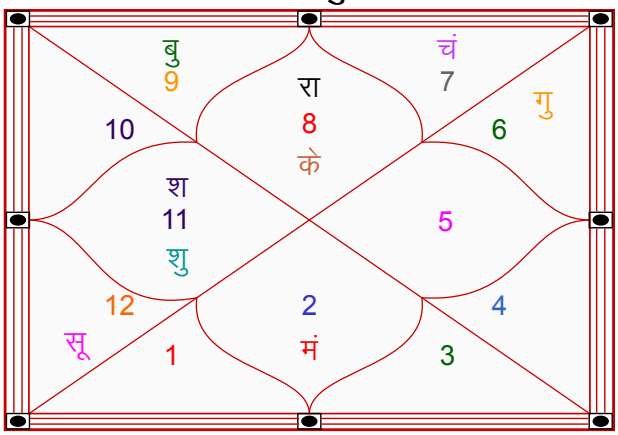

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

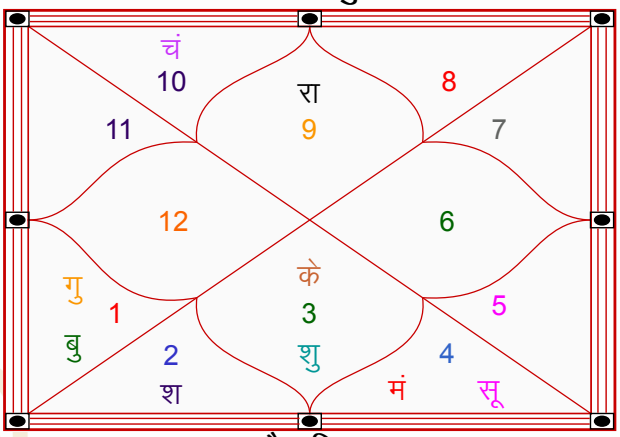

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

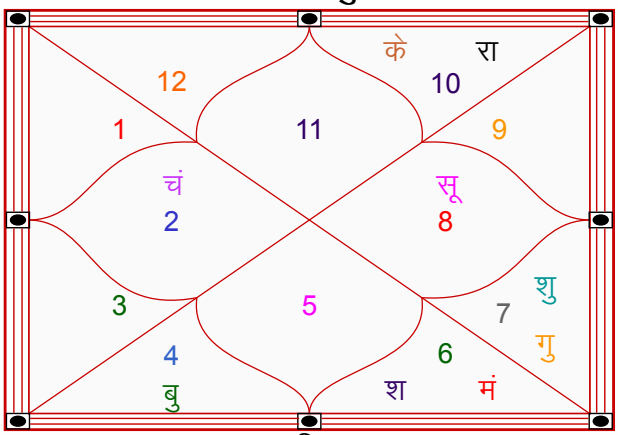

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

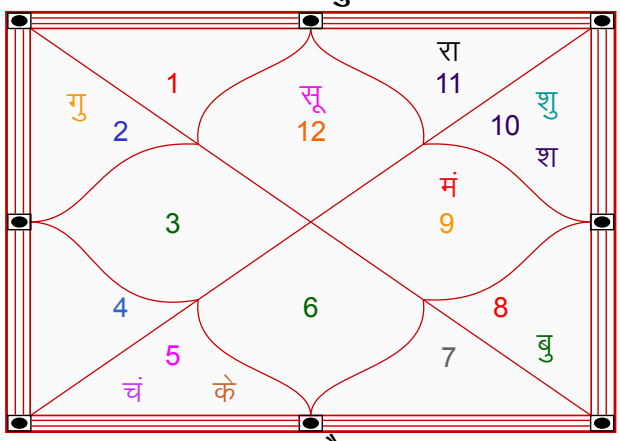

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

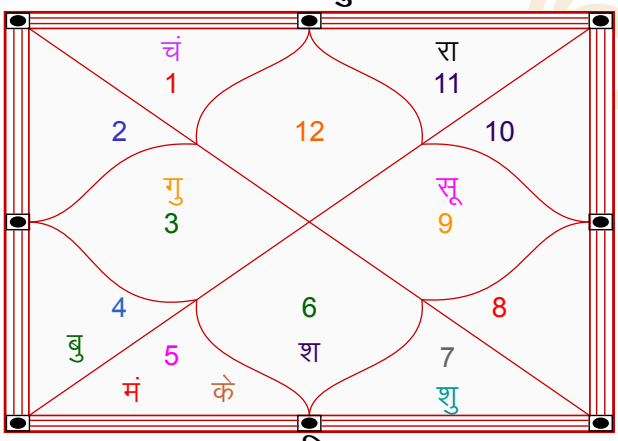

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

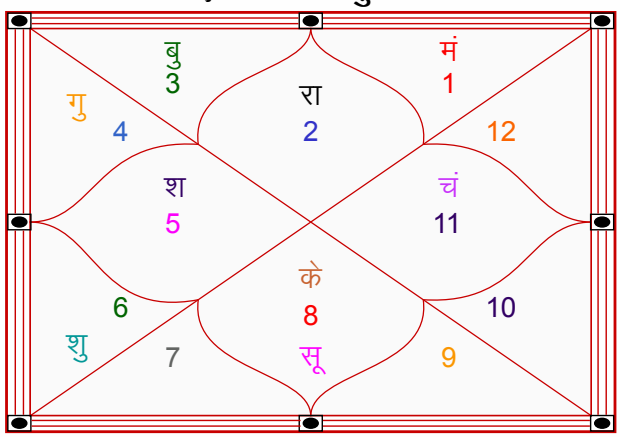

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

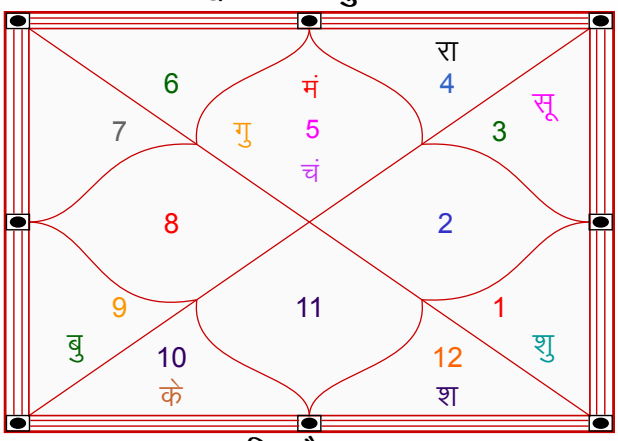

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

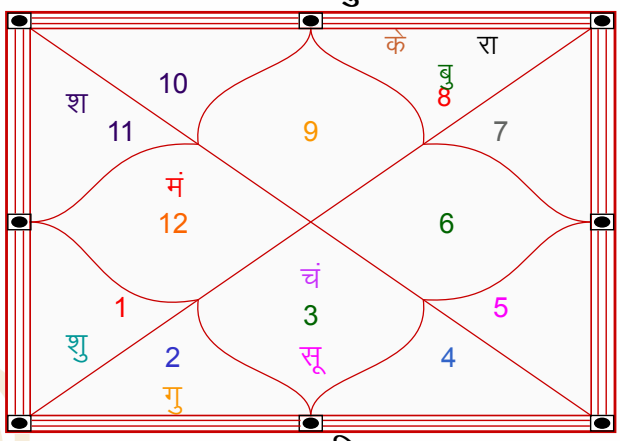

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

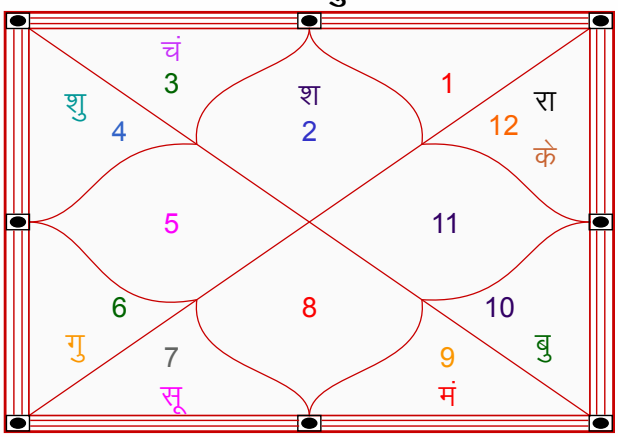

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

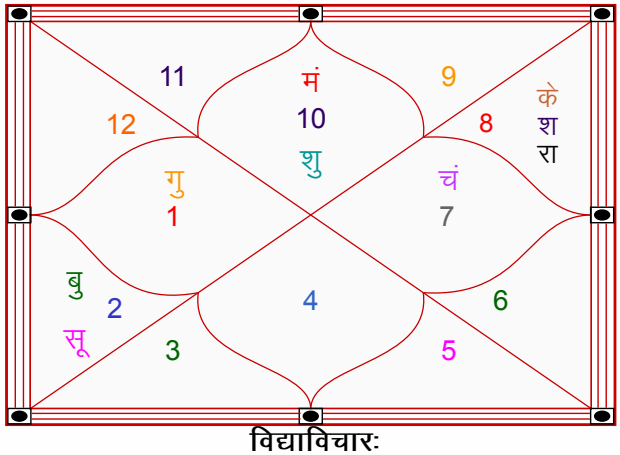

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

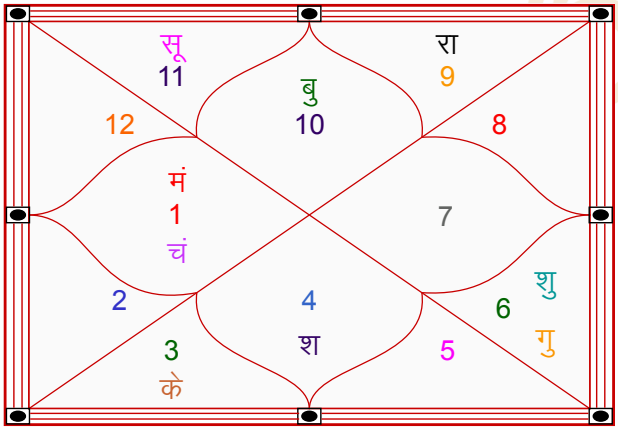

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

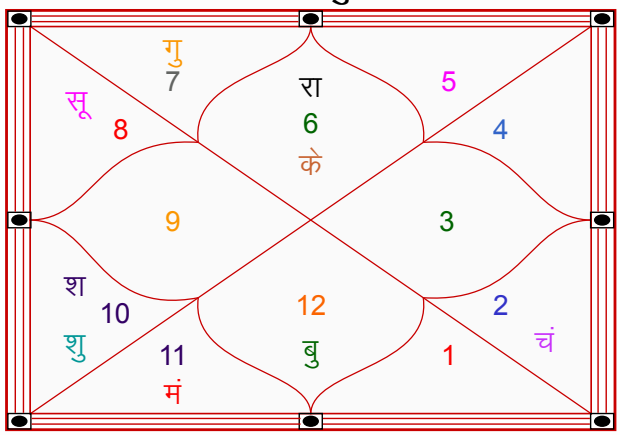

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

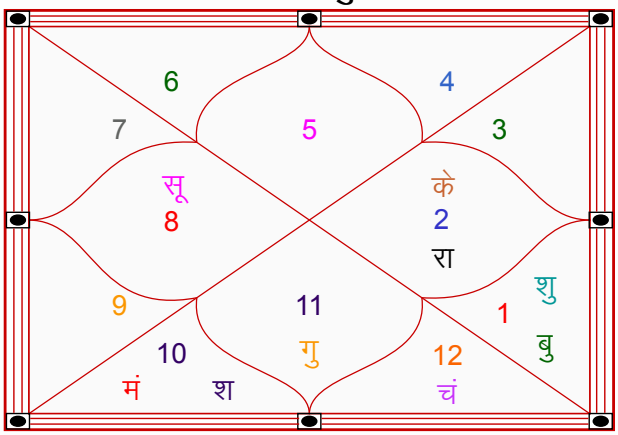

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

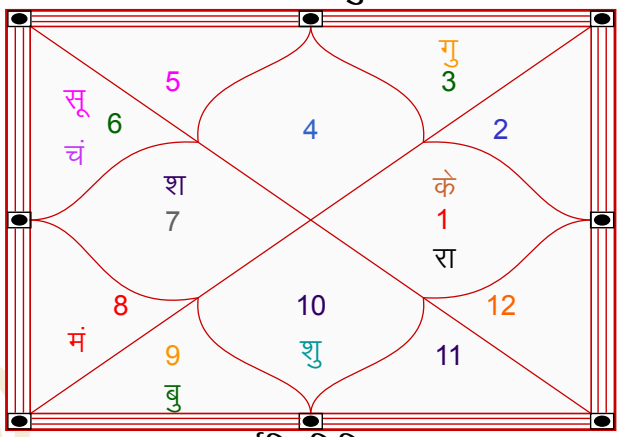

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

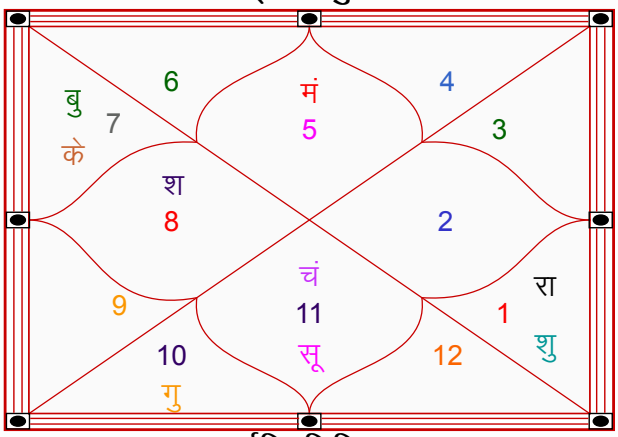

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	कर्क	कर्क	मिथु	कर्क	तुला	कर्क	कर्क	वृष	वृश्चि
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	मीन	कर्क	मिथु	वृश्चि	मिथु	मीन	मीन	वृष	वृश्चि
चतुर्थांश	सिंह	मेष	कर्क	मिथु	तुला	कर्क	मेष	मक	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	धनु	कर्क	मक	कर्क	मेष	मेष	मिथु	वृष	धनु	मिथु
नवमांश	मीन	मीन	सिंह	धनु	वृश्चि	वृष	मक	मक	कुंभ	सिंह
दशमांश	मीन	धनु	मेष	सिंह	कर्क	मिथु	तुला	कन्या	कुंभ	सिंह
द्वादशांश	सिंह	मिथु	सिंह	सिंह	धनु	सिंह	मेष	मीन	कर्क	मक
षोडशांश	धनु	मिथु	मिथु	मीन	वृश्चि	वृष	मेष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	वृष	तुला	मिथु	धनु	मक	कन्या	कर्क	वृष	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	मक	वृष	तुला	मक	वृष	मेष	मक	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	मक	कुंभ	मेष	मेष	मक	कन्या	कन्या	कर्क	धनु	मिथु
त्रिंशांश	कन्या	वृश्चि	वृष	कुंभ	मीन	तुला	मक	मक	कन्या	कन्या
खवेदांश	सिंह	वृश्चि	मीन	मक	मेष	कुंभ	मेष	मक	वृष	वृष
अक्षवेदांश	कर्क	कन्या	कन्या	वृश्चि	धनु	मिथु	मक	तुला	मेष	मेष
षष्ट्यंश	सिंह	कुंभ	कुंभ	सिंह	तुला	मक	मेष	वृश्चि	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ———	1 ———	1 ———	2 भेदक
चन्द्र	4 चामर	4 चामर	4 गोपुर	5 कन्दुक
मंगल	0 ———	0 ———	0 ———	4 नागपुष्प
बुध	0 ———	0 ———	0 ———	0 ———
गुरु	1 ———	1 ———	1 ———	2 भेदक
शुक्र	1 ———	1 ———	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
राहु	1 ———	1 ———	1 ———	1 ———
केतु	0 ———	0 ———	0 ———	1 ———

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.70	15.85	11.85	11.00	11.60	9.50	12.50	16.25	7.60
सप्तवर्ग	14.10	14.48	12.85	11.50	11.60	9.50	12.25	14.88	7.35
दशवर्ग	11.45	12.18	14.78	10.75	12.45	12.00	11.88	13.15	8.05
षोडशवर्ग	11.28	12.48	13.60	10.85	11.93	11.13	12.63	13.63	8.58

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	———	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	———	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	———	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	———	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	———	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	———	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	———	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	———	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	———	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	सम	———	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	———

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	24.0	39.7	16.8	39.6	23.0	21.5	30.2
सप्तवर्गज बल	116.3	112.5	105.0	78.8	82.5	56.3	101.3
ओजयुग्मक बल	0.0	15.0	30.0	0.0	15.0	30.0	0.0
केन्द्र बल	15.0	15.0	30.0	15.0	15.0	15.0	15.0
द्रेष्काण बल	0.0	0.0	15.0	15.0	0.0	15.0	0.0
कुल स्थान बल	155.3	182.2	196.8	148.3	135.5	137.7	146.4
कुल दिग्बल	2.2	54.2	14.7	38.0	4.0	59.6	24.2
नतोन्नत बल	2.2	57.8	57.8	60.0	2.2	2.2	57.8
पक्ष बल	52.0	104.0	52.0	52.0	8.0	8.0	52.0
त्रिभाग बल	0.0	0.0	0.0	0.0	60.0	60.0	0.0
अब्द बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	15.0	0.0
मास बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	30.0	0.0
वार बल	0.0	0.0	0.0	0.0	45.0	0.0	0.0
होरा बल	0.0	0.0	0.0	60.0	0.0	0.0	0.0
अयन बल	97.7	3.3	60.0	54.0	7.4	51.0	8.3
युद्ध बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
कुल कालबल	151.8	165.1	169.8	226.0	122.5	166.1	118.1
कुल चेष्टाबल	0.0	0.0	24.6	15.3	31.4	2.7	4.2
कुल नैसर्गिक बल	60.0	51.4	17.1	25.7	34.3	42.9	8.6
कुल दृग्बल	0.9	14.0	9.8	12.0	-31.6	9.8	10.3
कुल षट्बल	370.2	466.9	432.9	465.4	296.2	418.8	311.8
रूप षट्बल	6.2	7.8	7.2	7.8	4.9	7.0	5.2
न्यूनतम आवश्यकता	5.0	6.0	5.0	7.0	6.5	5.5	5.0
अनुपात	1.2	1.3	1.4	1.1	0.8	1.3	1.0
संबंधित पद	4	2	1	5	7	3	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	32.11	17.82	20.36	24.61	26.92	7.65	11.22
कष्ट फल	24.76	32.51	39.08	30.22	32.49	46.97	40.82

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	418.8	465.4	465.4	466.9	370.2	418.8	432.9	296.2	296.2	311.8	311.8	432.9
भावदिग्बल	30.0	50.0	40.0	60.0	10.0	10.0	60.0	10.0	50.0	0.0	40.0	40.0
भावदृष्टि बल	43.5	41.8	59.5	45.5	-5.1	-5.7	16.5	-4.2	17.1	58.5	72.8	22.3
कुल भाव बल	492.3	557.1	564.9	572.4	375.0	423.1	509.4	302.0	363.3	370.3	424.6	495.2
रूप भाव बल	8.2	9.3	9.4	9.5	6.3	7.1	8.5	5.0	6.1	6.2	7.1	8.3
संबंधित पद	6.0	3.0	2.0	1.0	9.0	8.0	4.0	12.0	11.0	10.0	7.0	5.0

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	07:45:37	––	––	कृतिका	4	3
गुलिक	गु	मिथु	05:41:38	––	––	मृगशिरा	4	5
काल	का	मिथु	23:31:16	––	––	पुनर्वसु	2	7
मृत्यु	मृ	कुंभ	27:50:23	––	––	पू०भाद्रपद	3	25
यमघंटक	यम	मेष	23:15:49	––	––	भरणी	3	2
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मीन	26:54:42	––	––	रेवती	4	27
धूम	धू	धनु	11:19:21	––	––	मूल	4	19
व्यतिपात	व्य	कर्क	18:40:39	––	––	आश्लेषा	1	9
परिवेश	परि	मक	18:40:39	––	––	श्रवण	3	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	11:19:21	नीच	––	आर्द्रा	2	6
उपकेतु	उप	मिथु	27:59:21	––	––	पुनर्वसु	3	7
मांदी	मांदी	मिथु	21:23:28	––	––	पुनर्वसु	1	7

प्राणपद	:	कन्या	21:58:57	कारकाँश लग्न	:	मीन	11:54:06
भाव लग्न	:	कुंभ	10:27:35	होरा लग्न	:	वृश्चि	13:09:34
घटी लग्न	:	वृष	11:29:15	वर्णद लग्न	:	धनु	20:55:11

उपग्रह कुंडली

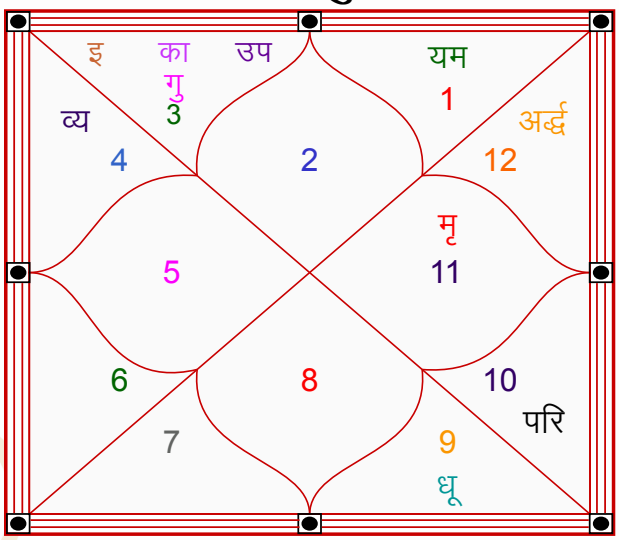

आरूढ़ कुंडली

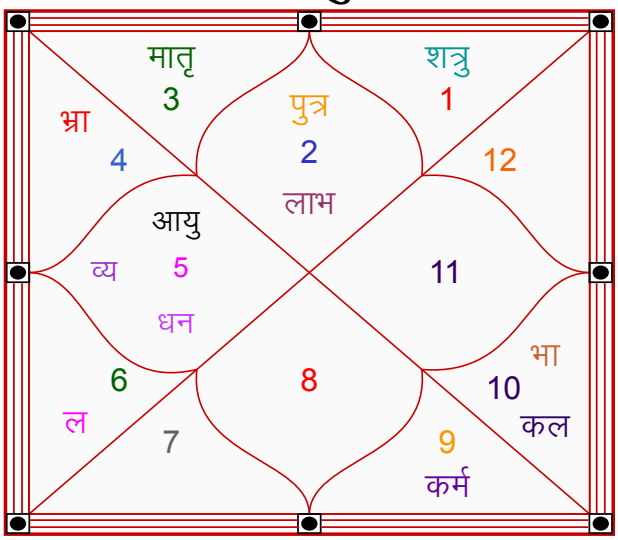

षन्नाडी चक्र

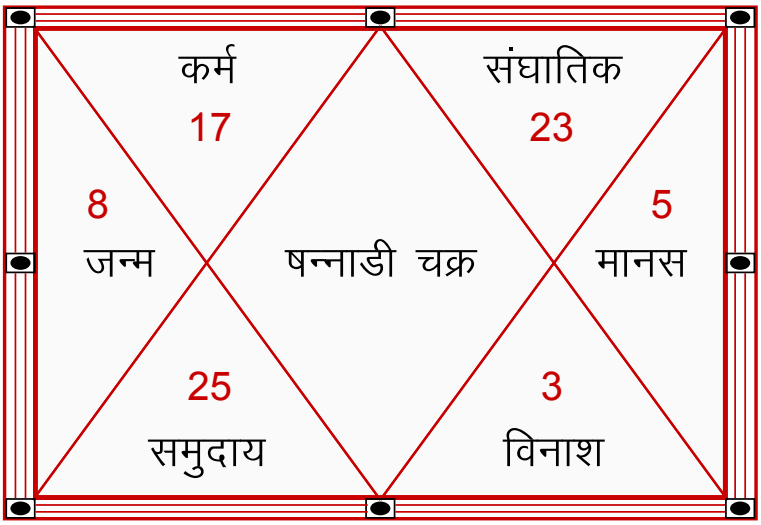

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
कुल	**4**	**4**	**3**	**3**	**1**	**4**	**4**	**5**	**6**	**6**	**4**	**4**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	**5**	**2**	**5**	**5**	**5**	**3**	**5**	**3**	**4**	**6**	**6**	**0**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	**2**	**4**	**1**	**5**	**2**	**2**	**5**	**2**	**3**	**4**	**3**	**6**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
कुल	**4**	**5**	**4**	**4**	**3**	**5**	**2**	**5**	**7**	**4**	**7**	**4**	**54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	**4**	**6**	**5**	**5**	**2**	**6**	**5**	**6**	**3**	**4**	**6**	**4**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
कुल	**4**	**5**	**6**	**3**	**5**	**2**	**1**	**6**	**5**	**3**	**8**	**4**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	**2**	**4**	**3**	**3**	**2**	**4**	**1**	**4**	**4**	**3**	**7**	**2**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**4**	**5**	**4**	**4**	**6**	**3**	**4**	**1**	**4**	**4**	**6**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	7	2	2	4	3	3	2	4	1	4	4	39
गुरु	5	6	3	4	6	4	4	6	5	5	2	6	56
मंगल	3	6	2	4	1	5	2	2	5	2	3	4	39
सूर्य	6	4	4	4	4	3	3	1	4	4	5	6	48
शुक्र	3	8	4	4	5	6	3	5	2	1	6	5	52
बुध	4	7	4	4	5	4	4	3	5	2	5	7	54
चंद्र	6	6	0	5	2	5	5	5	3	5	3	4	49
बिन्दु	30	44	19	27	27	30	24	24	28	20	28	36	337
रेखा	26	12	37	29	29	26	32	32	28	36	28	20	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	6	0	0	1	2	1	0	1	0	2	2	15
गुरु	0	2	1	0	1	0	2	2	0	1	0	2	11
मंगल	2	4	0	2	0	3	0	0	4	0	1	2	18
सूर्य	2	1	1	3	0	0	0	0	0	1	2	5	15
शुक्र	1	7	1	0	3	5	0	1	0	0	3	1	22
बुध	0	5	0	1	1	2	0	0	1	0	1	4	15
चंद्र	4	1	0	1	0	0	5	1	1	0	3	0	16
रेखा	9	26	3	7	6	12	8	4	7	2	12	16	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	5	0	0	1	2	1	0	1	0	2	1	13
गुरु	0	0	1	0	1	0	2	2	0	1	0	2	9
मंगल	2	4	0	2	0	3	0	0	2	0	1	2	16
सूर्य	2	1	1	3	0	0	0	0	0	1	1	5	14
शुक्र	0	7	1	0	3	4	0	0	0	0	3	1	19
बुध	0	5	0	1	1	2	0	0	1	0	1	3	14
चंद्र	3	0	0	1	0	0	5	1	1	0	3	0	14
रेखा	7	22	3	7	6	11	8	3	5	2	11	14	99

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	120	110	130	130	77	173	120
ग्रह पिंड	89	77	54	27	28	8	10
शोध्य पिंड	209	187	184	157	105	181	130

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

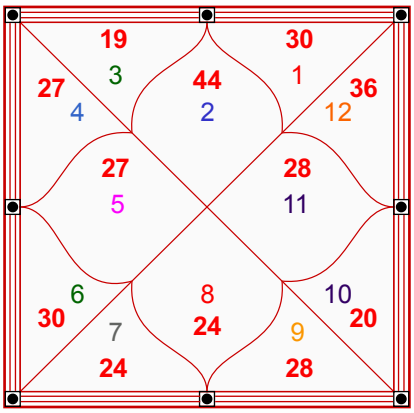

सूर्य का अष्टकवर्ग

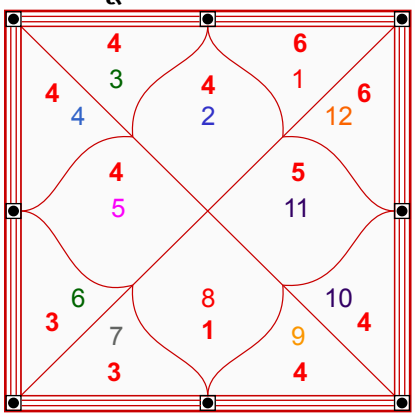

चंद्र का अष्टकवर्ग

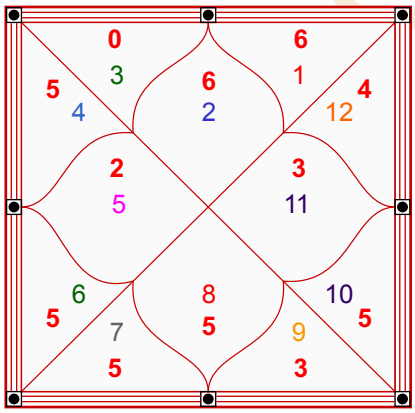

मंगल का अष्टकवर्ग

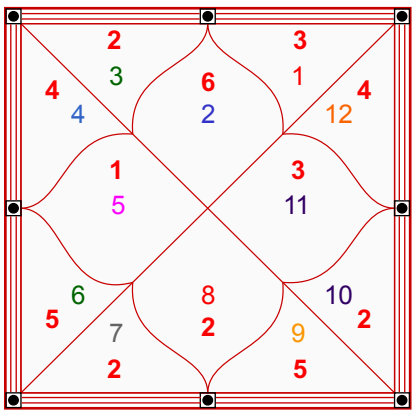

बुध का अष्टकवर्ग

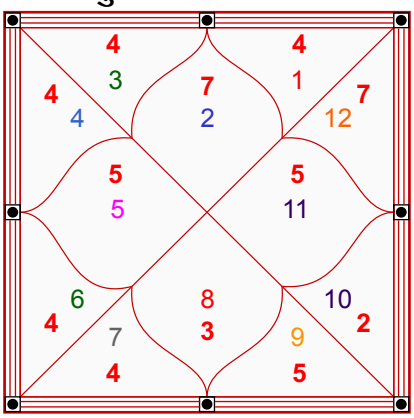

गुरू का अष्टकवर्ग

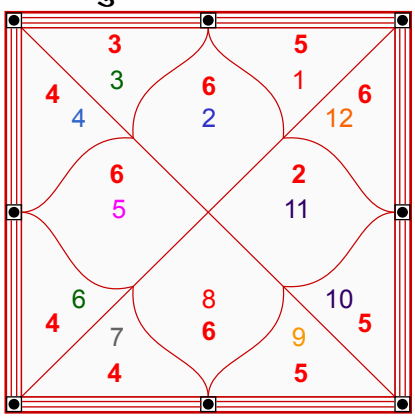

शुक्र का अष्टकवर्ग

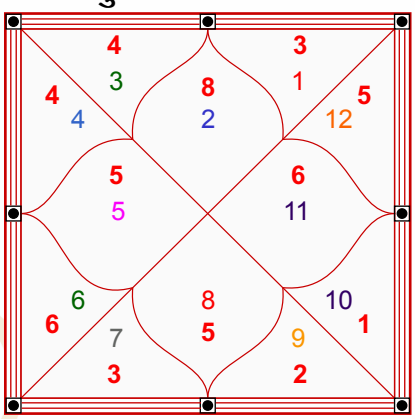

शनि का अष्टकवर्ग

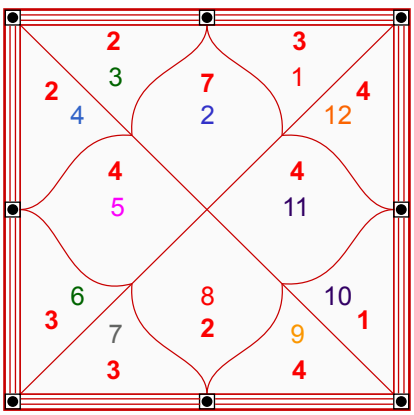

लग्न का अष्टकवर्ग

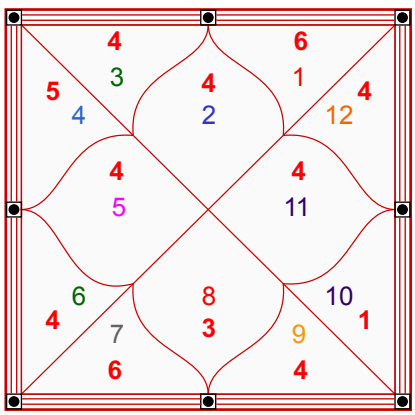

Astro Mantra Institution (P) Ltd.
422, 4th First Floor, City Center Malll, Dwarka Sec-12, New Delhi-110075
Phone: 011-45516122, 41759797, +91-9681 600 600
www.astromantra.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 18 वर्ष 0 मास 26 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
15/08/1947		10/09/1965		10/09/1982		10/09/1989		10/09/2009	
10/09/1965		10/09/1982		10/09/1989		10/09/2009		10/09/2015	
शनि	13/09/1949	बुध	06/02/1968	केतु	06/02/1983	शुक्र	09/01/1993	सूर्य	28/12/2009
बुध	23/05/1952	केतु	03/02/1969	शुक्र	07/04/1984	सूर्य	10/01/1994	चंद्र	29/06/2010
केतु	02/07/1953	शुक्र	05/12/1971	सूर्य	13/08/1984	चंद्र	10/09/1995	मंगल	04/11/2010
शुक्र	31/08/1956	सूर्य	10/10/1972	चंद्र	14/03/1985	मंगल	09/11/1996	राहु	29/09/2011
सूर्य	13/08/1957	चंद्र	11/03/1974	मंगल	10/08/1985	राहु	10/11/1999	गुरु	17/07/2012
चंद्र	15/03/1959	मंगल	09/03/1975	राहु	29/08/1986	गुरु	11/07/2002	शनि	29/06/2013
मंगल	23/04/1960	राहु	25/09/1977	गुरु	05/08/1987	शनि	10/09/2005	बुध	05/05/2014
राहु	28/02/1963	गुरु	01/01/1980	शनि	13/09/1988	बुध	11/07/2008	केतु	10/09/2014
गुरु	10/09/1965	शनि	10/09/1982	बुध	10/09/1989	केतु	10/09/2009	शुक्र	10/09/2015

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
10/09/2015		10/09/2025		10/09/2032		10/09/2050		10/09/2066	
10/09/2025		10/09/2032		10/09/2050		10/09/2066		00/00/0000	
चंद्र	11/07/2016	मंगल	06/02/2026	राहु	24/05/2035	गुरु	28/10/2052	शनि	15/08/2067
मंगल	09/02/2017	राहु	24/02/2027	गुरु	16/10/2037	शनि	12/05/2055		00/00/0000
राहु	11/08/2018	गुरु	31/01/2028	शनि	22/08/2040	बुध	16/08/2057		00/00/0000
गुरु	11/12/2019	शनि	11/03/2029	बुध	12/03/2043	केतु	23/07/2058		00/00/0000
शनि	11/07/2021	बुध	08/03/2030	केतु	29/03/2044	शुक्र	23/03/2061		00/00/0000
बुध	10/12/2022	केतु	05/08/2030	शुक्र	30/03/2047	सूर्य	10/01/2062		00/00/0000
केतु	11/07/2023	शुक्र	05/10/2031	सूर्य	22/02/2048	चंद्र	12/05/2063		00/00/0000
शुक्र	11/03/2025	सूर्य	09/02/2032	चंद्र	23/08/2049	मंगल	16/04/2064		00/00/0000
सूर्य	10/09/2025	चंद्र	10/09/2032	मंगल	10/09/2050	राहु	10/09/2066		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 18 वर्ष 0 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि	
15/08/1947	
13/09/1949	
	00/00/0000
	15/08/1947
केतु	09/10/1947
शुक्र	09/04/1948
सूर्य	03/06/1948
चंद्र	02/09/1948
मंगल	06/11/1948
राहु	19/04/1949
गुरु	13/09/1949

शनि - बुध	
13/09/1949	
23/05/1952	
बुध	30/01/1950
केतु	28/03/1950
शुक्र	08/09/1950
सूर्य	27/10/1950
चंद्र	17/01/1951
मंगल	16/03/1951
राहु	10/08/1951
गुरु	19/12/1951
शनि	23/05/1952

शनि - केतु	
23/05/1952	
02/07/1953	
केतु	16/06/1952
शुक्र	22/08/1952
सूर्य	11/09/1952
चंद्र	15/10/1952
मंगल	08/11/1952
राहु	07/01/1953
गुरु	02/03/1953
शनि	05/05/1953
बुध	02/07/1953

शनि - शुक्र	
02/07/1953	
31/08/1956	
शुक्र	11/01/1954
सूर्य	09/03/1954
चंद्र	14/06/1954
मंगल	20/08/1954
राहु	10/02/1955
गुरु	14/07/1955
शनि	13/01/1956
बुध	25/06/1956
केतु	31/08/1956

शनि - सूर्य	
31/08/1956	
13/08/1957	
सूर्य	18/09/1956
चंद्र	17/10/1956
मंगल	06/11/1956
राहु	28/12/1956
गुरु	12/02/1957
शनि	08/04/1957
बुध	27/05/1957
केतु	17/06/1957
शुक्र	13/08/1957

शनि - चंद्र	
13/08/1957	
15/03/1959	
चंद्र	01/10/1957
मंगल	03/11/1957
राहु	29/01/1958
गुरु	16/04/1958
शनि	17/07/1958
बुध	07/10/1958
केतु	09/11/1958
शुक्र	14/02/1959
सूर्य	15/03/1959

शनि - मंगल	
15/03/1959	
23/04/1960	
मंगल	07/04/1959
राहु	07/06/1959
गुरु	31/07/1959
शनि	03/10/1959
बुध	29/11/1959
केतु	23/12/1959
शुक्र	29/02/1960
सूर्य	20/03/1960
चंद्र	23/04/1960

शनि - राहु	
23/04/1960	
28/02/1963	
राहु	26/09/1960
गुरु	11/02/1961
शनि	26/07/1961
बुध	21/12/1961
केतु	19/02/1962
शुक्र	12/08/1962
सूर्य	03/10/1962
चंद्र	29/12/1962
मंगल	28/02/1963

शनि - गुरु	
28/02/1963	
10/09/1965	
गुरु	01/07/1963
शनि	24/11/1963
बुध	03/04/1964
केतु	27/05/1964
शुक्र	29/10/1964
सूर्य	14/12/1964
चंद्र	01/03/1965
मंगल	24/04/1965
राहु	10/09/1965

बुध - बुध	
10/09/1965	
06/02/1968	
बुध	12/01/1966
केतु	05/03/1966
शुक्र	29/07/1966
सूर्य	11/09/1966
चंद्र	24/11/1966
मंगल	14/01/1967
राहु	26/05/1967
गुरु	20/09/1967
शनि	06/02/1968

बुध - केतु	
06/02/1968	
03/02/1969	
केतु	28/02/1968
शुक्र	28/04/1968
सूर्य	16/05/1968
चंद्र	15/06/1968
मंगल	06/07/1968
राहु	30/08/1968
गुरु	17/10/1968
शनि	13/12/1968
बुध	03/02/1969

बुध - शुक्र	
03/02/1969	
05/12/1971	
शुक्र	25/07/1969
सूर्य	15/09/1969
चंद्र	10/12/1969
मंगल	08/02/1970
राहु	14/07/1970
गुरु	29/11/1970
शनि	12/05/1971
बुध	05/10/1971
केतु	05/12/1971

बुध - सूर्य	
05/12/1971	
10/10/1972	
सूर्य	20/12/1971
चंद्र	15/01/1972
मंगल	02/02/1972
राहु	20/03/1972
गुरु	30/04/1972
शनि	18/06/1972
बुध	01/08/1972
केतु	19/08/1972
शुक्र	10/10/1972

बुध - चंद्र	
10/10/1972	
11/03/1974	
चंद्र	22/11/1972
मंगल	22/12/1972
राहु	10/03/1973
गुरु	18/05/1973
शनि	08/08/1973
बुध	20/10/1973
केतु	19/11/1973
शुक्र	14/02/1974
सूर्य	11/03/1974

बुध - मंगल	
11/03/1974	
09/03/1975	
मंगल	02/04/1974
राहु	26/05/1974
गुरु	13/07/1974
शनि	09/09/1974
बुध	30/10/1974
केतु	20/11/1974
शुक्र	19/01/1975
सूर्य	06/02/1975
चंद्र	09/03/1975

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु	
09/03/1975	
25/09/1977	
राहु	26/07/1975
गुरु	28/11/1975
शनि	23/04/1976
बुध	02/09/1976
केतु	26/10/1976
शुक्र	31/03/1977
सूर्य	16/05/1977
चंद्र	02/08/1977
मंगल	25/09/1977

बुध - गुरु	
25/09/1977	
01/01/1980	
गुरु	13/01/1978
शनि	25/05/1978
बुध	19/09/1978
केतु	06/11/1978
शुक्र	24/03/1979
सूर्य	04/05/1979
चंद्र	12/07/1979
मंगल	30/08/1979
राहु	01/01/1980

बुध - शनि	
01/01/1980	
10/09/1982	
शनि	05/06/1980
बुध	22/10/1980
केतु	18/12/1980
शुक्र	31/05/1981
सूर्य	19/07/1981
चंद्र	09/10/1981
मंगल	06/12/1981
राहु	02/05/1982
गुरु	10/09/1982

केतु - केतु	
10/09/1982	
06/02/1983	
केतु	19/09/1982
शुक्र	14/10/1982
सूर्य	21/10/1982
चंद्र	03/11/1982
मंगल	11/11/1982
राहु	04/12/1982
गुरु	23/12/1982
शनि	16/01/1983
बुध	06/02/1983

केतु - शुक्र	
06/02/1983	
07/04/1984	
शुक्र	18/04/1983
सूर्य	10/05/1983
चंद्र	14/06/1983
मंगल	09/07/1983
राहु	11/09/1983
गुरु	07/11/1983
शनि	13/01/1984
बुध	13/03/1984
केतु	07/04/1984

केतु - सूर्य	
07/04/1984	
13/08/1984	
सूर्य	14/04/1984
चंद्र	24/04/1984
मंगल	02/05/1984
राहु	21/05/1984
गुरु	07/06/1984
शनि	27/06/1984
बुध	15/07/1984
केतु	23/07/1984
शुक्र	13/08/1984

केतु - चंद्र	
13/08/1984	
14/03/1985	
चंद्र	31/08/1984
मंगल	12/09/1984
राहु	14/10/1984
गुरु	12/11/1984
शनि	15/12/1984
बुध	15/01/1985
केतु	27/01/1985
शुक्र	04/03/1985
सूर्य	14/03/1985

केतु - मंगल	
14/03/1985	
10/08/1985	
मंगल	23/03/1985
राहु	14/04/1985
गुरु	04/05/1985
शनि	28/05/1985
बुध	18/06/1985
केतु	27/06/1985
शुक्र	21/07/1985
सूर्य	29/07/1985
चंद्र	10/08/1985

केतु - राहु	
10/08/1985	
29/08/1986	
राहु	07/10/1985
गुरु	27/11/1985
शनि	27/01/1986
बुध	22/03/1986
केतु	13/04/1986
शुक्र	16/06/1986
सूर्य	06/07/1986
चंद्र	07/08/1986
मंगल	29/08/1986

केतु - गुरु	
29/08/1986	
05/08/1987	
गुरु	13/10/1986
शनि	06/12/1986
बुध	24/01/1987
केतु	12/02/1987
शुक्र	10/04/1987
सूर्य	27/04/1987
चंद्र	26/05/1987
मंगल	15/06/1987
राहु	05/08/1987

केतु - शनि	
05/08/1987	
13/09/1988	
शनि	08/10/1987
बुध	04/12/1987
केतु	28/12/1987
शुक्र	04/03/1988
सूर्य	25/03/1988
चंद्र	27/04/1988
मंगल	21/05/1988
राहु	21/07/1988
गुरु	13/09/1988

केतु - बुध	
13/09/1988	
10/09/1989	
बुध	03/11/1988
केतु	24/11/1988
शुक्र	23/01/1989
सूर्य	11/02/1989
चंद्र	13/03/1989
मंगल	03/04/1989
राहु	27/05/1989
गुरु	14/07/1989
शनि	10/09/1989

शुक्र - शुक्र	
10/09/1989	
09/01/1993	
शुक्र	01/04/1990
सूर्य	01/06/1990
चंद्र	10/09/1990
मंगल	20/11/1990
राहु	22/05/1991
गुरु	31/10/1991
शनि	11/05/1992
बुध	30/10/1992
केतु	09/01/1993

शुक्र - सूर्य	
09/01/1993	
10/01/1994	
सूर्य	28/01/1993
चंद्र	27/02/1993
मंगल	20/03/1993
राहु	14/05/1993
गुरु	02/07/1993
शनि	29/08/1993
बुध	19/10/1993
केतु	10/11/1993
शुक्र	10/01/1994

शुक्र - चंद्र	
10/01/1994	
10/09/1995	
चंद्र	01/03/1994
मंगल	06/04/1994
राहु	06/07/1994
गुरु	25/09/1994
शनि	31/12/1994
बुध	27/03/1995
केतु	01/05/1995
शुक्र	11/08/1995
सूर्य	10/09/1995

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल	
10/09/1995	
09/11/1996	
मंगल	05/10/1995
राहु	08/12/1995
गुरु	03/02/1996
शनि	10/04/1996
बुध	10/06/1996
केतु	05/07/1996
शुक्र	14/09/1996
सूर्य	05/10/1996
चंद्र	09/11/1996

शुक्र - राहु	
09/11/1996	
10/11/1999	
राहु	23/04/1997
गुरु	16/09/1997
शनि	08/03/1998
बुध	11/08/1998
केतु	14/10/1998
शुक्र	14/04/1999
सूर्य	08/06/1999
चंद्र	07/09/1999
मंगल	10/11/1999

शुक्र - गुरु	
10/11/1999	
11/07/2002	
गुरु	19/03/2000
शनि	20/08/2000
बुध	05/01/2001
केतु	03/03/2001
शुक्र	12/08/2001
सूर्य	30/09/2001
चंद्र	20/12/2001
मंगल	15/02/2002
राहु	11/07/2002

शुक्र - शनि	
11/07/2002	
10/09/2005	
शनि	10/01/2003
बुध	23/06/2003
केतु	30/08/2003
शुक्र	09/03/2004
सूर्य	06/05/2004
चंद्र	11/08/2004
मंगल	17/10/2004
राहु	09/04/2005
गुरु	10/09/2005

शुक्र - बुध	
10/09/2005	
11/07/2008	
बुध	03/02/2006
केतु	05/04/2006
शुक्र	24/09/2006
सूर्य	15/11/2006
चंद्र	09/02/2007
मंगल	11/04/2007
राहु	13/09/2007
गुरु	29/01/2008
शनि	11/07/2008

शुक्र - केतु	
11/07/2008	
10/09/2009	
केतु	05/08/2008
शुक्र	15/10/2008
सूर्य	05/11/2008
चंद्र	10/12/2008
मंगल	04/01/2009
राहु	09/03/2009
गुरु	05/05/2009
शनि	11/07/2009
बुध	10/09/2009

सूर्य - सूर्य	
10/09/2009	
28/12/2009	
सूर्य	15/09/2009
चंद्र	24/09/2009
मंगल	01/10/2009
राहु	17/10/2009
गुरु	01/11/2009
शनि	18/11/2009
बुध	04/12/2009
केतु	10/12/2009
शुक्र	28/12/2009

सूर्य - चंद्र	
28/12/2009	
29/06/2010	
चंद्र	13/01/2010
मंगल	23/01/2010
राहु	20/02/2010
गुरु	16/03/2010
शनि	14/04/2010
बुध	10/05/2010
केतु	20/05/2010
शुक्र	20/06/2010
सूर्य	29/06/2010

सूर्य - मंगल	
29/06/2010	
04/11/2010	
मंगल	06/07/2010
राहु	26/07/2010
गुरु	12/08/2010
शनि	01/09/2010
बुध	19/09/2010
केतु	26/09/2010
शुक्र	18/10/2010
सूर्य	24/10/2010
चंद्र	04/11/2010

सूर्य - राहु	
04/11/2010	
29/09/2011	
राहु	23/12/2010
गुरु	05/02/2011
शनि	29/03/2011
बुध	15/05/2011
केतु	03/06/2011
शुक्र	28/07/2011
सूर्य	13/08/2011
चंद्र	09/09/2011
मंगल	29/09/2011

सूर्य - गुरु	
29/09/2011	
17/07/2012	
गुरु	07/11/2011
शनि	23/12/2011
बुध	02/02/2012
केतु	19/02/2012
शुक्र	08/04/2012
सूर्य	23/04/2012
चंद्र	17/05/2012
मंगल	03/06/2012
राहु	17/07/2012

सूर्य - शनि	
17/07/2012	
29/06/2013	
शनि	10/09/2012
बुध	29/10/2012
केतु	18/11/2012
शुक्र	15/01/2013
सूर्य	01/02/2013
चंद्र	02/03/2013
मंगल	22/03/2013
राहु	13/05/2013
गुरु	29/06/2013

सूर्य - बुध	
29/06/2013	
05/05/2014	
बुध	12/08/2013
केतु	30/08/2013
शुक्र	21/10/2013
सूर्य	05/11/2013
चंद्र	01/12/2013
मंगल	19/12/2013
राहु	04/02/2014
गुरु	17/03/2014
शनि	05/05/2014

सूर्य - केतु	
05/05/2014	
10/09/2014	
केतु	13/05/2014
शुक्र	03/06/2014
सूर्य	09/06/2014
चंद्र	20/06/2014
मंगल	27/06/2014
राहु	17/07/2014
गुरु	03/08/2014
शनि	23/08/2014
बुध	10/09/2014

सूर्य - शुक्र	
10/09/2014	
10/09/2015	
शुक्र	10/11/2014
सूर्य	28/11/2014
चंद्र	29/12/2014
मंगल	19/01/2015
राहु	15/03/2015
गुरु	02/05/2015
शनि	29/06/2015
बुध	20/08/2015
केतु	10/09/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
10/09/2015	
11/07/2016	
चंद्र	06/10/2015
मंगल	23/10/2015
राहु	08/12/2015
गुरु	18/01/2016
शनि	06/03/2016
बुध	18/04/2016
केतु	06/05/2016
शुक्र	25/06/2016
सूर्य	11/07/2016

चंद्र - मंगल	
11/07/2016	
09/02/2017	
मंगल	23/07/2016
राहु	24/08/2016
गुरु	21/09/2016
शनि	25/10/2016
बुध	24/11/2016
केतु	07/12/2016
शुक्र	11/01/2017
सूर्य	22/01/2017
चंद्र	09/02/2017

चंद्र - राहु	
09/02/2017	
11/08/2018	
राहु	02/05/2017
गुरु	14/07/2017
शनि	09/10/2017
बुध	25/12/2017
केतु	26/01/2018
शुक्र	28/04/2018
सूर्य	25/05/2018
चंद्र	10/07/2018
मंगल	11/08/2018

चंद्र - गुरु	
11/08/2018	
11/12/2019	
गुरु	15/10/2018
शनि	31/12/2018
बुध	10/03/2019
केतु	07/04/2019
शुक्र	27/06/2019
सूर्य	22/07/2019
चंद्र	31/08/2019
मंगल	29/09/2019
राहु	11/12/2019

चंद्र - शनि	
11/12/2019	
11/07/2021	
शनि	11/03/2020
बुध	01/06/2020
केतु	05/07/2020
शुक्र	09/10/2020
सूर्य	07/11/2020
चंद्र	25/12/2020
मंगल	28/01/2021
राहु	25/04/2021
गुरु	11/07/2021

चंद्र - बुध	
11/07/2021	
10/12/2022	
बुध	22/09/2021
केतु	22/10/2021
शुक्र	17/01/2022
सूर्य	12/02/2022
चंद्र	27/03/2022
मंगल	26/04/2022
राहु	12/07/2022
गुरु	19/09/2022
शनि	10/12/2022

चंद्र - केतु	
10/12/2022	
11/07/2023	
केतु	23/12/2022
शुक्र	27/01/2023
सूर्य	07/02/2023
चंद्र	25/02/2023
मंगल	09/03/2023
राहु	10/04/2023
गुरु	09/05/2023
शनि	11/06/2023
बुध	11/07/2023

चंद्र - शुक्र	
11/07/2023	
11/03/2025	
शुक्र	21/10/2023
सूर्य	20/11/2023
चंद्र	10/01/2024
मंगल	15/02/2024
राहु	16/05/2024
गुरु	05/08/2024
शनि	09/11/2024
बुध	04/02/2025
केतु	11/03/2025

चंद्र - सूर्य	
11/03/2025	
10/09/2025	
सूर्य	20/03/2025
चंद्र	05/04/2025
मंगल	15/04/2025
राहु	13/05/2025
गुरु	06/06/2025
शनि	05/07/2025
बुध	31/07/2025
केतु	10/08/2025
शुक्र	10/09/2025

मंगल - मंगल	
10/09/2025	
06/02/2026	
मंगल	19/09/2025
राहु	11/10/2025
गुरु	31/10/2025
शनि	23/11/2025
बुध	15/12/2025
केतु	23/12/2025
शुक्र	17/01/2026
सूर्य	25/01/2026
चंद्र	06/02/2026

मंगल - राहु	
06/02/2026	
24/02/2027	
राहु	04/04/2026
गुरु	26/05/2026
शनि	25/07/2026
बुध	18/09/2026
केतु	10/10/2026
शुक्र	13/12/2026
सूर्य	01/01/2027
चंद्र	02/02/2027
मंगल	24/02/2027

मंगल - गुरु	
24/02/2027	
31/01/2028	
गुरु	11/04/2027
शनि	04/06/2027
बुध	22/07/2027
केतु	11/08/2027
शुक्र	07/10/2027
सूर्य	24/10/2027
चंद्र	21/11/2027
मंगल	11/12/2027
राहु	31/01/2028

मंगल - शनि	
31/01/2028	
11/03/2029	
शनि	04/04/2028
बुध	01/06/2028
केतु	24/06/2028
शुक्र	31/08/2028
सूर्य	20/09/2028
चंद्र	24/10/2028
मंगल	16/11/2028
राहु	16/01/2029
गुरु	11/03/2029

मंगल - बुध	
11/03/2029	
08/03/2030	
बुध	01/05/2029
केतु	23/05/2029
शुक्र	22/07/2029
सूर्य	09/08/2029
चंद्र	08/09/2029
मंगल	29/09/2029
राहु	23/11/2029
गुरु	10/01/2030
शनि	08/03/2030

मंगल - केतु	
08/03/2030	
05/08/2030	
केतु	17/03/2030
शुक्र	11/04/2030
सूर्य	18/04/2030
चंद्र	01/05/2030
मंगल	10/05/2030
राहु	01/06/2030
गुरु	21/06/2030
शनि	14/07/2030
बुध	05/08/2030

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र	
05/08/2030	
05/10/2031	
शुक्र	15/10/2030
सूर्य	05/11/2030
चंद्र	10/12/2030
मंगल	04/01/2031
राहु	09/03/2031
गुरु	05/05/2031
शनि	11/07/2031
बुध	10/09/2031
केतु	05/10/2031

मंगल - सूर्य	
05/10/2031	
09/02/2032	
सूर्य	11/10/2031
चंद्र	22/10/2031
मंगल	29/10/2031
राहु	17/11/2031
गुरु	04/12/2031
शनि	25/12/2031
बुध	12/01/2032
केतु	19/01/2032
शुक्र	09/02/2032

मंगल - चंद्र	
09/02/2032	
10/09/2032	
चंद्र	27/02/2032
मंगल	11/03/2032
राहु	12/04/2032
गुरु	10/05/2032
शनि	13/06/2032
बुध	13/07/2032
केतु	25/07/2032
शुक्र	30/08/2032
सूर्य	10/09/2032

राहु - राहु	
10/09/2032	
24/05/2035	
राहु	04/02/2033
गुरु	16/06/2033
शनि	19/11/2033
बुध	08/04/2034
केतु	04/06/2034
शुक्र	16/11/2034
सूर्य	04/01/2035
चंद्र	27/03/2035
मंगल	24/05/2035

राहु - गुरु	
24/05/2035	
16/10/2037	
गुरु	18/09/2035
शनि	03/02/2036
बुध	07/06/2036
केतु	28/07/2036
शुक्र	21/12/2036
सूर्य	03/02/2037
चंद्र	17/04/2037
मंगल	07/06/2037
राहु	16/10/2037

राहु - शनि	
16/10/2037	
22/08/2040	
शनि	30/03/2038
बुध	25/08/2038
केतु	24/10/2038
शुक्र	16/04/2039
सूर्य	07/06/2039
चंद्र	02/09/2039
मंगल	01/11/2039
राहु	06/04/2040
गुरु	22/08/2040

राहु - बुध	
22/08/2040	
12/03/2043	
बुध	01/01/2041
केतु	25/02/2041
शुक्र	30/07/2041
सूर्य	14/09/2041
चंद्र	01/12/2041
मंगल	24/01/2042
राहु	13/06/2042
गुरु	15/10/2042
शनि	12/03/2043

राहु - केतु	
12/03/2043	
29/03/2044	
केतु	03/04/2043
शुक्र	06/06/2043
सूर्य	25/06/2043
चंद्र	27/07/2043
मंगल	18/08/2043
राहु	15/10/2043
गुरु	05/12/2043
शनि	04/02/2044
बुध	29/03/2044

राहु - शुक्र	
29/03/2044	
30/03/2047	
शुक्र	28/09/2044
सूर्य	22/11/2044
चंद्र	21/02/2045
मंगल	26/04/2045
राहु	07/10/2045
गुरु	02/03/2046
शनि	23/08/2046
बुध	25/01/2047
केतु	30/03/2047

राहु - सूर्य	
30/03/2047	
22/02/2048	
सूर्य	15/04/2047
चंद्र	13/05/2047
मंगल	01/06/2047
राहु	20/07/2047
गुरु	02/09/2047
शनि	24/10/2047
बुध	10/12/2047
केतु	29/12/2047
शुक्र	22/02/2048

राहु - चंद्र	
22/02/2048	
23/08/2049	
चंद्र	07/04/2048
मंगल	09/05/2048
राहु	30/07/2048
गुरु	12/10/2048
शनि	06/01/2049
बुध	25/03/2049
केतु	26/04/2049
शुक्र	26/07/2049
सूर्य	23/08/2049

राहु - मंगल	
23/08/2049	
10/09/2050	
मंगल	14/09/2049
राहु	10/11/2049
गुरु	01/01/2050
शनि	02/03/2050
बुध	26/04/2050
केतु	18/05/2050
शुक्र	21/07/2050
सूर्य	09/08/2050
चंद्र	10/09/2050

गुरु - गुरु	
10/09/2050	
28/10/2052	
गुरु	23/12/2050
शनि	25/04/2051
बुध	14/08/2051
केतु	28/09/2051
शुक्र	05/02/2052
सूर्य	15/03/2052
चंद्र	19/05/2052
मंगल	03/07/2052
राहु	28/10/2052

गुरु - शनि	
28/10/2052	
12/05/2055	
शनि	24/03/2053
बुध	02/08/2053
केतु	25/09/2053
शुक्र	26/02/2054
सूर्य	13/04/2054
चंद्र	29/06/2054
मंगल	22/08/2054
राहु	08/01/2055
गुरु	12/05/2055

गुरु - बुध	
12/05/2055	
16/08/2057	
बुध	06/09/2055
केतु	24/10/2055
शुक्र	10/03/2056
सूर्य	21/04/2056
चंद्र	29/06/2056
मंगल	16/08/2056
राहु	18/12/2056
गुरु	07/04/2057
शनि	16/08/2057

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शुक्र - बुध	
09/11/2024 22:29	
04/02/2025 04:14	
बुध	22/11/2024 03:41
केतु	27/11/2024 04:26
शुक्र	11/12/2024 13:23
सूर्य	15/12/2024 20:52
चंद्र	23/12/2024 01:21
मंगल	28/12/2024 02:05
राहु	10/01/2025 00:33
गुरु	21/01/2025 12:31
शनि	04/02/2025 04:14

चंद्र - शुक्र - केतु	
04/02/2025 04:14	
11/03/2025 16:29	
केतु	06/02/2025 05:56
शुक्र	12/02/2025 03:59
सूर्य	13/02/2025 22:36
चंद्र	16/02/2025 21:37
मंगल	18/02/2025 23:20
राहु	24/02/2025 07:10
गुरु	01/03/2025 00:48
शनि	06/03/2025 15:44
बुध	11/03/2025 16:29

चंद्र - सूर्य - सूर्य	
11/03/2025 16:29	
20/03/2025 19:38	
सूर्य	12/03/2025 03:26
चंद्र	12/03/2025 21:42
मंगल	13/03/2025 10:29
राहु	14/03/2025 19:21
गुरु	16/03/2025 00:34
शनि	17/03/2025 11:16
बुध	18/03/2025 18:19
केतु	19/03/2025 07:06
शुक्र	20/03/2025 19:38

चंद्र - सूर्य - चंद्र	
20/03/2025 19:38	
05/04/2025 00:53	
चंद्र	22/03/2025 02:04
मंगल	22/03/2025 23:22
राहु	25/03/2025 06:09
गुरु	27/03/2025 06:51
शनि	29/03/2025 16:41
बुध	31/03/2025 20:26
केतु	01/04/2025 17:44
शुक्र	04/04/2025 06:37
सूर्य	05/04/2025 00:53

चंद्र - सूर्य - मंगल	
05/04/2025 00:53	
15/04/2025 16:33	
मंगल	05/04/2025 15:47
राहु	07/04/2025 06:08
गुरु	08/04/2025 16:14
शनि	10/04/2025 08:43
बुध	11/04/2025 20:56
केतु	12/04/2025 11:51
शुक्र	14/04/2025 06:28
सूर्य	14/04/2025 19:15
चंद्र	15/04/2025 16:33

चंद्र - सूर्य - राहु	
15/04/2025 16:33	
13/05/2025 02:00	
राहु	19/04/2025 19:10
गुरु	23/04/2025 10:50
शनि	27/04/2025 18:55
बुध	01/05/2025 16:04
केतु	03/05/2025 06:25
शुक्र	07/05/2025 19:59
सूर्य	09/05/2025 04:52
चंद्र	11/05/2025 11:39
मंगल	13/05/2025 02:00

चंद्र - सूर्य - गुरु	
13/05/2025 02:00	
06/06/2025 10:24	
गुरु	16/05/2025 07:55
शनि	20/05/2025 04:27
बुध	23/05/2025 15:14
केतु	25/05/2025 01:20
शुक्र	29/05/2025 02:44
सूर्य	30/05/2025 07:57
चंद्र	01/06/2025 08:39
मंगल	02/06/2025 18:44
राहु	06/06/2025 10:24

चंद्र - सूर्य - शनि	
06/06/2025 10:24	
05/07/2025 08:23	
शनि	11/06/2025 00:17
बुध	15/06/2025 02:36
केतु	16/06/2025 19:05
शुक्र	21/06/2025 14:44
सूर्य	23/06/2025 01:26
चंद्र	25/06/2025 11:16
मंगल	27/06/2025 03:45
राहु	01/07/2025 11:51
गुरु	05/07/2025 08:23

चंद्र - सूर्य - बुध	
05/07/2025 08:23	
31/07/2025 05:18	
बुध	09/07/2025 00:20
केतु	10/07/2025 12:34
शुक्र	14/07/2025 20:03
सूर्य	16/07/2025 03:06
चंद्र	18/07/2025 06:50
मंगल	19/07/2025 19:04
राहु	23/07/2025 16:12
गुरु	27/07/2025 02:59
शनि	31/07/2025 05:18

चंद्र - सूर्य - केतु	
31/07/2025 05:18	
10/08/2025 20:59	
केतु	31/07/2025 20:13
शुक्र	02/08/2025 14:50
सूर्य	03/08/2025 03:37
चंद्र	04/08/2025 00:55
मंगल	04/08/2025 15:50
राहु	06/08/2025 06:11
गुरु	07/08/2025 16:16
शनि	09/08/2025 08:45
बुध	10/08/2025 20:59

चंद्र - सूर्य - शुक्र	
10/08/2025 20:59	
10/09/2025 07:29	
शुक्र	15/08/2025 22:44
सूर्य	17/08/2025 11:15
चंद्र	20/08/2025 00:08
मंगल	21/08/2025 18:44
राहु	26/08/2025 08:19
गुरु	30/08/2025 09:43
शनि	04/09/2025 05:23
बुध	08/09/2025 12:52
केतु	10/09/2025 07:29

मंगल - मंगल - मंगल	
10/09/2025 07:29	
19/09/2025 00:17	
मंगल	10/09/2025 19:39
राहु	12/09/2025 02:59
गुरु	13/09/2025 06:49
शनि	14/09/2025 15:53
बुध	15/09/2025 21:27
केतु	16/09/2025 09:38
शुक्र	17/09/2025 20:26
सूर्य	18/09/2025 06:53
चंद्र	19/09/2025 00:17

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - मंगल - राहु	
19/09/2025 00:17	
11/10/2025 09:12	
राहु	22/09/2025 08:49
गुरु	25/09/2025 08:24
शनि	28/09/2025 21:25
बुध	02/10/2025 01:29
केतु	03/10/2025 08:48
शुक्र	07/10/2025 02:17
सूर्य	08/10/2025 05:08
चंद्र	10/10/2025 01:52
मंगल	11/10/2025 09:12

मंगल - मंगल - गुरु	
11/10/2025 09:12	
31/10/2025 06:27	
गुरु	14/10/2025 00:50
शनि	17/10/2025 04:24
बुध	20/10/2025 00:00
केतु	21/10/2025 03:51
शुक्र	24/10/2025 11:23
सूर्य	25/10/2025 11:15
चंद्र	27/10/2025 03:02
मंगल	28/10/2025 06:52
राहु	31/10/2025 06:27

मंगल - मंगल - शनि	
31/10/2025 06:27	
23/11/2025 21:12	
शनि	04/11/2025 00:11
बुध	07/11/2025 08:29
केतु	08/11/2025 17:32
शुक्र	12/11/2025 16:00
सूर्य	13/11/2025 20:20
चंद्र	15/11/2025 19:34
मंगल	17/11/2025 04:37
राहु	20/11/2025 17:38
गुरु	23/11/2025 21:12

मंगल - मंगल - बुध	
23/11/2025 21:12	
15/12/2025 00:17	
बुध	26/11/2025 21:02
केतु	28/11/2025 02:37
शुक्र	01/12/2025 15:08
सूर्य	02/12/2025 16:29
चंद्र	04/12/2025 10:45
मंगल	05/12/2025 16:20
राहु	08/12/2025 20:23
गुरु	11/12/2025 16:00
शनि	15/12/2025 00:17

मंगल - मंगल - केतु	
15/12/2025 00:17	
23/12/2025 17:05	
केतु	15/12/2025 12:28
शुक्र	16/12/2025 23:16
सूर्य	17/12/2025 09:43
चंद्र	18/12/2025 03:07
मंगल	18/12/2025 15:17
राहु	19/12/2025 22:37
गुरु	21/12/2025 02:27
शनि	22/12/2025 11:31
बुध	23/12/2025 17:05

मंगल - मंगल - शुक्र	
23/12/2025 17:05	
17/01/2026 13:40	
शुक्र	27/12/2025 20:31
सूर्य	29/12/2025 02:21
चंद्र	31/12/2025 04:04
मंगल	01/01/2026 14:52
राहु	05/01/2026 08:21
गुरु	08/01/2026 15:54
शनि	12/01/2026 14:21
बुध	16/01/2026 02:52
केतु	17/01/2026 13:40

मंगल - मंगल - सूर्य	
17/01/2026 13:40	
25/01/2026 00:38	
सूर्य	17/01/2026 22:37
चंद्र	18/01/2026 13:32
मंगल	18/01/2026 23:58
राहु	20/01/2026 02:49
गुरु	21/01/2026 02:41
शनि	22/01/2026 07:01
बुध	23/01/2026 08:22
केतु	23/01/2026 18:49
शुक्र	25/01/2026 00:38

मंगल - मंगल - चंद्र	
25/01/2026 00:38	
06/02/2026 10:56	
चंद्र	26/01/2026 01:30
मंगल	26/01/2026 18:54
राहु	28/01/2026 15:38
गुरु	30/01/2026 07:25
शनि	01/02/2026 06:38
बुध	03/02/2026 00:54
केतु	03/02/2026 18:18
शुक्र	05/02/2026 20:01
सूर्य	06/02/2026 10:56

मंगल - राहु - राहु	
06/02/2026 10:56	
04/04/2026 23:34	
राहु	15/02/2026 02:01
गुरु	22/02/2026 18:07
शनि	03/03/2026 20:43
बुध	12/03/2026 00:18
केतु	15/03/2026 08:50
शुक्र	24/03/2026 22:57
सूर्य	27/03/2026 19:59
चंद्र	01/04/2026 15:02
मंगल	04/04/2026 23:34

मंगल - राहु - गुरु	
04/04/2026 23:34	
26/05/2026 02:49	
गुरु	11/04/2026 19:12
शनि	19/04/2026 21:31
बुध	27/04/2026 03:22
केतु	30/04/2026 02:58
शुक्र	08/05/2026 15:30
सूर्य	11/05/2026 04:52
चंद्र	15/05/2026 11:08
मंगल	18/05/2026 10:43
राहु	26/05/2026 02:49

मंगल - राहु - शनि	
26/05/2026 02:49	
25/07/2026 20:10	
शनि	04/06/2026 17:33
बुध	13/06/2026 08:01
केतु	16/06/2026 21:02
शुक्र	26/06/2026 23:55
सूर्य	30/06/2026 00:47
चंद्र	05/07/2026 02:14
मंगल	08/07/2026 15:15
राहु	17/07/2026 17:51
गुरु	25/07/2026 20:10

मंगल - राहु - बुध	
25/07/2026 20:10	
18/09/2026 04:06	
बुध	02/08/2026 12:53
केतु	05/08/2026 16:57
शुक्र	14/08/2026 18:16
सूर्य	17/08/2026 11:28
चंद्र	22/08/2026 00:08
मंगल	25/08/2026 04:12
राहु	02/09/2026 07:47
गुरु	09/09/2026 13:39
शनि	18/09/2026 04:06

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 10 वर्ष 5 मास 17 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
15/08/1947		30/01/1958		30/01/1970		31/01/1983		30/01/1997	
30/01/1958		30/01/1970		31/01/1983		30/01/1997		31/01/2012	
सूर्य	16/02/1948	मंगल	29/04/1959	गुरु	16/07/1971	शनि	09/10/1984	केतु	09/01/1999
मंगल	06/04/1949	गुरु	01/09/1960	शनि	09/02/1973	केतु	01/08/1986	चंद्र	02/02/2001
गुरु	30/06/1950	शनि	12/02/1962	केतु	16/10/1974	चंद्र	06/07/1988	बुध	16/04/2003
शनि	28/10/1951	केतु	02/09/1963	चंद्र	31/07/1976	बुध	26/07/1990	शुक्र	13/08/2005
केतु	31/03/1953	चंद्र	28/04/1965	बुध	27/06/1978	शुक्र	26/09/1992	सूर्य	15/01/2007
चंद्र	06/10/1954	बुध	31/01/1967	शुक्र	03/07/1980	सूर्य	24/01/1994	मंगल	04/08/2008
बुध	17/05/1956	शुक्र	11/12/1968	सूर्य	26/09/1981	मंगल	07/07/1995	गुरु	10/04/2010
शुक्र	30/01/1958	सूर्य	30/01/1970	मंगल	31/01/1983	गुरु	30/01/1997	शनि	31/01/2012

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
31/01/2012		31/01/2028		30/01/2045		31/01/2063	
31/01/2028		30/01/2045		31/01/2063		00/00/0000	
चंद्र	16/04/2014	बुध	29/07/2030	शुक्र	16/11/2047	सूर्य	15/08/2063
बुध	19/08/2016	शुक्र	18/03/2033	सूर्य	01/08/2049		00/00/0000
शुक्र	12/02/2019	सूर्य	28/10/2034	मंगल	12/06/2051		00/00/0000
सूर्य	19/08/2020	मंगल	31/07/2036	गुरु	18/06/2053		00/00/0000
मंगल	16/04/2022	गुरु	27/06/2038	शनि	20/08/2055		00/00/0000
गुरु	31/01/2024	शनि	16/07/2040	केतु	17/12/2057		00/00/0000
शनि	05/01/2026	केतु	27/09/2042	चंद्र	11/06/2060		00/00/0000
केतु	31/01/2028	चंद्र	30/01/2045	बुध	31/01/2063		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 12 वर्ष 0 मास 17 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
15/08/1947		01/09/1959		01/01/1971		01/09/1975		31/12/1988	
01/09/1959		01/01/1971		01/09/1975		31/12/1988		31/12/1992	
शनि	02/01/1949	बुध	10/04/1961	केतु	10/04/1971	शुक्र	21/11/1977	सूर्य	14/03/1989
बुध	20/10/1950	केतु	07/12/1961	शुक्र	19/01/1972	सूर्य	23/07/1978	चंद्र	14/07/1989
केतु	17/07/1951	शुक्र	28/10/1963	सूर्य	14/04/1972	चंद्र	01/09/1979	मंगल	07/10/1989
शुक्र	26/08/1953	सूर्य	22/05/1964	चंद्र	03/09/1972	मंगल	11/06/1980	राहु	15/05/1990
सूर्य	14/04/1954	चंद्र	02/05/1965	मंगल	11/12/1972	राहु	12/06/1982	गुरु	25/11/1990
चंद्र	05/05/1955	मंगल	30/12/1965	राहु	24/08/1973	गुरु	22/03/1984	शनि	15/07/1991
मंगल	30/01/1956	राहु	12/09/1967	गुरु	08/04/1974	शनि	02/05/1986	बुध	07/02/1992
राहु	24/12/1957	गुरु	16/03/1969	शनि	03/01/1975	बुध	22/03/1988	केतु	02/05/1992
गुरु	01/09/1959	शनि	01/01/1971	बुध	01/09/1975	केतु	31/12/1988	शुक्र	31/12/1992

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
31/12/1992		01/09/1999		02/05/2004		02/05/2016		01/01/2027	
01/09/1999		02/05/2004		02/05/2016		01/01/2027		00/00/0000	
चंद्र	22/07/1993	मंगल	10/12/1999	राहु	18/02/2006	गुरु	03/10/2017	शनि	15/08/2027
मंगल	11/12/1993	राहु	21/08/2000	गुरु	26/09/2007	शनि	12/06/2019		00/00/0000
राहु	12/12/1994	गुरु	06/04/2001	शनि	20/08/2009	बुध	15/12/2020		00/00/0000
गुरु	01/11/1995	शनि	01/01/2002	बुध	03/05/2011	केतु	30/07/2021		00/00/0000
शनि	21/11/1996	बुध	30/08/2002	केतु	13/01/2012	शुक्र	11/05/2023		00/00/0000
बुध	01/11/1997	केतु	08/12/2002	शुक्र	13/01/2014	सूर्य	22/11/2023		00/00/0000
केतु	23/03/1998	शुक्र	18/09/2003	सूर्य	20/08/2014	चंद्र	11/10/2024		00/00/0000
शुक्र	03/05/1999	सूर्य	12/12/2003	चंद्र	20/08/2015	मंगल	26/05/2025		00/00/0000
सूर्य	01/09/1999	चंद्र	02/05/2004	मंगल	02/05/2016	राहु	01/01/2027		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 10 मास 25 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
15/08/1947		09/07/1949		09/07/1964		09/07/1972		09/07/1989	
09/07/1949		09/07/1964		09/07/1972		09/07/1989		10/07/1999	
	00/00/0000	चंद्र	09/08/1951	मंगल	11/02/1965	बुध	14/03/1975	शनि	13/06/1990
	00/00/0000	मंगल	18/09/1952	बुध	17/05/1966	शनि	08/10/1976	गुरु	16/03/1992
	00/00/0000	बुध	29/01/1955	शनि	11/02/1967	गुरु	06/10/1979	राहु	26/04/1993
	00/00/0000	शनि	19/06/1956	गुरु	09/07/1968	राहु	26/08/1981	शुक्र	06/04/1995
	15/08/1947	गुरु	08/02/1959	राहु	30/05/1969	शुक्र	15/12/1984	सूर्य	26/10/1995
गुरु	09/09/1947	राहु	08/10/1960	शुक्र	19/12/1970	सूर्य	25/11/1985	चंद्र	16/03/1997
राहु	09/05/1948	शुक्र	09/09/1963	सूर्य	30/05/1971	चंद्र	05/04/1988	मंगल	12/12/1997
शुक्र	09/07/1949	सूर्य	09/07/1964	चंद्र	09/07/1972	मंगल	09/07/1989	बुध	10/07/1999

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
10/07/1999		10/07/2018		10/07/2030		10/07/2051	
10/07/2018		10/07/2030		10/07/2051		00/00/0000	
गुरु	12/11/2002	राहु	09/11/2019	शुक्र	09/08/2034	सूर्य	09/11/2051
राहु	22/12/2004	शुक्र	10/03/2022	सूर्य	09/10/2035	चंद्र	08/09/2052
शुक्र	01/09/2008	सूर्य	08/11/2022	चंद्र	08/09/2038	मंगल	17/02/2053
सूर्य	22/09/2009	चंद्र	09/07/2024	मंगल	30/03/2040	बुध	28/01/2054
चंद्र	13/05/2012	मंगल	30/05/2025	बुध	20/07/2043	शनि	19/08/2054
मंगल	09/10/2013	बुध	20/04/2027	शनि	29/06/2045	गुरु	15/08/2055
बुध	05/10/2016	शनि	30/05/2028	गुरु	10/03/2049		00/00/0000
शनि	10/07/2018	गुरु	10/07/2030	राहु	10/07/2051		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 2 वर्ष 10 मास 7 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
15/08/1947		22/06/1950		22/06/1954		22/06/1959		22/06/1965	
22/06/1950		22/06/1954		22/06/1959		22/06/1965		21/06/1972	
धांय	21/09/1947	भ्राम	01/12/1950	भद्रि	02/03/1955	उल्क	21/06/1960	सिद्ध	01/11/1966
भ्राम	21/01/1948	भद्रि	22/06/1951	उल्क	01/01/1956	सिद्ध	21/08/1961	संक	22/05/1968
भद्रि	21/06/1948	उल्क	21/02/1952	सिद्ध	21/12/1956	संक	21/12/1962	मंग	01/08/1968
उल्क	21/12/1948	सिद्ध	01/12/1952	संक	31/01/1958	मंग	20/02/1963	पिंग	21/12/1968
सिद्ध	22/07/1949	संक	21/10/1953	मंग	22/03/1958	पिंग	22/06/1963	धांय	22/07/1969
संक	22/03/1950	मंग	01/12/1953	पिंग	02/07/1958	धांय	22/12/1963	भ्राम	02/05/1970
मंग	22/04/1950	पिंग	20/02/1954	धांय	01/12/1958	भ्राम	21/08/1964	भद्रि	22/04/1971
पिंग	22/06/1950	धांय	22/06/1954	भ्राम	22/06/1959	भद्रि	22/06/1965	उल्क	21/06/1972

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
21/06/1972		21/06/1980		22/06/1981		22/06/1983		22/06/1986	
21/06/1980		22/06/1981		22/06/1983		22/06/1986		22/06/1990	
संक	02/04/1974	मंग	01/07/1980	पिंग	01/08/1981	धांय	21/09/1983	भ्राम	01/12/1986
मंग	22/06/1974	पिंग	22/07/1980	धांय	01/10/1981	भ्राम	21/01/1984	भद्रि	22/06/1987
पिंग	01/12/1974	धांय	21/08/1980	भ्राम	21/12/1981	भद्रि	21/06/1984	उल्क	21/02/1988
धांय	02/08/1975	भ्राम	01/10/1980	भद्रि	02/04/1982	उल्क	21/12/1984	सिद्ध	01/12/1988
भ्राम	21/06/1976	भद्रि	20/11/1980	उल्क	01/08/1982	सिद्ध	22/07/1985	संक	21/10/1989
भद्रि	01/08/1977	उल्क	20/01/1981	सिद्ध	21/12/1982	संक	22/03/1986	मंग	01/12/1989
उल्क	01/12/1978	सिद्ध	01/04/1981	संक	02/06/1983	मंग	22/04/1986	पिंग	20/02/1990
सिद्ध	21/06/1980	संक	22/06/1981	मंग	22/06/1983	पिंग	22/06/1986	धांय	22/06/1990

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष	
22/06/1990	
22/06/1995	
भद्रि	02/03/1991
उल्क	01/01/1992
सिद्ध	21/12/1992
संक	31/01/1994
मंग	22/03/1994
पिंग	02/07/1994
धांय	01/12/1994
भ्राम	22/06/1995

उल्का 6 वर्ष	
22/06/1995	
22/06/2001	
उल्क	21/06/1996
सिद्ध	21/08/1997
संक	21/12/1998
मंग	20/02/1999
पिंग	22/06/1999
धांय	22/12/1999
भ्राम	21/08/2000
भद्रि	22/06/2001

सिद्धा 7 वर्ष	
22/06/2001	
21/06/2008	
सिद्ध	01/11/2002
संक	22/05/2004
मंग	01/08/2004
पिंग	21/12/2004
धांय	22/07/2005
भ्राम	02/05/2006
भद्रि	22/04/2007
उल्क	21/06/2008

संकटा 8 वर्ष	
21/06/2008	
21/06/2016	
संक	02/04/2010
मंग	22/06/2010
पिंग	01/12/2010
धांय	02/08/2011
भ्राम	21/06/2012
भद्रि	01/08/2013
उल्क	01/12/2014
सिद्ध	21/06/2016

मंगला 1 वर्ष	
21/06/2016	
22/06/2017	
मंग	01/07/2016
पिंग	22/07/2016
धांय	21/08/2016
भ्राम	01/10/2016
भद्रि	20/11/2016
उल्क	20/01/2017
सिद्ध	01/04/2017
संक	22/06/2017

पिंगला 2 वर्ष	
22/06/2017	
22/06/2019	
पिंग	01/08/2017
धांय	01/10/2017
भ्राम	21/12/2017
भद्रि	02/04/2018
उल्क	01/08/2018
सिद्ध	21/12/2018
संक	02/06/2019
मंग	22/06/2019

धान्या 3 वर्ष	
22/06/2019	
22/06/2022	
धांय	21/09/2019
भ्राम	21/01/2020
भद्रि	21/06/2020
उल्क	21/12/2020
सिद्ध	22/07/2021
संक	22/03/2022
मंग	22/04/2022
पिंग	22/06/2022

भ्रामरी 4 वर्ष	
22/06/2022	
22/06/2026	
भ्राम	01/12/2022
भद्रि	22/06/2023
उल्क	21/02/2024
सिद्ध	01/12/2024
संक	21/10/2025
मंग	01/12/2025
पिंग	20/02/2026
धांय	22/06/2026

भद्रिका 5 वर्ष	
22/06/2026	
22/06/2031	
भद्रि	02/03/2027
उल्क	01/01/2028
सिद्ध	21/12/2028
संक	31/01/2030
मंग	22/03/2030
पिंग	02/07/2030
धांय	01/12/2030
भ्राम	22/06/2031

उल्का 6 वर्ष	
22/06/2031	
22/06/2037	
उल्क	21/06/2032
सिद्ध	21/08/2033
संक	21/12/2034
मंग	20/02/2035
पिंग	22/06/2035
धांय	22/12/2035
भ्राम	21/08/2036
भद्रि	22/06/2037

सिद्धा 7 वर्ष	
22/06/2037	
21/06/2044	
सिद्ध	01/11/2038
संक	22/05/2040
मंग	01/08/2040
पिंग	21/12/2040
धांय	22/07/2041
भ्राम	02/05/2042
भद्रि	22/04/2043
उल्क	21/06/2044

संकटा 8 वर्ष	
21/06/2044	
21/06/2052	
संक	02/04/2046
मंग	22/06/2046
पिंग	01/12/2046
धांय	02/08/2047
भ्राम	21/06/2048
भद्रि	01/08/2049
उल्क	01/12/2050
सिद्ध	21/06/2052

मंगला 1 वर्ष	
21/06/2052	
22/06/2053	
मंग	01/07/2052
पिंग	22/07/2052
धांय	21/08/2052
भ्राम	01/10/2052
भद्रि	20/11/2052
उल्क	20/01/2053
सिद्ध	01/04/2053
संक	22/06/2053

पिंगला 2 वर्ष	
22/06/2053	
22/06/2055	
पिंग	01/08/2053
धांय	01/10/2053
भ्राम	21/12/2053
भद्रि	02/04/2054
उल्क	01/08/2054
सिद्ध	21/12/2054
संक	02/06/2055
मंग	22/06/2055

धान्या 3 वर्ष	
22/06/2055	
00/00/0000	
धांय	15/08/2055
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 3 वर्ष 5 मास 27 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : पुष्य - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
15/08/1947		10/02/1951		10/02/1960		10/02/1981		10/02/1986	
10/02/1951		10/02/1960		10/02/1981		10/02/1986		10/02/1995	
	00/00/0000	कन्या	03/12/1951	कर्क	09/07/1964	सिंह	12/05/1981	मिथु	03/12/1986
	00/00/0000	कर्क	23/10/1953	सिंह	28/07/1965	मिथु	23/10/1981	वृष	12/05/1988
	00/00/0000	सिंह	06/04/1954	मिथु	18/06/1967	वृष	12/08/1982	मेष	28/12/1988
	00/00/0000	मिथु	27/01/1955	वृष	27/10/1970	मेष	17/12/1982	मीन	22/11/1989
	00/00/0000	वृष	06/07/1956	मेष	16/04/1972	मीन	18/06/1983	वृश्चि	10/07/1990
	15/08/1947	मेष	21/02/1957	मीन	23/05/1974	वृश्चि	24/10/1983	तुला	18/12/1991
मेष	23/05/1948	मीन	15/01/1958	वृश्चि	11/11/1975	तुला	11/08/1984	कन्या	09/10/1992
मीन	28/12/1949	वृश्चि	03/09/1958	तुला	22/03/1979	कन्या	22/01/1985	कर्क	30/08/1994
वृश्चि	10/02/1951	तुला	10/02/1960	कन्या	10/02/1981	कर्क	10/02/1986	सिंह	10/02/1995

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
10/02/1995		10/02/2011		10/02/2018		10/02/2028		10/02/2035	
10/02/2011		10/02/2018		10/02/2028		10/02/2035		00/00/0000	
वृष	02/09/1997	मेष	08/08/2011	मीन	10/02/2019	वृश्चि	07/08/2028	तुला	02/09/2037
मेष	16/10/1998	मीन	20/04/2012	वृश्चि	24/10/2019	तुला	21/09/2029	कन्या	10/02/2039
मीन	23/05/2000	वृश्चि	16/10/2012	तुला	30/05/2021	कन्या	09/05/2030	कर्क	21/06/2042
वृश्चि	06/07/2001	तुला	29/11/2013	कन्या	24/04/2022	कर्क	28/10/2031	सिंह	10/04/2043
तुला	27/01/2004	कन्या	17/07/2014	कर्क	30/05/2024	सिंह	03/03/2032	मिथु	17/09/2044
कन्या	06/07/2005	कर्क	05/01/2016	सिंह	29/11/2024	मिथु	20/10/2032	वृष	10/04/2047
कर्क	14/11/2008	सिंह	12/05/2016	मिथु	23/10/2025	वृष	03/12/2033	मेष	15/08/2047
सिंह	02/09/2009	मिथु	28/12/2016	वृष	31/05/2027	मेष	31/05/2034		00/00/0000
मिथु	10/02/2011	वृष	10/02/2018	मेष	10/02/2028	मीन	10/02/2035		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 2 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 2 वर्ष	
15/08/1947	
14/08/1949	
मेष	14/10/1947
मीन	14/12/1947
कुंभ	13/02/1948
मक	14/04/1948
धनु	14/06/1948
वृश्चि	14/08/1948
तुला	14/10/1948
कन्या	14/12/1948
सिंह	12/02/1949
कर्क	14/04/1949
मिथु	14/06/1949
वृष	14/08/1949

मेष 2 वर्ष	
14/08/1949	
15/08/1951	
वृष	14/10/1949
मिथु	14/12/1949
कर्क	13/02/1950
सिंह	15/04/1950
कन्या	14/06/1950
तुला	14/08/1950
वृश्चि	14/10/1950
धनु	14/12/1950
मक	13/02/1951
कुंभ	15/04/1951
मीन	15/06/1951
मेष	15/08/1951

मीन 5 वर्ष	
15/08/1951	
14/08/1956	
मेष	14/01/1952
वृष	14/06/1952
मिथु	13/11/1952
कर्क	14/04/1953
सिंह	13/09/1953
कन्या	13/02/1954
तुला	15/07/1954
वृश्चि	14/12/1954
धनु	15/05/1955
मक	14/10/1955
कुंभ	15/03/1956
मीन	14/08/1956

कुम्भ 7 वर्ष	
14/08/1956	
15/08/1963	
मीन	15/03/1957
मेष	14/10/1957
वृष	15/05/1958
मिथु	14/12/1958
कर्क	15/07/1959
सिंह	13/02/1960
कन्या	13/09/1960
तुला	14/04/1961
वृश्चि	13/11/1961
धनु	14/06/1962
मक	13/01/1963
कुंभ	15/08/1963

मकर 6 वर्ष	
15/08/1963	
14/08/1969	
धनु	13/02/1964
वृश्चि	14/08/1964
तुला	12/02/1965
कन्या	14/08/1965
सिंह	13/02/1966
कर्क	14/08/1966
मिथु	13/02/1967
वृष	15/08/1967
मेष	13/02/1968
मीन	14/08/1968
कुंभ	12/02/1969
मक	14/08/1969

धनु 10 वर्ष	
14/08/1969	
15/08/1979	
वृश्चि	14/06/1970
तुला	15/04/1971
कन्या	13/02/1972
सिंह	14/12/1972
कर्क	14/10/1973
मिथु	14/08/1974
वृष	15/06/1975
मेष	14/04/1976
मीन	12/02/1977
कुंभ	14/12/1977
मक	14/10/1978
धनु	15/08/1979

वृश्चिक 7 वर्ष	
15/08/1979	
14/08/1986	
तुला	15/03/1980
कन्या	14/10/1980
सिंह	15/05/1981
कर्क	14/12/1981
मिथु	15/07/1982
वृष	13/02/1983
मेष	14/09/1983
मीन	14/04/1984
कुंभ	13/11/1984
मक	14/06/1985
धनु	13/01/1986
वृश्चि	14/08/1986

तुला 9 वर्ष	
14/08/1986	
15/08/1995	
वृश्चि	15/05/1987
धनु	13/02/1988
मक	13/11/1988
कुंभ	14/08/1989
मीन	15/05/1990
मेष	13/02/1991
वृष	14/11/1991
मिथु	14/08/1992
कर्क	15/05/1993
सिंह	13/02/1994
कन्या	14/11/1994
तुला	15/08/1995

कन्या 2 वर्ष	
15/08/1995	
14/08/1997	
तुला	14/10/1995
वृश्चि	14/12/1995
धनु	13/02/1996
मक	14/04/1996
कुंभ	14/06/1996
मीन	14/08/1996
मेष	14/10/1996
वृष	14/12/1996
मिथु	12/02/1997
कर्क	14/04/1997
सिंह	14/06/1997
कन्या	14/08/1997

सिंह 1 वर्ष	
14/08/1997	
14/08/1998	
कन्या	13/09/1997
तुला	14/10/1997
वृश्चि	13/11/1997
धनु	14/12/1997
मक	13/01/1998
कुंभ	13/02/1998
मीन	15/03/1998
मेष	15/04/1998
वृष	15/05/1998
मिथु	14/06/1998
कर्क	15/07/1998
सिंह	14/08/1998

कर्क 12 वर्ष	
14/08/1998	
14/08/2010	
मिथु	15/08/1999
वृष	14/08/2000
मेष	14/08/2001
मीन	14/08/2002
कुंभ	15/08/2003
मक	14/08/2004
धनु	14/08/2005
वृश्चि	14/08/2006
तुला	15/08/2007
कन्या	14/08/2008
सिंह	14/08/2009
कर्क	14/08/2010

मिथुन 1 वर्ष	
14/08/2010	
15/08/2011	
वृष	14/09/2010
मेष	14/10/2010
मीन	14/11/2010
कुंभ	14/12/2010
मक	13/01/2011
धनु	13/02/2011
वृश्चि	15/03/2011
तुला	15/04/2011
कन्या	15/05/2011
सिंह	15/06/2011
कर्क	15/07/2011
मिथु	15/08/2011

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	हीरा		पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम		पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना		पराक्रम, धन, सन्तति सुख
दशा	**रत्न**	**क्षमता**	**मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ**
शनि	नीलम	94%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
15/08/1947	पन्ना	88%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
10/09/1965	हीरा	75%	पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
बुध	पन्ना	94%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
10/09/1965	नीलम	81%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
10/09/1982	हीरा	75%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
केतु	पन्ना	81%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
10/09/1982	हीरा	75%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
10/09/1989	लहसुनिया	73%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
शुक्र	पन्ना	88%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
10/09/1989	नीलम	88%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
10/09/2009	हीरा	81%	पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
सूर्य	पन्ना	81%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
10/09/2009	माणिक्य	73%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
10/09/2015	नीलम	69%	पराक्रम, सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
चन्द्र	पन्ना	88%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
10/09/2015	नीलम	81%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
10/09/2025	हीरा	69%	पराक्रम, सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
मंगल	नीलम	81%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
10/09/2025	पन्ना	69%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, तेल
10/09/2032	हीरा	69%	धन, कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	–––	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	–––	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	15/08/1947-26/07/1948	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/07/1948-20/09/1950	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/11/1952-24/04/1953	21/08/1953-12/11/1955	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/01/1964-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंगल, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	राहु, शनि, शुक्र
		मारक	-	मंगल, गुरु, केतु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	44%	पराक्रम, सुख
चन्द्र	42%	पराक्रम,
मंगल	31%	धन, कम खर्च, दम्पति
बुध	45%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
गुरु	31%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	48%	पराक्रम, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
शनि	50%	पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	74%	स्वास्थ्य, पराक्रम
केतु	36%	दम्पति, धन

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शनि	10/09/1965	59	58	21	85	46	86	87	68	40
बुध	10/09/1982	84	58	34	85	46	86	75	55	53
केतु	10/09/1989	44	43	46	57	34	71	47	43	80
शुक्र	10/09/2009	59	58	34	85	46	86	87	68	65
सूर्य	10/09/2015	84	83	46	72	59	61	62	43	40
चन्द्र	10/09/2025	84	83	34	85	46	74	75	43	40
मंगल	10/09/2032	53	52	78	28	63	42	43	43	49
राहु	10/09/2050	28	27	21	41	34	55	56	99	24
गुरु	10/09/2066	67	66	63	42	78	44	57	55	36

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ भावस्थ मंगल की

दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी–कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी–कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय–समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न–बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार–बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठाता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय–समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि–विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे – कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, नाड़ी मध्य, मेष योनि, विप्रवर्ण तथा मेष वर्ग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हु" अक्षर से होगा।

आप देवताओं की पूजा से अर्जित धन से धनवान होंगे। बुद्धि आपकी तीव्र होगी तथा समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञाता होंगे। आप देखने में सुन्दर तथा सबके प्रिय रहेंगे तथा आपका जीवन समस्त सुखों के उपभोग करने में व्यतीत होगा। साथ ही आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

आपकी प्रवृति धार्मिक प्रवृति होगी तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण श्रद्धा एवं आस्था रहेगी। आपका हृदय हमेशा शान्त रहेगा तथा शान्तचित्त होकर ही आप अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही पुत्रों से भी आप युक्त रहेंगे।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरूष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

आप ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति अपने मन में श्रद्धा भाव रखेंगे तथा यथाशक्ति इनकी पूजा एवं सत्कार करते रहेंगे। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के प्रिय रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा। आप अपने बन्धुवर्ग से भी युक्त रहेंगे तथा सबसे आपके अच्छे सामाजिक संबंध रहेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान धन

से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

आप हमेशा शारीरिक रूप से सुन्दर तथा स्वस्थ रहेंगे। माता पिता के प्रति आप अपने कर्तव्य का पूर्ण रूप से निर्वाह करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करते रहेंगे। धर्मानुपालन की प्रवृति का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। अन्य सामाजिक जनों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील रहेगा। समाज में आप एक सम्मानीय व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक यश की भी आपको प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त धन तथा वाहनादि सुखों से भी आप सदैव युक्त रहेंगे।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वास्थय मध्यम रहेगा। आप अपने सभी कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा जीवन भर विपुल धन से युक्त होकर समाज में धनाढ्य कहलाएंगे। आप वीरता तथा पराक्रम के भाव से हमेशा युक्त रहेंगे। धार्मिक भावना का समावेश आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा पूर्ण रूप से आप धर्मानुसरण करेंगे तथा इसका पालन भी करेंगे। गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा। आपकी बुद्धिमता के प्रभाव को सभी लोग हृदय से स्वीकार करेंगे। यदा कदा आपके अन्दर क्रोध की बहुलता भी दृष्टिगोचर होगी तथा साथ ही कभी कभी आप अत्यन्त दुःख का भी अनुभव करेंगे। आपके मित्र अच्छे तथा गुणों से युक्त होंगे साथ ही आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओ में भी निपुण होंगे। शारीरिक बल भी मध्यम रूप से आप में विद्यमान रहेगा। आप घर से स्थाई या अस्थाई रूप से अन्यत्र निवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।

शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप वात तथा कफ प्रकृति से युक्त रहेंगे तथा आपका रूप भी सुन्दर तथा तेज युक्त होगा। आप अत्यन्त धनवान होंगे तथा स्वयं अपने परिश्रम से इस धन को अर्जन करेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण आस्था रहेंगी तथा यथा समय इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आप सम्मान का भाव रखेंगे तथा इनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के अध्ययन में भी आप रूचिशील होंगे तथा अपने अध्ययन तथा परिश्रम द्वारा इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अन्य कलाओं के भी जानने वाले होंगे तथा चाल चलन आपका उत्तम रहेगा। पुष्पों की सुगन्ध तथा जल के आप प्रेमी होंगे तथा इनकी प्राप्ति से आप आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति पूर्ण रूप से व्याप्त रहेगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

स्त्री से आप पूर्ण रूप से पराजित होकर उसके वश में रहेंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे तथा जलविहार के भी शौकीन रहेंगे। आपके द्वारा बहुत से भवन निर्मित होंगे अथवा आप स्वयं बहुत से मकानों के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपका कद सामान्य रहेगा तथा टेढी चाल से शीघ्र चलने की आपकी प्रवृति होगी। साथ ही पुत्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोळल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में विविध प्रकार की सम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे ज्योतिष शास्त्र में आपकी पूर्ण आस्था होगी एवं इसका ज्ञान भी आपको रहेगा। आपका जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात उतार चढाव तथा संघर्ष चलते रहेंगे। आपको केवल प्रेम या स्नेह से ही प्रसन्न रखा जा सकता हैं। दबाव या बलपूर्वक आप किसी के वश में नहीं आएंगे। आप

अपने मित्रों को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करने वाले होंगे। आपकी जीव पालने, उद्यान, बागबगीचे तथा जलाशयों के निर्माण में विशेष रूचि रहेगी।

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप हमेशा सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा अपने समस्तकार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ होंगे। साथ ही आप मकान के स्वामी भी बनेंगे। आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत होगा। विनयशीलता आपका स्वाभाविक गुण होगा। समाज के अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनके उपकार को मानने वाले होंगे। साथ ही आप राज्य के किसी भी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकते हैं। सत्य के अनुपालन करने में आप आजीवन यत्नशील रहेंगे तथा सर्वथा सत्य तथा प्रिय ही बोलेंगे जिससे किसी अन्य को कोई भी कष्ट न हो।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रेष्ठ तथा मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप सरल बुद्धि से युक्त रहेंगे तथा इसमें कोई भी प्रपंच का समावेश नहीं रहेगा। सरल ढंग से आप अपनी बात अन्यों को कहेंगे तथा उसी तरह अन्य के विचारों को आत्मसात करेंगे। भोजन भी आप शुद्ध, अल्प तथा सात्विक लेना पसन्द करेंगे तथा गुणों के बारे में विस्तृत ज्ञान रखेंगे। आप स्वयं भी महान विद्वानों द्वारा प्रतिपादित गुणों से युक्त रहेंगे। इसके साथ ही धनैश्वर्य भी प्रचुर मात्रा में आपके पास रहेगा।

आपका शरीर देखने में सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। आप स्वभाव से ही दानशील होंगे तथा जरूरत मन्द लोगों को यथा शक्ति दान तथा सेवा एवं सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आप सादगी पसन्द होंगे तथा दिखावे या भौतिक प्रपंचों से दूर ही रहेंगे। साथ ही समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी आपका सम्मान तथा आदर होगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप उत्साह से हमेशा सम्पन्न रहेंगे। आप जो भी कार्य करेंगे उसे उत्साह के साथ पूर्ण करके छोडेंगे। योद्धा या शूरता के गुणों से आप युक्त रहेंगे तथा आपकी प्रमुखता को सभी लोग स्वीकार करेंगे। युद्ध विद्या में भी आप अति निपुण होंगे। धनैश्वर्य तथा वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इनका आप पूर्ण रूप से आजीवन उपभोग करने में समर्थ होंगे। दूसरे की भलाई करने की नैसर्गिक भावना का अनुशीलन करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोडकर सामान्य रूप से मधुर ही

रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण बुधवार, प्रथम प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य, 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग तथा नागकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि का ही योग बनेगा। साथ ही बुधवार, प्रथम प्रहर एवं सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए अच्छा समय नहीं चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार का श्रद्धापूर्वक उपवास करना चाहिए। साथ ही सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल, मिश्री आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र– ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक धैर्यशाली तथा सहनशील स्वभाव के होते हैं। वार्तालाप में भी वे मधुर शब्दों का उपयोग करते हैं जिससे अन्य जन उनसे प्रभावित रहते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ होते हैं तथा शांति एवं उदारता का भाव उनमें विद्यमान रहता है। वे अत्यधिक परिश्रमशील होते हैं तथा इसी परिश्रम के द्वारा जीवन में अपने उन्नति मार्गों को प्रशस्त करने में समर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त अपने कार्यकलापों को वे पराक्रम तथा साहस से पूर्ण करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मानसिक स्थिति भी सामान्यतया अनुकूल ही होगी। आप यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे तथा अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। आपका कद मध्यम होगा एवं स्वभाव में शांति सहनशीलता तथा उदारता का भाव सर्वदा विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपने परिश्रम पराक्रम एवं योग्यता से जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप में विद्वता का गुण भी रहेगा तथा संगीत कला एवं साहित्य के प्रति आपकी रूचि रहेगी। अपने सदगुणों से आप श्रेष्ठ जनों को प्रसन्न रखने में सफल होंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपमें चंचलता के भाव की भी प्रधानता रहेगी तथा यदा कदा इसके अनावश्यक प्रदर्शन से आपको समस्याओं तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अतः इसकी यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को आप स्वपराक्रम से प्राप्त करेंगे तथा सपरिवार इनका उपभोग करेंगे फलतः पारिवारिक शांति भी बनी रहेगी।

आपकी प्रवृति सहिष्णु एवं परिश्रमी होगी तथा यत्नपूर्वक अच्छे कार्यों को करने में आपकी रूचि रहेगी। बाल्यवस्था एवं युवावस्था में आपका जीवन संघर्ष पूर्ण रहेगा परन्तु उसके बाद आप सुख एवं शांति पूर्वक रहेंगे तथा सभी प्रकार के सुख एवं आराम की आपको प्राप्ति होगी। सरकार या सरकारी विभाग से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे अथवा राजकीय सेवा में भी तत्पर हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी रहेगी एवं आय–स्रोत बनते रहेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में सामान्य श्रद्वा होगी तथा यदा कदा ही धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे परन्तु परिश्रम एवं योग्यता से आप समाज में सम्मान जनक स्थान या नौकरी में किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे जिससे आपकी प्रसिद्धि व्याप्त होगी।

इस प्रकार आप पराक्रमी साहसी कला एवं संगीत प्रेमी होंगे तथा जीवन में सुखोपभोग

करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददेश्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख–संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख–दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋृण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी व्ययशील क्रोधी एवं धनवान होता है। तथा अग्नितत्व युक्त केतु के प्रभाव से उसमें पराक्रम साहस एवं उग्रता का भाव भी विद्यमान रहता है एवं शारीरिक संरचना दुबली पतली होती है परन्तु विद्वता एवं बुद्धिमता के भाव से सर्वदा युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वभाव तेजस्विता से युक्त होगा तथा साहसिक कार्य करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। वह एक शिक्षित एवं बुद्धिमती महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में दक्षता का परिचय देंगी। साहित्य एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि रहेगी एवं कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा।

आपकी पत्नी लालिमा युक्त गौरवर्ण की महिला होंगी एवं उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना की दृष्टि से स्थूलता का अभाव रहेगा परन्तु पतलेपन में भी आकर्षण विद्यमान रहेगा। साथ ही अंग प्रत्यंगों की सुंदरता एवं सुडौलता दर्शनीय होगी। व्यायाम एवं योगिक क्रियाओं में भी रूचिशील होगी भौतिकता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा तथा सुंदर वस्तुओं एवं उपकरणों से घर को सुसज्जित रखेंगी।

सप्तम भावस्थ केतु के प्रभाव से यद्यपि आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु वैवाहिक प्रक्रिया में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होगा एवं आसानी से सम्पन्न हो जाएगी आपका विवाह सामान्यतया विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा परन्तु अपनी इच्छा से भी आप विवाह कर सकते है विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे के प्रति पूर्ण सहानुभूति का भाव रहेगा। परन्तु दोनों की स्वाभिमानी एवं तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव हो सकता है लेकिन इसको कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

आपका ससुराल साधारण धनी परिवार से होगा तथा उनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी सामान्य ही रहेगी। होगी लेकिन सास ससुर से आप सामान्य संबंध स्थापित करने में सफल रहेंगे तथा उनको सम्मान प्रदान करेंगे। वो भी आपको नैतिक सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगे तथा समयानुसार एक दूसरे के यहां आवागमन होता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी के मन में विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा स्वार्थवश अपने कर्तव्य का पालन नहीं करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके उग्रस्वभाव एवं तेज सभाषण से असन्तुष्ट होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि के ही योग बनेंगे। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क वितर्कों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्य मान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान–पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से

अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि–विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी–मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान–पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा–पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ–साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य–व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़–चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं।

मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ–साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का

विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव मे रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार–चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी–मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी–मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा–पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार–चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो

सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान–पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह–सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा–पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त

करें।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर–परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी–छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद–प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे–धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान–पान पर संयम

रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा–पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान–पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर

भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी–छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे–धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान–पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी

में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन–जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला–जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर–परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग–दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई–बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव

पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा–तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश–विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान–पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन–जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच–विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन–जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख–सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक–दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18

मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय–विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले–बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की

जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर–परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरूद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस

समय आप रोग–मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा–दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा–तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी–छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।

- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन–देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर–परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का

राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरूद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी–मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह–सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा–पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा और यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। क्योंकि लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा एवं नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका भरपूर लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं। अगस्त के बाद बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे एवं अपने कार्य में सफल रहेंगे।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात–निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 15 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। रुका हुआ अथवा फंसा हुआ धन वापस मिल सकता है। आपके छोटे भाई व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केश मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी और आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान के राहु आपके पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का वातावरण बना सकते हैं, जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। उस समय आपको विवेक से काम लेना होगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचर काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है एवं नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपको भाइयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों के प्रति नैसर्गिक रूप से आपका लगाव बढ़ेगा, जिससे आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परन्तु 15 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अच्छा हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए उत्तम रहेगा।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। मेहनत करने में कभी वे पीछे नहीं रहेंगे और आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु अग्नितत्व राशि में होने के कारण पेट से सम्बन्धित व पाचन संबंधित रोग दे सकते हैं। 15 अप्रैल के

बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है।

लग्न स्थान के गुरु मन में अच्छे विचार लाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान–पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ शनि किसी भी परीक्षा में उन्नति के संकेत दे रहा है। अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पढ़ाई–लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा–तबादला

द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। अतः वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है।

तृतीयस्थ शनि एवं राहु के प्रभाव से छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरुरी है। क्योंकि 27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिससे पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का

सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है और बेहतर लाभ भी होगा। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से धन का आगमन होगा। जो लोग ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। हालाँकि चतुर्थ स्थान का शनि कुछ परेशानियाँ ला सकता है। लेकिन हताश होने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो के कारण कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अतः अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। इस समय आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे अरसे से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे। 19 अक्टूबर के बाद आपका समय कुछ प्रभावित हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ मे आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी सुचारु रूप से होता रहेगा। 26 अप्रैल के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं। तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

16 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। भूमि, घर व

वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा–धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन–देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन–देन करें। कोई बड़ा–बुजुर्ग आदमी आपके साथ ठगी कर सकता है। किसी प्रकार का कर्जा लेने से परहेज करें।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की स्थिति पारिवारिक माहौल में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर रही है। आपके माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार मे किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धर्मपत्नी के लिए अच्छी है। अतः उनके साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों को अच्छा सहयोग मिलगा। तृतीय स्थान के राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा में उन्नति करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग ही व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों को उन्नति प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो जाएगा। उसके बाद आपके दोनों बच्चे एक साथ उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु

केघ्घ्घ्घ्घ्घ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान–पान व दिनर्चया पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

26 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लेकिन मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका वजन बढ़ सकता है। 19 अक्टूबर के बाद से आप अचानक छोटी–मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। जैसे – सिर दर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती है। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख, किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके उपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह–शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को अथक परिश्रम के पश्चात् नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अक्टूबर के बाद वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति विशेष रूचि रहेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। जागरण, साई संध्या इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करे एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यदि आप नौकरी करते हैं तो यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। मई के बाद आपका कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

प्रतिद्वन्दी आपकी नकल करने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वे अपने मंसूबों में सफल नहीं होंगे। आप अपने अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण रखें। तभी आपको प्रतिष्ठा और धन दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे।

7 अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। नौकरी में पदोन्नती व कार्यों में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी व उच्च लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक–ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। अचानक संचित धन में कमी आ सकती है। परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय होगा। आर्थिक लेन देन के मामलों में सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। जमीन खरीदते समय व निवेश करते समय कागजी कार्यवाई पर पूरा ध्यान देना होगा, नहीं तो आपके साथ धोखा हो सकता है।

आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा बचाने के बारें में सोचना आपके लिए फायदेमंद होगा। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें नहीं तो हानि हो सकती है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। जीवनसाथी के साथ अच्छे पल व्यतीत होंगे। पारिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी। मई के बाद माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उस समय राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिससे अंतर्कलह हो सकती है। खुद पर नियंत्रण रखें। परिवार से जुड़ी किसी भी समस्या को छोटा न समझें और तुरन्त उसका हल निकालें।

तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। बांछित मान–सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अक्टूबर के बाद परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चे महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से ही सम्पन्न करेंगे। मई के बाद बांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। आपकी दूसरी संतान अधिक प्रभावित करेगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी, परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो आपका गर्भ खराब हो सकता है। माता पिता के प्रति संतान के मन में आदर व संमान का भाव कम होगा। इस समय के अंतराल में आपको उन पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपके बच्चे गलत संगति में फंस सकते हैं।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक–ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। मई के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। इस पर ज्यादा सोच–विचार करने की जरूरत नहीं है। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी, लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं– जैसे–पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

बजन बढ़ने से बचने के लिए खान–पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका बजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ शनि के कारण आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 7 अक्टूबर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आप आरोग्य बने रहेंगे, परन्तु 22 अक्टूबर को शनि ग्रह का गोचर पत्नी एवं संतान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

कहते हैं कि अच्छे दिन आने से पहले बुरे दिन देखने पड़ते हैं। आपके साथ भी कुछ ऐसा हो सकता है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थितियों में सुधार होगा। 11 मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो स्थान परिर्वतन का योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद मेकेनिकल इंजीनियर एवं हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की अच्छी उन्नति होगी।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेगी। परन्तु मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी करा सकती है। इस यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

अक्टूबर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल

की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी। विदेश यात्रा की भी संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में राहु गुरु की युति के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 11 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। अक्टूबर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जैसे– जागरण, साई संध्या, माता की चौकी इत्यादि। तांत्रिक क्रियाएं व काला जादू के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- वीरवार के दिन पीला केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला जुला रहेगा। मेहनत और लग्न से किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। 13 अप्रैल के बाद राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 3 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। व्यवसायिक क्षेत्र में रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यापारिक उन्नति के लिए आपको ऋण लेना पड़ सकता है। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रूझान बढ़ेगा।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तण होगा। इस अवधि में आप पर आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। पैतृक संपत्ति, जमीन जायदाद से संबंधित मामलों में अनुकूलता नहीं मिलेगी। कुछ विरोधियों का भी सामना करना पड़ सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

पंचम स्थान का शनि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। अतः आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखमि उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। अप्रैल के बाद पैसे के मामले में सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास करना अच्छा नहीं होगा।

2 जून से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ हो रहा है। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है। 4 नवम्बर के बाद आपके सारे धनागम के स्रोत खुलेंगे तथा आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से खर्च करेंगे।

घर–परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक माहौल में कुछ विषम स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अचानक किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि धर्म पत्नी के लिए शुभ नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है अतः इस समय अपने सहन शक्ति को बढ़ाएं एवं अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें।

2 जून के बाद आपके पारिवारिक स्थिति में अनुकूलता आनी शुरू हो जाएगी। आपके माता पिता के लिए यह समय काफी शुभ है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 4 नवम्बर से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी।

4 नवम्बर से समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह

के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान–पान का विशेष ध्यान रखें। नहीं तो 7 अप्रैल को लग्न स्थान में राहु का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है, जिससे आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से ज्यादा परेशान हो सकते हैं। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें तथा अपने खान पान पर पूर्ण ध्यान दें।

4 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि करेगी, जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह–सुबह टहलने जाना।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। मार्च के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में वांछित सफलता नहीं मिलने के कारण आप निराश हो सकते हैं। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 2 जून के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

विद्यार्थियों के लिए 4 नवम्बर से समय काफी शुभ हो रहा है। अतः आपको वांछित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा–तबादला

साल के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है।

13 जुलाई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी

जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ सुखद यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा–पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। परन्तु 7 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। 2 जून के बाद गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रूझान बढ़ेगा।

- महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार का व्रत करें ।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मेहनत और लगन से किये गए कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसायी व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टा से जुड़े है तो यह समय काफी शुभ है। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि आपको उच्चमहत्वाकांक्षी बना रही है। आप अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बना रही है। 3 दिसम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः वर्षान्त में व्यापारिक निर्णय बहुत ही सोच विचार कर लें।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में एकादश स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। धनागम के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। हालांकि 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्त से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए यह समय सही नहीं है अतः लेन देन करते समय सावधान रहें। लग्नस्थ राहु के कारण आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए व फंसे हुसे पैसे मिलेंग। अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होने से आपको आनन्द की अनुभूति होगी। बहुत दिन से चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पिता व भाईयों से धन लाभ होगा। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर अचानक धन व्यय होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर–परिवार, समाज

घर परिवार के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि से दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार–चढ़ाव बना रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिन्ता हो सकती है। परन्तु 6 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिसके परिवार में स्नेह–सौहार्द का संचार होगा तथा भावनात्मक लगाव में भी वृद्धि होगी। 28 जून के बाद लम्बे समय से चली आ रही संतान संबंधी दिक्कतों का अन्ततः समाधान हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी तथा मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को ग्रहण करने में भी आप समर्थ होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। मां–बाप के प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 6 अप्रैल से समय थोड़ा कष्टकर हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। जातक को जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो

जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क में घूमना भी आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में उन्नति के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में सफलता मिलेगी।

28 जून के बाद नये–नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। साल के अंत में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा–तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक यात्राएं होंगी। व्यावसायिक यात्रा के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तीर्थ यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। 11 दिसम्बर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। आलस्यता व दीर्घ सूत्रता की भावना बनी

रहेगी। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। इस समय के अंतराल में आप कर्मनिष्ठ होंगे अर्थात् अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा आप दान पुण्य अधिक करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे तथा दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म सझेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें तथा घृणी सूर्याय नमः मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें तथा बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- आठमुखी रूद्राक्ष रत्न धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

काम काज के लिए यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। व्यापार में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं तो अप्रैल के बाद ही विस्तार करें क्योंकि उससे पहले का समय अच्छा नहीं है। नौकरी करने वाले लोगों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कार्यस्थल पर आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है। आपकी छवि को धूमिल करने की कोशिश भी की जा सकती है, इसलिए सतर्क रहें। नौकरी छोड़ने का भी मन बना सकते हैं। वरिष्ठ सहकर्मियों से झगड़ा करने से बचें। सरकारी नौकरी वालों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, नुकसान होने की संभावना ज्यादा है।

साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रभावित रहेगा। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। सकारात्मक बने रहें। 25 सितम्बर के बाद का समय आपके पक्ष में होगा। विरोधी शान्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का राहु खर्च में वृद्धि करेगा। निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण लाभ होगा। शेयर, सट्टा व जुआ आदि से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। नयी संपत्ति क्रय करने का भी सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध में गोचर प्रतिकूल होने के कारण चोरी, बीमारी, दुर्घटना व अपव्यय के योग हैं। यदि धन संपत्ति से संबंधित कोई मामल कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे

खर्च आ सकते हैं जिसके कारण आपको कर्ज लेना पड़ सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति अनुकूल नहीं रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रहा है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद न करें। 6 मई से समय कुछ अच्छा होगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कुछ पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में समझदारी से काम लेना आपके लिए हितकर होगा। आपके रास्ते में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। 25 सितम्बर के बाद षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे तथा समाज में लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिसका असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा, परन्तु 6 मई से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। बच्चे मान सम्मान में वृद्धि व गर्व का अनुभव कराएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध दूसरी संतान के लिए शुभ नहीं है। आलस्य के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आने कि संभावना बन रही है। उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां होने की प्रबल संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। खान पान के साथ–साथ अपनी दिनचर्या में सुधार करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

6 मई से समय स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर

सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आप दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। अगस्त के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान होंगे। परन्तु 25 सितम्बर के बाद समय काफि अच्छा हो रहा है। छठे स्थान का शनि आपको व्याधि मुक्त रखेगा तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेशी भाषा सीखने वाले लोगों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उन लोगों की उन्नति होगी। 6 मई के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को भी सफलता मिलेगी।

25 सितम्बर के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षा के लिए बहुत ही शुभ होता है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। द्वादश स्थान का राहु अचानक विदेश यात्रा करा सकता है। 6 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंद्वता के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। पंचमस्थ शनि के कारण पूजा–पाठए यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि कर्मों में आपका मन नहीं लगेगा, परन्तु 6 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सांस्कृतिक उत्सवों मे बढ़–चढ़ के भाग लेंगे तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर

नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डुओं का भोग लगाएं।

- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- चन्दन का तिलक लगाएं तथा गुरु के मन्त्र का पाठ करें।
- साधु संन्यासियों की सेवा करें तथा अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं एकदश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी वाले लोगों को जबरदस्त सफलता मिलने की संभावना है। आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग व पदोन्नति मिलने के भी योग बने हुए हैं। आपके वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है व कंपनी की तरफ से आपको सुख–सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता भी मिल सकती है। अगर कोई नया काम करने की सोच रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद होगा। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वाद–विवाद से बचें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सरकारी या निजी क्षेत्र से कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। शॉर्टकट या कम मेहनत से धन कमाने का विचार अगर आपके मन में आ रहा है तो इस अवधि में उसका त्याग करें। शेयर बाजार में लंबी अवधि के लिए निवेश करना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। यदि आप प्रॉपर्टी से सम्बन्धित कार्य करते हैं, तो इस अवधि में अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला–जुला रहने वाला है। धनागम में अनियमितता बनी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। द्वादशस्थ राहु के कारण आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूलखर्ची से बचें। किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन–देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की संभावना बन रही है।

22 जून से आर्थिक मामले के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा तथा कोई मुनाफे का बड़ा सौदा हाथ लग सकता है। जो जातक

व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी तथा आप वांछित बचत करने में सफल होंगे।

घर–परिवार, समाज

इस वर्ष परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, परन्तु 22 जून के बाद यह स्थिति भी अच्छी हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई बहनों के लिए उन्नतिकारक व श्रेष्ठ है। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 22 जून के बाद अचानक आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध कोई खास नहीं रहेगा। द्वादशस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परन्तु 22 जून के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल हो जाएगा।

यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में उससे छुटकारा मिल सकता है। 27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगी। आप आपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शुद्ध

शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन के साथ–साथ व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। द्वादशस्थ राहु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। धार्मिक गतिविधियो में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- अमावस्या तिथि को किसी ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक लिहाज से ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई है। कार्य व्यवसाय में जो परेशानियां आ रही थी उन सब से छुटकारा मिलेगा। व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चलेंगी। व्यापार में काफी ठोस व बड़े निर्णय लेंगे, जिससे आपके मुनाफे में बढ़ोत्तरी होगी। अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से आप खुद को आगे पाएंगे। कस्टम, रॉयल्टी, वैट, इनकम टैक्स आदि से सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं। किसी सरकारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद उसका भी समाधान मिल जाएगा।

11 सितम्बर के बाद आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः उस समय आप सतर्क रहें तथा किसी पर भी आवश्कता से ज्यादा विश्वास न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति होगी तथा अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान में वृद्धि होगी। आपको बड़े अधिकारियों का समय समय सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहनादि का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्यों में या सामाजिक कार्यों में आप अधिक व्यय करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं परन्तु जुलाई के बाद यह स्थिति भी अच्छा हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो उससे छुटकारा पा सकते हैं। आमदनी के नए स्रोत मिलने की

उम्मीद है। विदेश अथवा दूर की यात्रा के माध्यम से भी धनार्जन होने के योग बन रहे हैं। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा में अधिक खर्च करेंगे।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई–बहनों से आपके सम्बन्ध और मधुर होंगे। भाई–बहनों की उन्नति होगी। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्यों का घ ारागमन अथवा उनके साथ सम्बन्धों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। परिवार के सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

जुलाई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान–सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों को उदर संबंधित रोग हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा–दीक्षा पर पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। लेकिन घबराने की बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए शुभ हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के लिए शुभ है। संतान के उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा शिक्षा–दीक्षा में आने वाली रुकावटें दूर होंगी। आपके बच्चों को वांछित सफलता मिलेगी। यदि आपकी दुसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव बना रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है।

खान–पान के साथ अपनी दिनचर्या सुधारें तथा व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़–चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि तथा एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। सभी शत्रुओं को परास्त कर सफलता के मार्ग पर आप सबसे आगे रहेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में वांछित सफलता मिलेगी।

यदि आप कोई व्यासायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। यदि आप किसी नए शिक्षण संस्थान की तलाश में हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको एक अच्छे संस्थान की प्राप्ति होगी जहां से शिक्षा लेने के बाद आप को नई और सही दिशा की प्राप्ति होगी। जो लोग दूर देश में जाकर शिक्षा लेना चाह रहे हैं, उनके लिए भी समय अनुकूल है। बेरोजगार जातकों को इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु 30 जुलाई के बाद गुरु

ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होगा।

आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप विशेष रूप से ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- प्रतिदिन गणेश जी के निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें–

  ऊँ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। वर्ष के प्रारम्भ मे अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद समय बहुत ही शुभ होने वाला है।

आपके प्रयासों की सार्थकता ही आपकी सफलता को सिद्ध करेगी। जिससे विरोधी पक्ष भी आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएगा। सहयोगियों की सहायता से मान–सम्मान बढ़ सकता है। आय के बहुत सारे नये स्रोत सामने आ सकते हैं। जो लोग नौकरी में हैं, उन्हें तरक्की मिलने से वेतन वृद्धि हो सकती है। आप अपनी सारी ऊर्जा अपने नए प्रोजेक्ट में लगाएँ और अपने प्रयासों को दोगुना करें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपके संचित धन में वृद्धि होगी। कोई पुराना उधार वापस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में आपके प्रयास सफल हो सकते हैं।

यदि आप किसी से धन लिया हो अथवा उधारी हो तो उसे भी चुका कर कर्ज में कमी कर सकेंगे। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा। धन प्राप्ति के लिए आपको भाग दौड़ करनी पड़ सकती है। लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्म संतुष्टी भी होगी। भूमि व वाहन से संबंधित

कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर–परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपकी माता जी के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक जीवन में थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नही होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमान जनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। घर की शोभा बढ ाने के लिए कुछ सुंदर वस्तुओं की खरीददारी संभव है।

संतान

संतान की दृष्टि से 16 फरवरी तक समय अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है, परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। उनको शारीरिक एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। आलस्यता एवं दीर्घसूत्रता के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। बाहर का खाना खाने से बचें अन्यथा फूड पॉयजनिंग से पीड़ित हो सकते हैं। आवश्यकता से अधिक परिश्रम आपको स्वास्थ्य की हानि दे सकता है इसलिए बेहतर है की आप पूर्ण विश्राम भी करें। त्वचा संबंधी विकार हो सकते हैं। 16 फरवरी के बाद समय अनुकूल हो रहा है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के

प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो को सफलता मिलेगी परन्तु अथक परिश्रम के बाद। यदि आप किसी के मित्र के साथ साझेदारी में कोई नया काम शुरु करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगा।

यात्रा–तबादला

16 फरवरी के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह तबादला आपके घर से दूर भी हो सकती है। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा–पाठ यज्ञ, अनुष्ठान सम्पन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर मन्त्र साधना कर सकते हैं। गुरुजनों पर आपको अटूट विश्वास होगा।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।

- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- माता पिता व अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।